विनोबा की हस्तलिपि में

विष्णु सहस्रनाम

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

विनोबा की हस्तलिपि में

विष्णुसहस्रनाम

विनोबा की हस्तलिपि में

उन्हीं के अर्थ, टीका तथा चित्रांकन सहित

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

संपूर्ण धर्मों में
मैं इसी धर्म को सबसे बड़ा मानता हूं कि मनुष्य
अपने हृदयकमल में विराजमान
कमलनयन भगवान् वासुदेव का
भक्तिपूर्वक तत्परता-सहित
गुण-संकीर्तन रूप स्तुतियों से
सदा अर्चन करे।

(विनोबाजी द्वारा मान्य अनुवाद)

प्रकाशक : यशपाल जैन, मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली • पहली बार १ मई १९७५, दूसरी बार सितम्बर, १९७५, तीसरी बार जनवरी, १९७६ • मूल्य : रु० १२.००
• मुद्रक : रूपक प्रिंटर्स, दिल्ली-३२

એષ મે સર્વ-ધર્માણાં
ધર્મો ઽધિકતમો મત:
યદ્ ભક્ત્યા પુંડરીકાક્ષં
સ્તવૈરર્ચેન્નર: સદા
(ભીષ્મ દેવ)

રામ હરિ

6-4-1975

प्रकाशकीय

विनोवाजी की हस्तलिपि में उन्हींके द्वारा दिये गए अर्थ, भाष्य और चित्रांकन सहित इस अनोखी कृति का प्रकाशन करते हुए हम धन्यता का अनुभव करते हैं।

प्रकाशन १ मई को हो रहा है, जो भाई कमलनयन वजाज का तीसरा स्मृति-दिवस है।

यह मणि-कांचन संयोग कदाचित प्रभु की कृपा से ही सधा है।

तीसरा संस्करण

१ मई १९७५ को पुस्तक की पहली प्रति श्री रामकृष्ण वजाज ने पवनार आश्रम में विनोवाजी को भेंट की थी और विनोवाजी वहुत देर तक उसे मनोयोगपूर्वक देखते रहे थे।

पहला संस्करण लगभग बीस दिन में समाप्त होगया था। दूसरा भी जल्दी ही। अव नया संस्करण पाठकों को सुलभ करते हमें बड़ा हर्ष है।

—मंत्री

पार्श्वभूमि

एक दिन माता जानकीदेवीजी वजाज ने पवनार आश्रम में विनोवाजी से लिखकर आग्रह किया, "जिस तरह पूज्य वापूजी आनन्द हिंगोरानी के लिए उनकी डायरी में रोज एक नया विचार लिख दिया करते थे वैसे ही आपको भी मेरे लिए रोज कुछ लिखना ही होगा।" पूज्य वावा से ऐसा आग्रह किया जाय, यह सूझ तो मदालसा की थी। उसने कई महापुरुषों से इसी तरह वहुत मूल्यवान संस्मरण लिखवा लिये हैं।

जव विनोवाजी से माताजी ने एक प्रकार से हठ ही किया, उस समय मैं भी उपस्थित था। मैंने सोचा, शायद वावा सिर्फ मुस्करा देंगे और नियमित ढंग से कुछ लिखना स्वीकार न करेंगे। किन्तु उन्होंने पूज्य माताजी की कॉपी हाथ में ले ली और पहले पृष्ठ पर अपनी कलम से 'विष्णु-सहस्रनाम' का पहला अक्षर ॐ लिख दिया। विनोवाजी ने कहा, "आजकल मेरा मुख्य चिन्तन 'विष्णु-सहस्रनाम' में दिये हुए भगवान के हजार गुणों पर ही चलता रहता है।"

प्रारम्भ में तो वावा ने कई नाम केवल अपनी लेखनी से दुहेरी लाइनों में लिख दिये। कुछ दिनों के पश्चात इस कार्य में उन्हें कुछ अधिक रस आया औरवे नामों के नीचे उनके अर्थ भी लिखने लगे। वाद में तो उन्होंने इस लेखन में गहरी दिलचस्पी ली और नामों के अर्थ के अलावा उनकी व्याख्या भी लिखना शुरू किया। अर्थों को स्पष्ट करने के लिए कुछ चित्र भी वनाने लगे। हम लोगों को पहले तो इस क्रम में कोई विशेष दिलचस्पी महसूस नहीं हुई थी, लेकिन माताजी की एकनिष्ठ नियमितता देखकर जैसे-जैसे इस डायरी के पन्नों पर लिखने में ऋषि विनोवा को रस आने लगा वैसे-वैसे हमारा आनन्द भी बढ़ता गया।

विष्णु-सहस्रनाम की इस डायरी का लेखन २६ अगस्त १९७३ से शुरू हुआ और बीच-बीच में कुछ तिथियों को छोड़ तीन सौ साठ नाम पूरे करने के बाद तारीख २ अक्तूबर, १९७४ को यह क्रम समाप्त कर दिया गया। इस समाप्ति के कारण भी स्वयं विनोवाजी ने आखिरी नाम के साथ लिख दिये हैं। माताजी और हम सभी ने पूज्य वावा से वार-वार निवेदन किया कि वह पूरे एक हजार नाम लिखे जाने का क्रम जारी रखें। लेकिन आग्रह टाल दिया गया। वाद में तो

विनोबाजी ने २५ दिसम्बर १९७४ से एक वर्ष के लिए मौन ही धारण कर लिया और अब वह 'राम-हरि' के सिवाय और कुछ लिखते भी नहीं हैं।

पूज्य माताजी के पास तीन डायरियां थीं, जिनमें ऋषि विनोबा द्वारा तीन सौ साठ नाम व्याख्या सहित और सचित्र लिखे गये थे। उन्हें मैंने बहुत संभाल कर रख लिया। कुछ समय बाद इन डायरियों को मैंने भाई रामकृष्ण बजाज को दिखाया और इच्छा जाहिर की कि उन्हें प्रत्येक नाम के ब्लॉक बनवाकर प्रकाशित किया जाय। रामकृष्णजी ने इस विचार को पसन्द किया और श्रीमार्तण्डजी व यशपालजी की सलाह से इस योजना को शीघ्र ही अंतिम रूप दे दिया गया।

जब मैंने विनोबाजी को सूचना दी कि उनकी लिखी गई डायरी के तीन सौ साठ नामों के ब्लॉक बन चुके हैं और उन्हें पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है तो उन्हें अच्छा लगा। विशेष आग्रह करने पर इस प्रकाशन के लिए उन्होंने अपवाद-स्वरूप 'महाभारत' से ही भीष्मदेव का एक श्लोक अपने हाथ से लिखकर दे दिया, जो इस पुस्तक के प्रारम्भ में प्रकाशित किया जा रहा है। श्लोक के नीचे केवल 'राम-हरि' लिखा है, क्योंकि आजकल बाबा अपने हस्ताक्षर भी इसी रूप में करते हैं। श्लोक का अर्थ भी दे दिया गया है, जो पूज्य विनोबाजी द्वारा प्रमाणित है।

कई वर्षों से 'विष्णुसहस्रनाम-संकीर्तन' पवनार आश्रम की दिनचर्या का एक अविभाज्य अंग बन गया है। प्रतिदिन ठीक साढ़े दस बजे ब्रह्म विद्या मंदिर की बहनों द्वारा यह संकीर्तन प्रारम्भ होता है और वह लगभग बीस मिनट चलता है। उसके बाद ही बहुत दिनों तक विनोबाजी माताजी की डायरियों में अपने हाथ से एक-एक नाम बड़ी आत्मीयता से लिखते रहे और उसका मर्म माताजी को समझाते भी रहे। उस समय कई बार उन्मुक्त हंसी-विनोद भी हो जाया करता था, जिसका आनन्द ब्रह्म-विद्या-मंदिर की बहनें सहज में ही लूट लिया करती थीं। अर्थ, व्याख्या और चित्रों सहित इन नामों को लिखने के बाद माताजी विनोबाजी के हाथ में मिश्री के कुछ चौकोन कण दे दिया करती थीं, जिन्हें वे सभी उपस्थित बहनों और भाइयों को प्रेमपूर्वक अपने हाथ से बांटते थे। तीन सौ साठ नाम लिखने के बाद जब यह क्रम पिछले वर्ष गांधी-जयंती के दिन अचानक समाप्त हो गया तो हम सभी को काफी सूनापन महसूस हुआ।

यह सर्वविदित है कि गांधी-परिवार में 'सर्व-धर्म-समभाव' की परम्परा रही है। अतः कई लोगों को कुछ आश्चर्य होता है कि विनोबाजी अपने आश्रम में केवल 'विष्णुसहस्रनाम' का संकीर्तन क्यों करते हैं। किन्तु विनोबाजी ने कई बार समझाया है कि 'विष्णु-सहस्रनाम' में संसार की सभी धर्म-पुस्तकों में गिनाये गये भगवान के गुण समा गये हैं। बाबा तो गणितशास्त्र के प्रखर चिन्तक रहे हैं। इसलिए उन्होंने बारीकी से गिनकर यह हिसाब भी लगा लिया है कि इन हजार नामों में किस धर्म के कितने गुण शामिल हो जाते हैं। उदाहरण के लिए इस्लाम के ९९ दैवी गुणों का समावेश 'विष्णुसहस्रनाम' में हुआ है। इसकी जानकारी पृष्ठ ३९१ पर दी गई है। कई अन्य धर्मों के नामों का संकेत भी पूज्य बाबा ने स्वयं लिखकर तैयार किया है। इसे भी परिशिष्ट में दिया जा रहा है। इस प्रकार पवनार आश्रम में प्रतिदिन जो 'विष्णुसहस्रनाम'-संकीर्तन किया जाता है, वह सर्व-धर्म-समानत्व' के वातावरण को केवल भारत में ही नहीं, किन्तु सारे संसार में फैलाता रहता है।

ऋषि विनोबा द्वारा 'विष्णुसहस्रनाम' के पूरे एक हज़ार नाम उनके अर्थ व व्याख्या सहित लिख दिये जाते तो यह प्रकाशन अद्वितीय ही माना जाता। हमने अब भी आशा तो नहीं छोड़ी है और भविष्य में हमारा आग्रह भी जारी रहेगा। फिर भी विनोबाजीके वरदहस्त से रेखांकित यह 'विष्णुसहस्रनाम' ग्रन्थ अपना विशेष महत्त्व रखता है। इन पवित्र नामों की जिस प्रकार सचित्र व्याख्याएं की गई हैं, उनसे विनोबाजी के व्यक्तित्व पर भी एक विशिष्ट प्रकाश पड़ा है। कई व्याख्याओं के साथ श्रद्धेय माताजी की ओर इशारा करके जो विनोद झलकता है, वह भी पाठकों को बहुत रुचिकर प्रतीत होगा।

एक वर्ष का मौन लेने के पूर्व ऋषि विनोबा ने कई बार कहा था कि इन दिनों वह दो ही विषयों पर सूक्ष्म और गहन चिन्तन करते हैं—एक तो ब्रह्म-विद्या और दूसरे देवनागरी। ब्रह्म-विद्या के क्षेत्र में उनका मुख्य चिन्तन 'विष्णु-सहस्रनाम' के संबंध में ही रहता है। इस दृष्टि से तीन सौ साठ नामों की सचित्र व्याख्या का यह प्रकाशन सचमुच अत्यन्त मौलिक और मूल्यवान है। हम आशा करते हैं कि उसका सर्वत्र स्वागत होगा।

जीवन कुटीर, वर्धा

१६ अप्रैल, १९७५

श्रीमन्नारायण

अनुक्रम

विनोबाजी : पुस्तक अवलोकन में मग्न

विनोबा की हस्तलिपि में

विष्णुसहस्रनाम

भक्तों को भगवान् की
भक्ति से शाँति और सुख
दोनों सहज मिलते हैं

२६ अगस्त १९७३
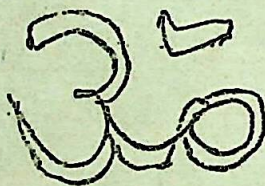
27 अगस्त 1973

२१ अगस्त 1973

30 अगस्त 1973

भूत-
भव्य
भवत्-
प्रभुः

1 सितंबर 1973

2 सितंबर 1973

3 सितंबर 1973

म सीतंबर 1973

राम राम राम राम राम राम
राम राम
राम राम
राम भूतात्मा राम
राम राम
राम राम
राम राम
राम राम राम राम राम राम
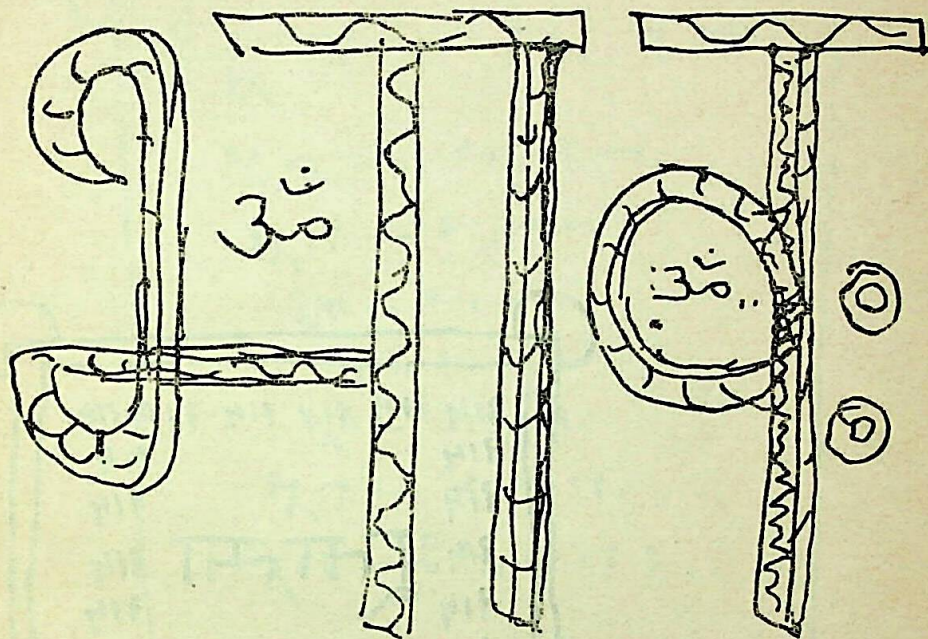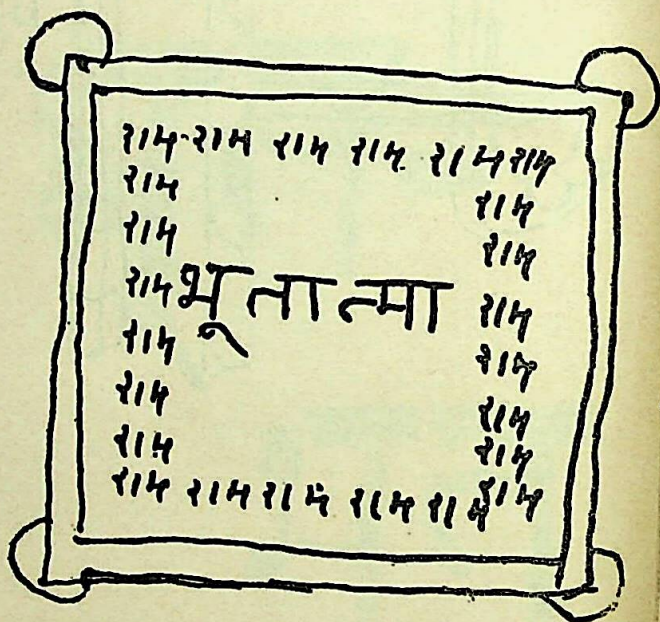
5 सितंबर 1973

भूत-भावन:

भूत-भावन:

भूत-भावन:

भूत-भावन:

भूत-भावन:

भूत-भावन:

भूत-भावन:

भूत-भावन:

भूत-भावन:

6 सितंबर 1973

7 सीतंबर 1973

8 सीतंबर 1973

१ सितंबर.1973

आ
श
यः

10 सितम्बर 1973

11 सितंबर 1973

12 सितंबर 1973

13 सितंबर 1973

योगः

15 सितंबर 1973

18 सीतंबर 1973

20 सीतंबर 1973
नर
सिंह

२१ सीतंबर 1973

२२ सितंबर 1973

२३ सीतंबर १९७३
पुरुषोत्तमः

२४ सीतंबर 1973

२५ सीतंबर १९७३

३१ सितंबर, 1923

२४ सितंबर १९७३
स्था
णु
स्थाणु = खंभा

३० सितंबर 1973

1 अक्टूबर 1973
ॐ
निधिरक्ष्यः
ॐ
ॐ

बापू

3 अक्तूबर 1973

6 अक्तूबर 1973

7 अक्तूबर 1973

8 अक्तूबर 1973
प्र भ वः
प्र भ वः
प्र
भ
वः
प्र भ वः
प्र भ वः
४७

७ अक्तूबर १९७३

10 अक्तूबर 1973

11 अक्तूबर 1973

१२ अक्टूबर १९७३

ओं भूः

13 अक्तूबर 1973

17 अगस्त-1973

पुष्कर = कमल
अक्ष = आँख }
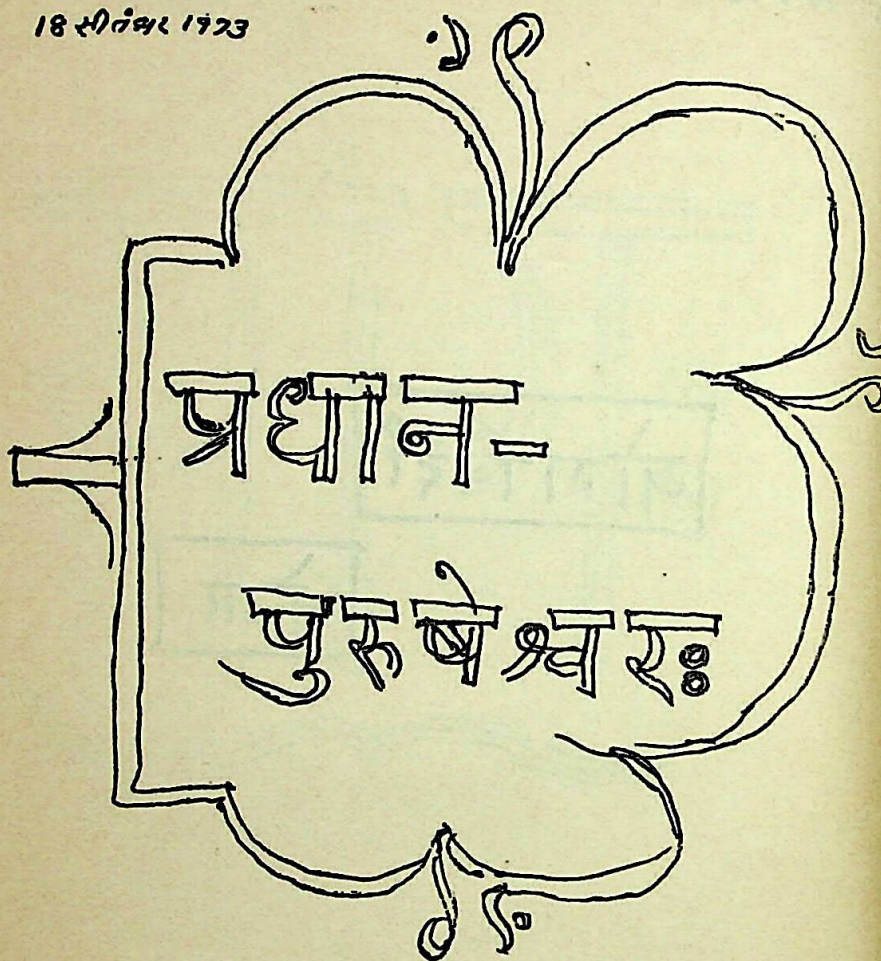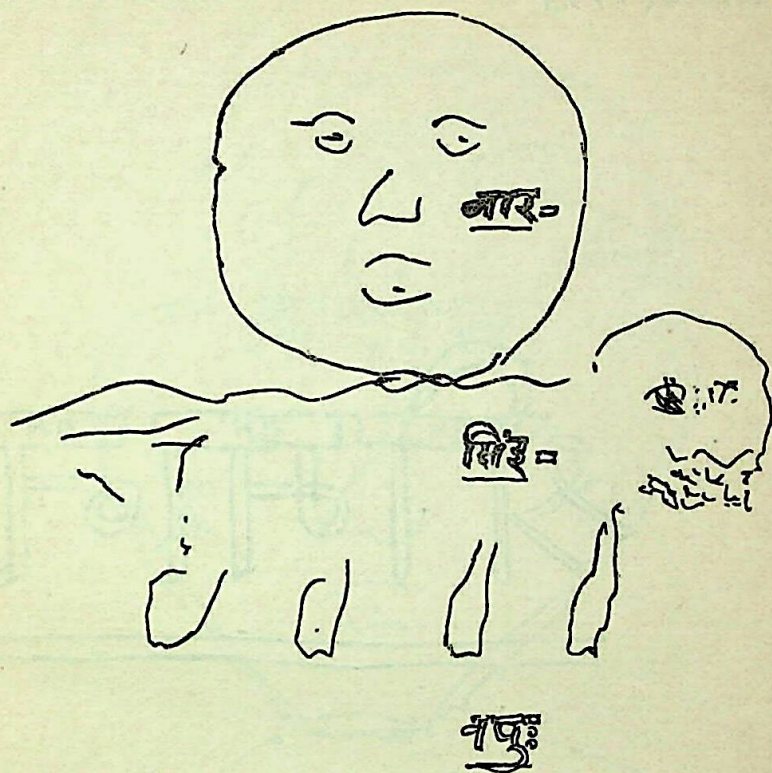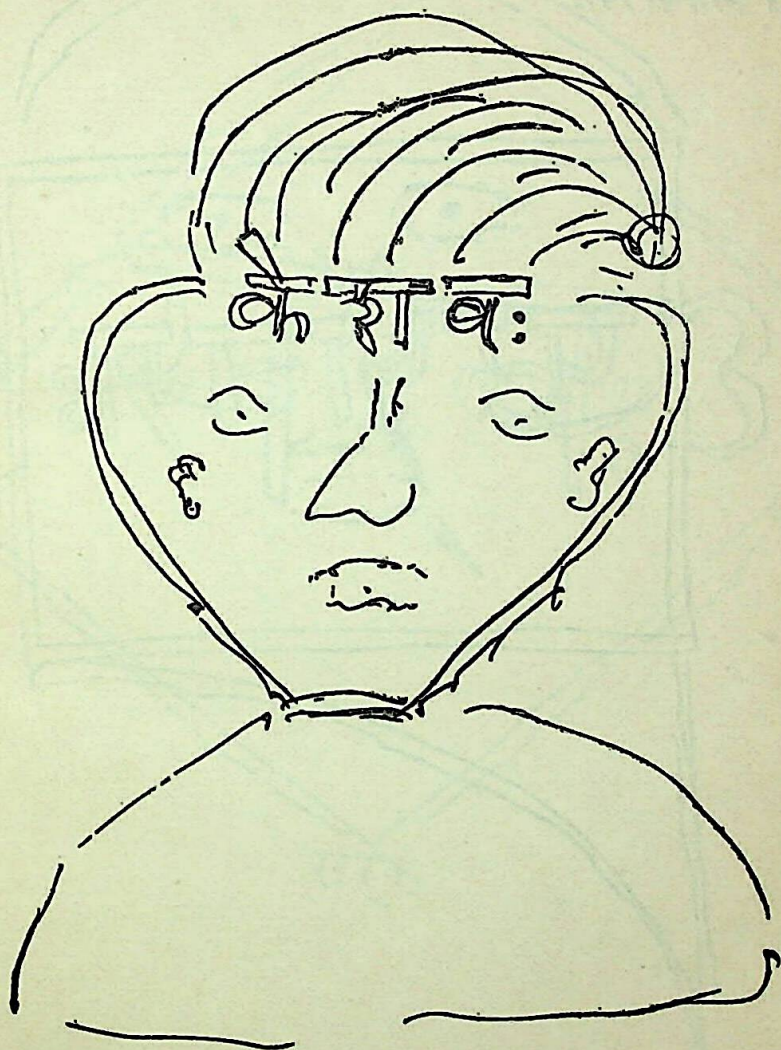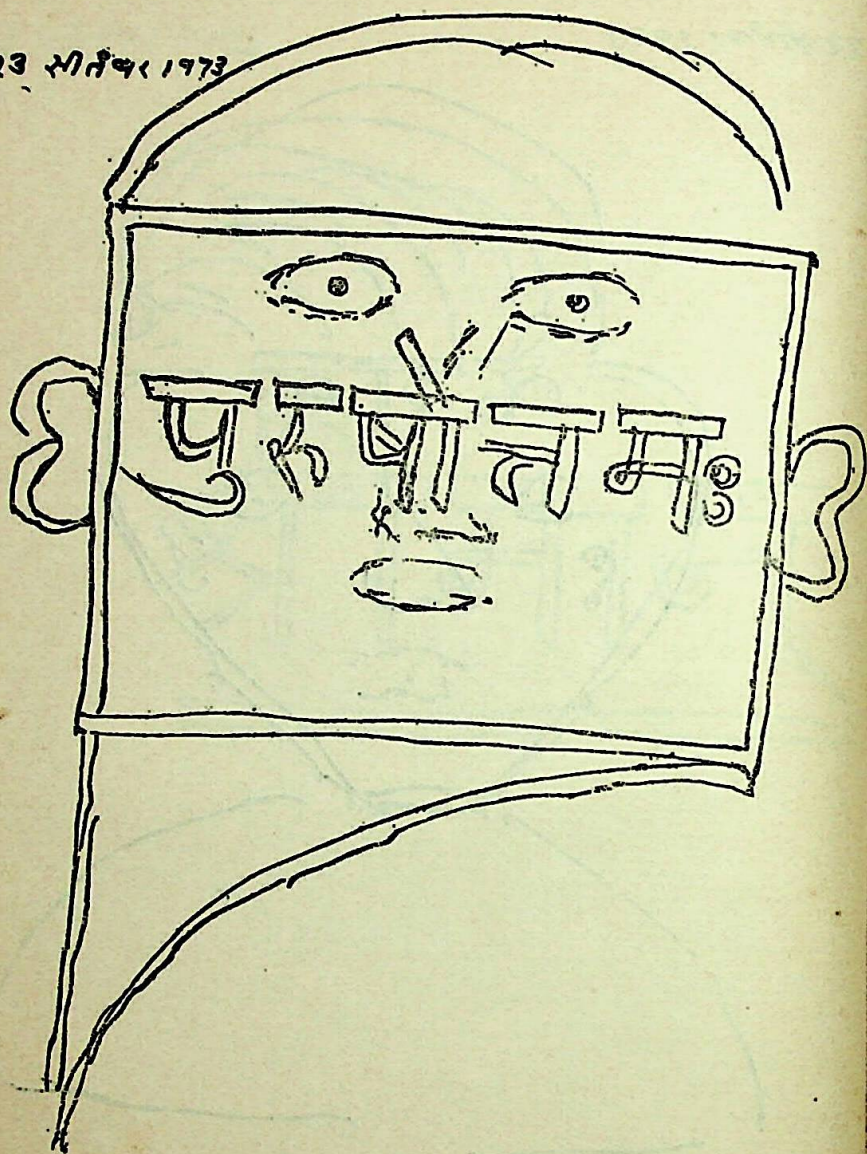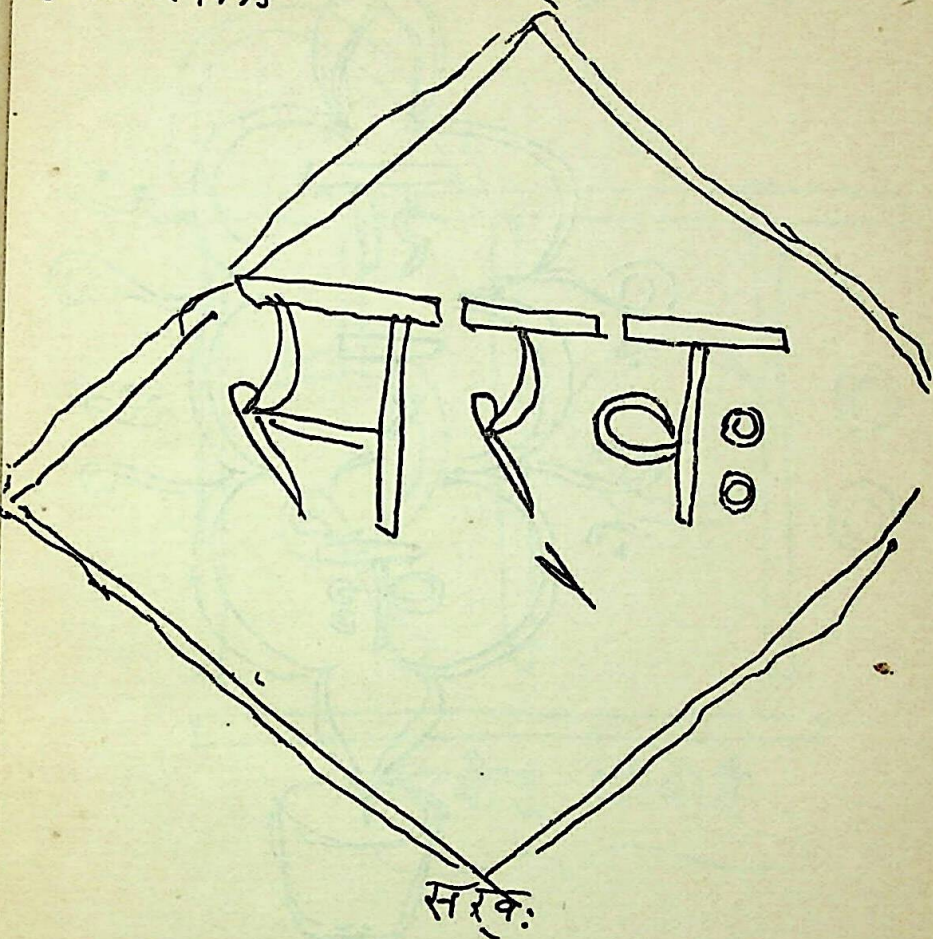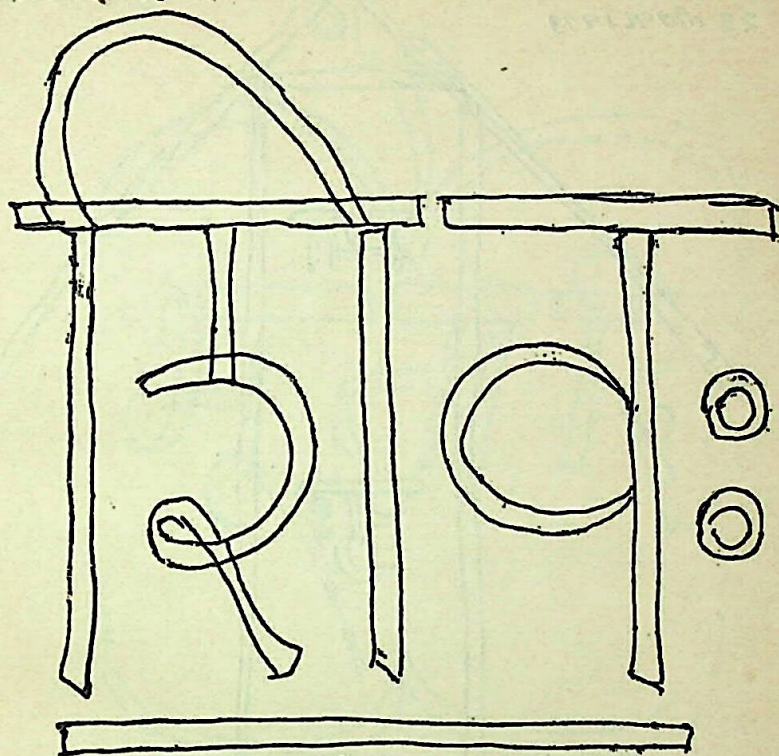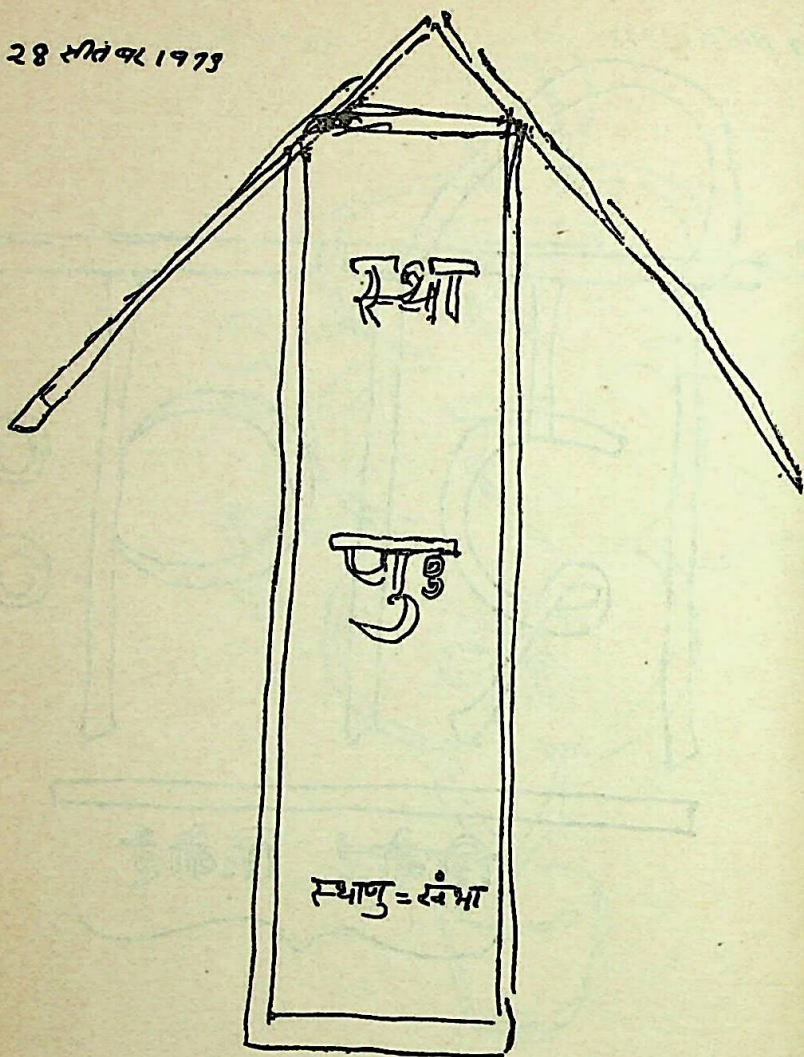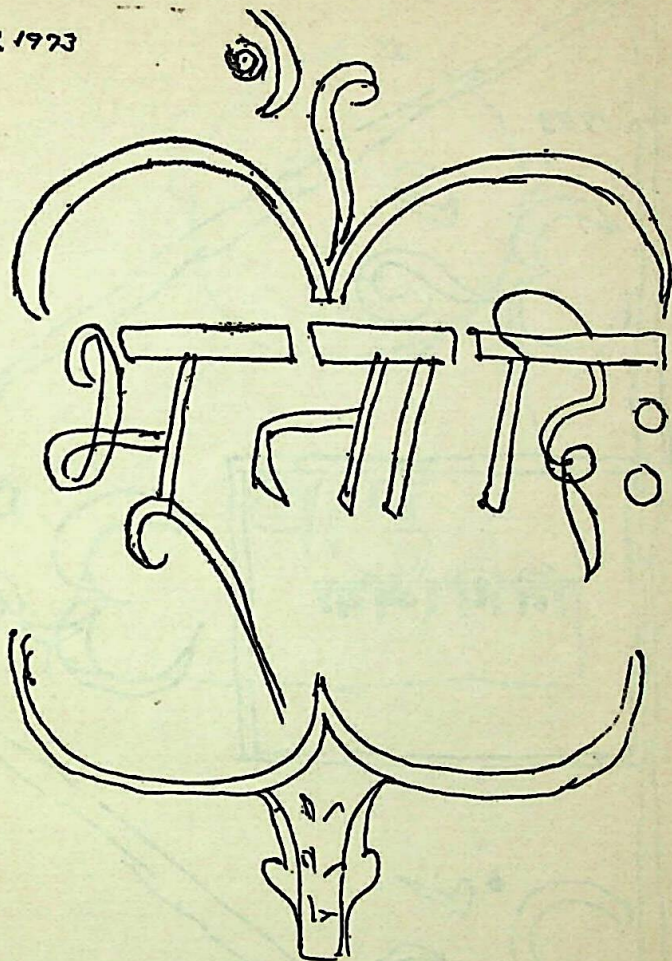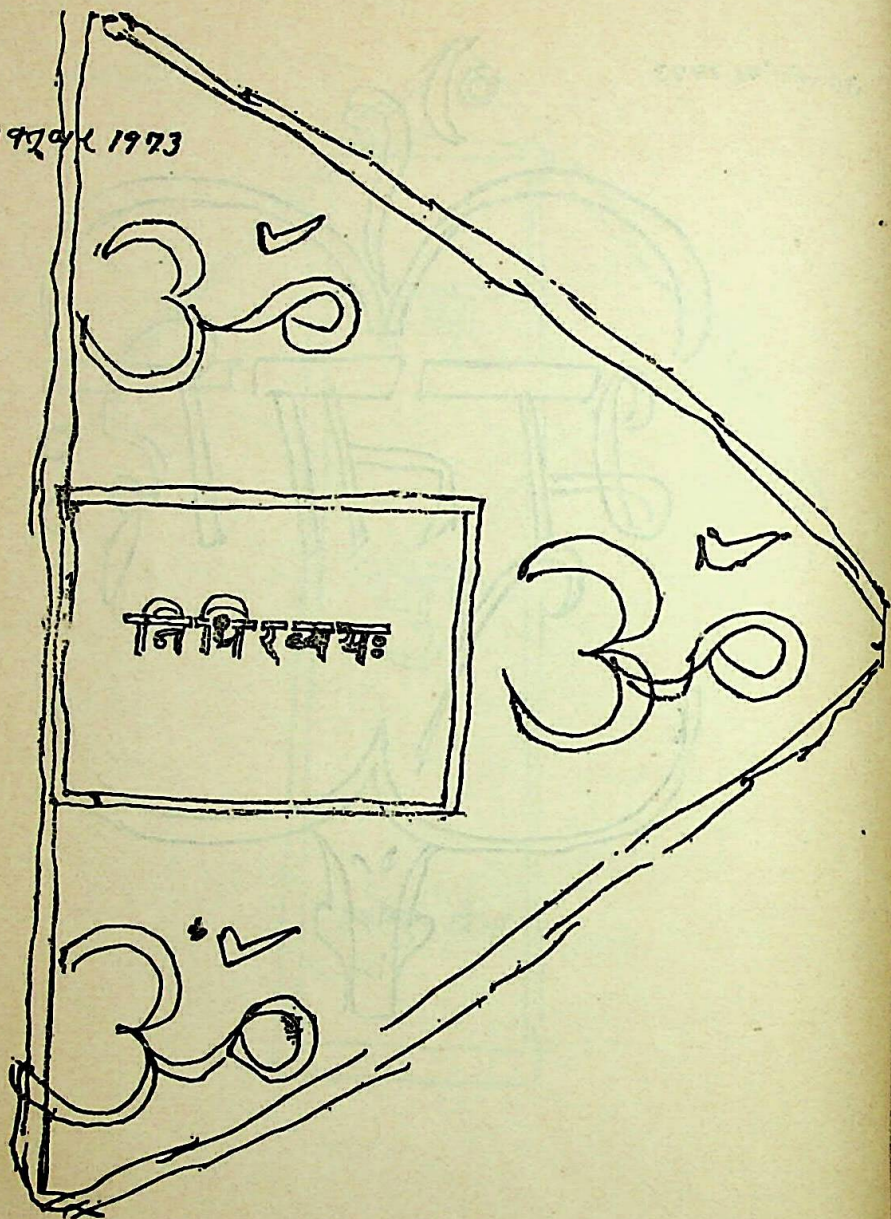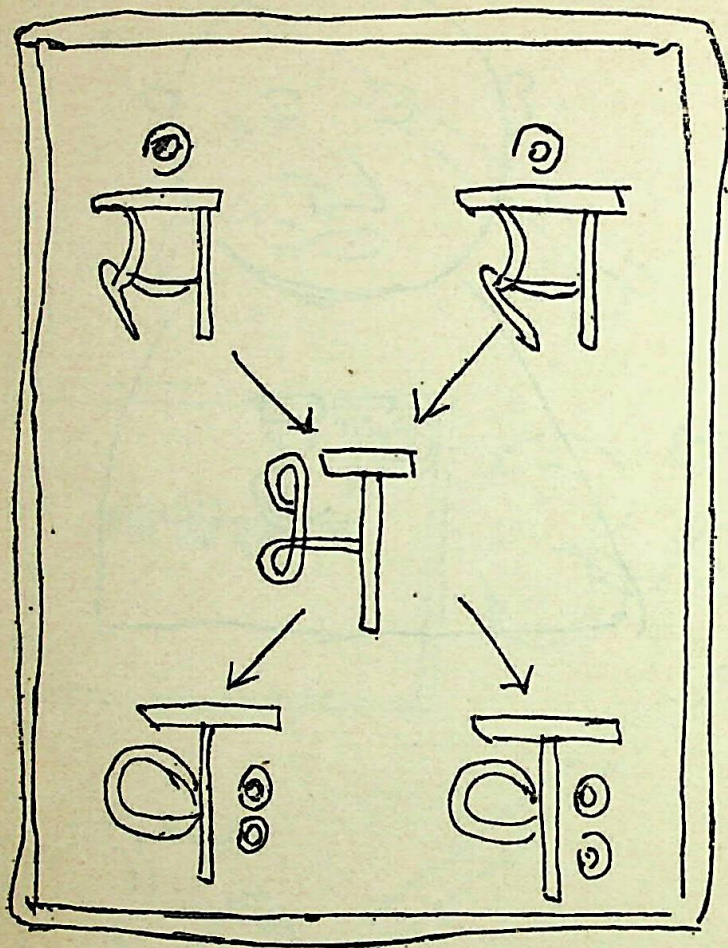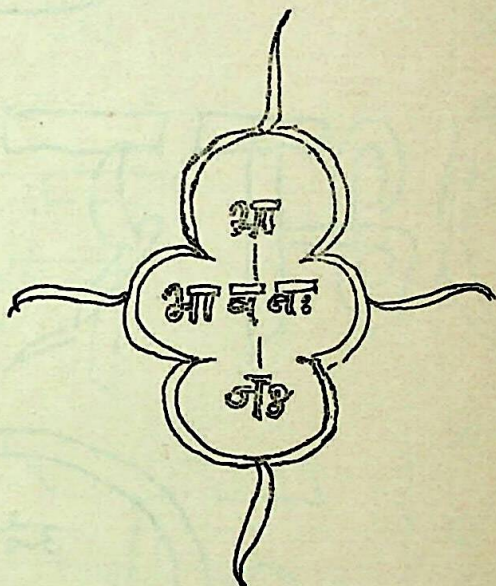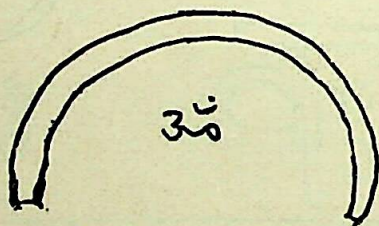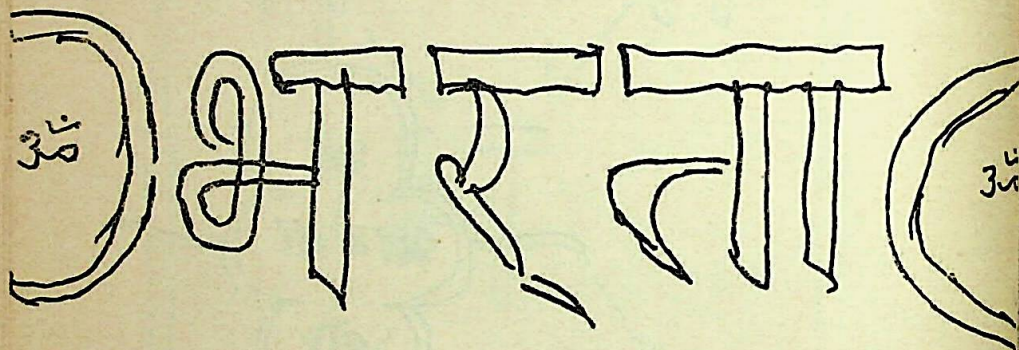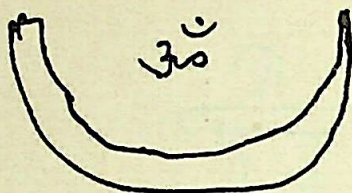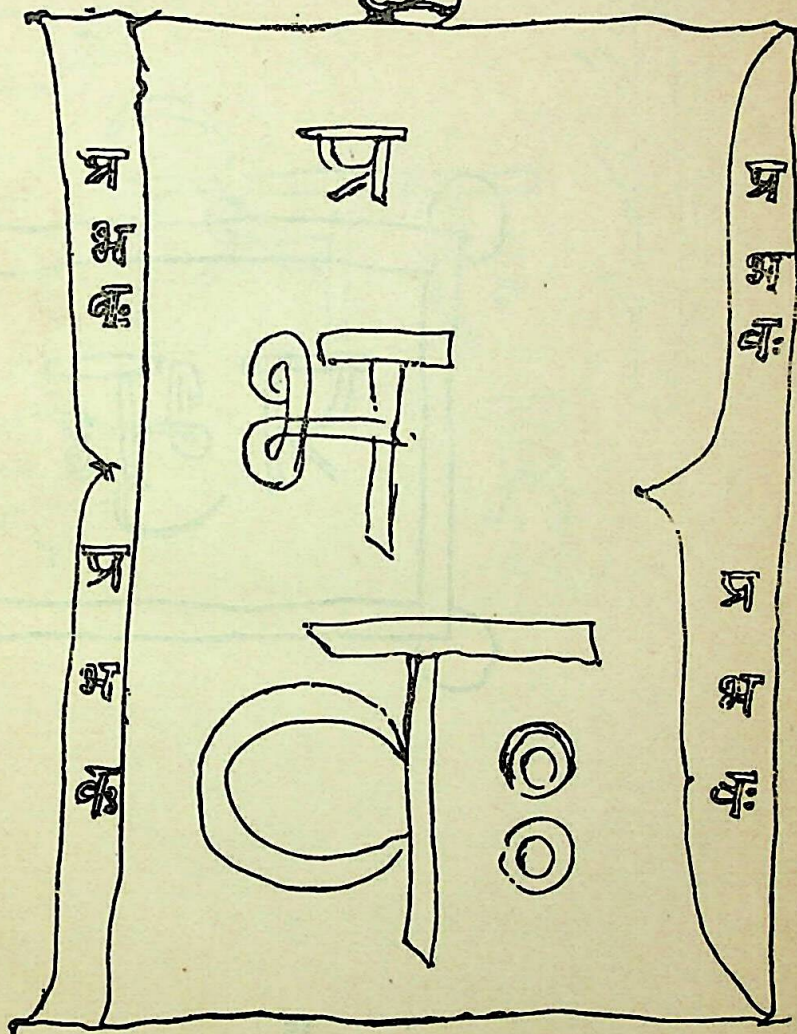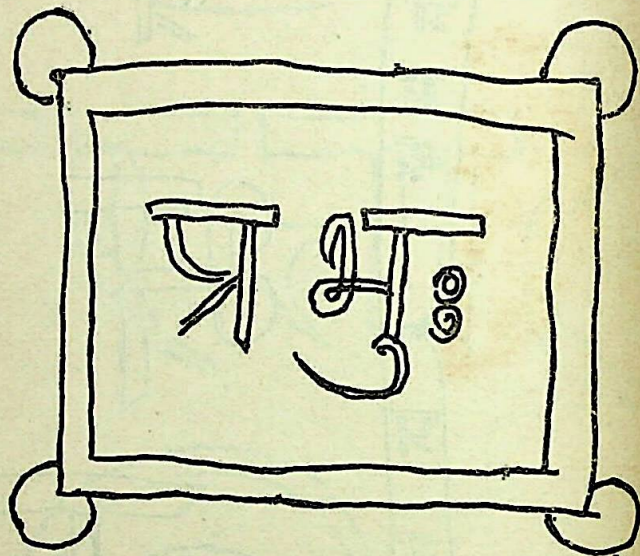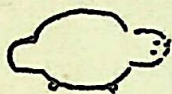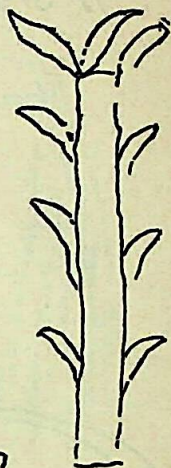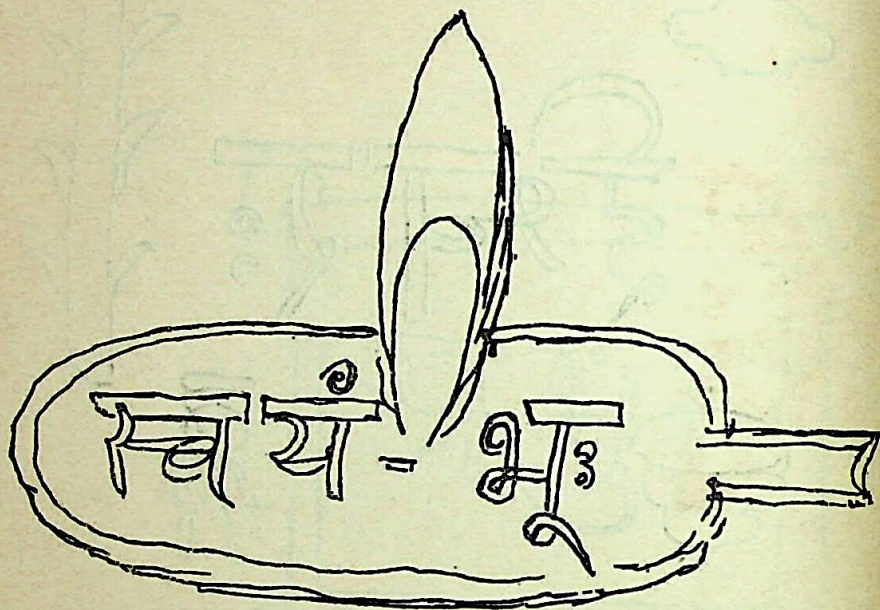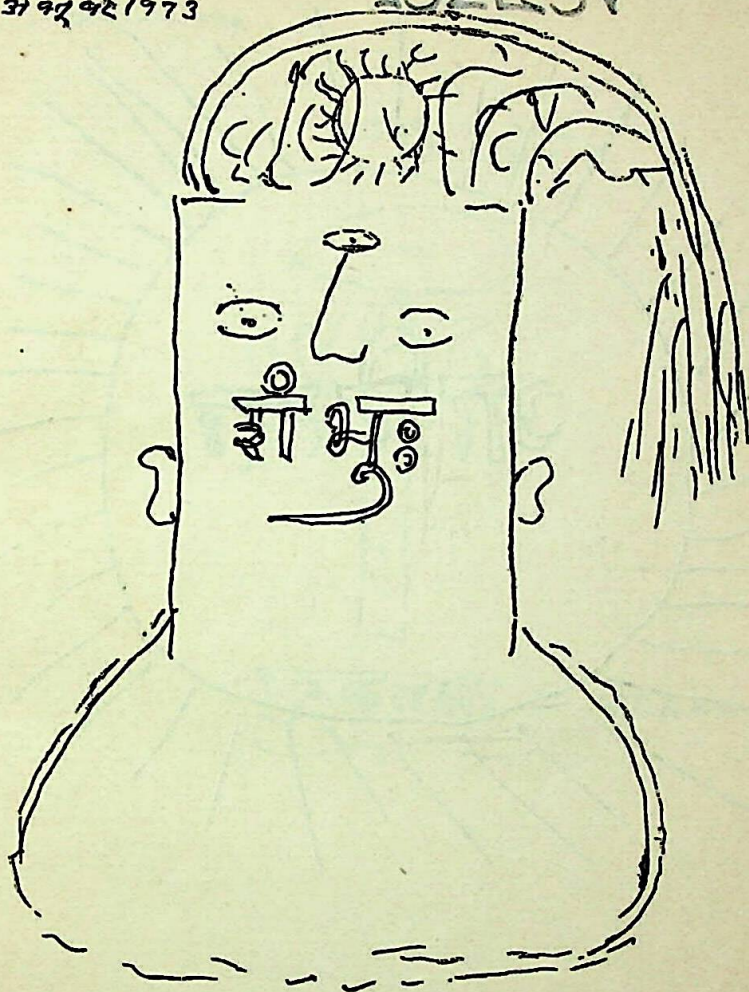
पुष्कराक्षः = कमलनयन

२३ अक्टूबर १९७३

महा-स्वनः

महा = बड़ा
स्वनः = ध्वनि

२४ अक्टूबर १९७३

२५ अक्टूबर १९७३

२६ अक्तूबर १९७३

विधाता =

{ बनाने वाला,
{ सुधारने वाला
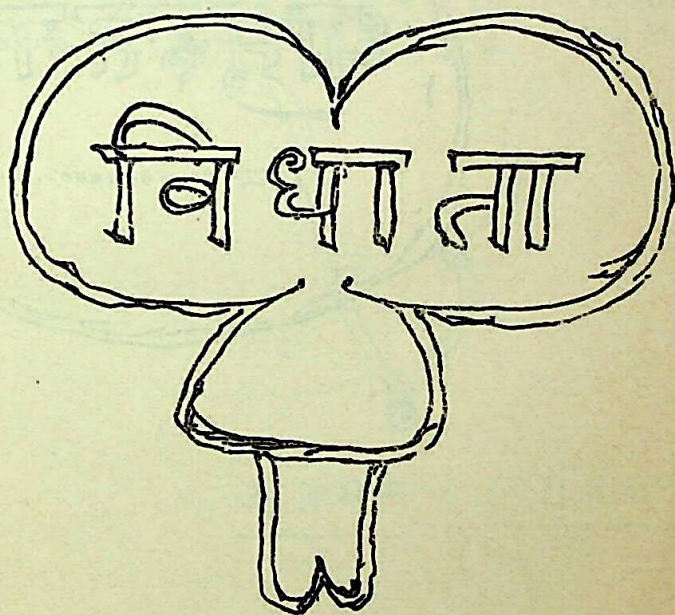
27 अक्तूबर 1973

२४ अक्टूबर 1973
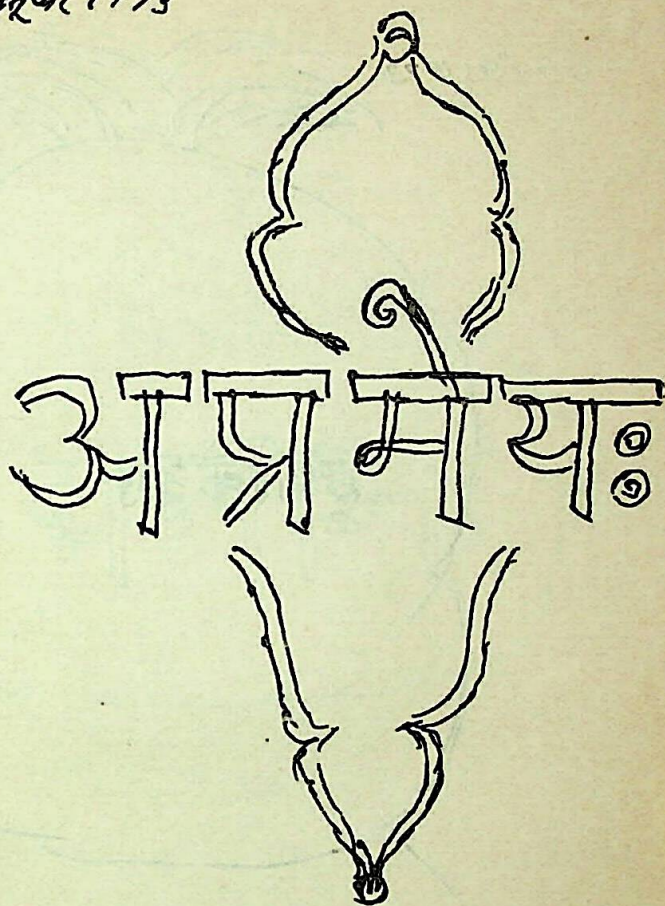
अप्रमेयः

अप्रमेय = स्वयंप्रमाण

१ नवंबर 1973
हृषीकेश
हृषीकेश = हर्षित
केश
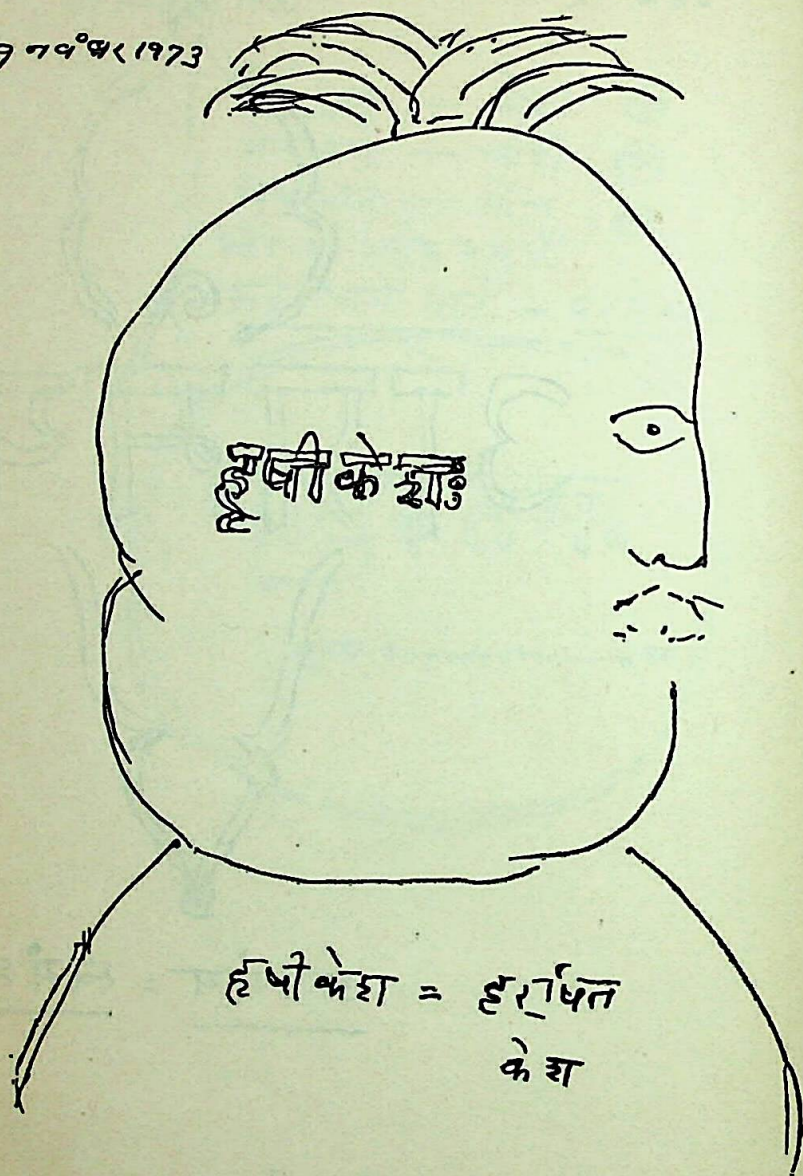
10 नवंबर 1973
पद्मनाभः
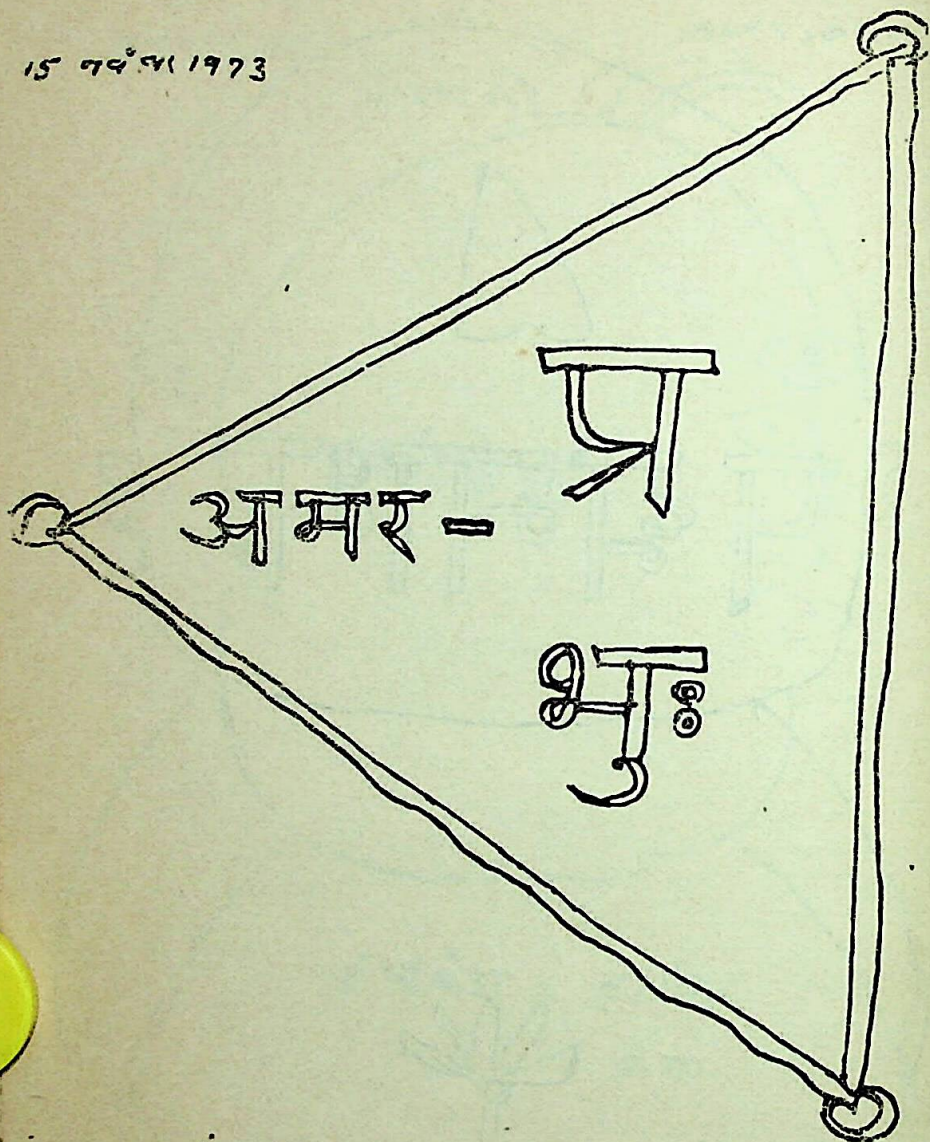
15 नवंबर 1973
अमर-
प्र
भुः
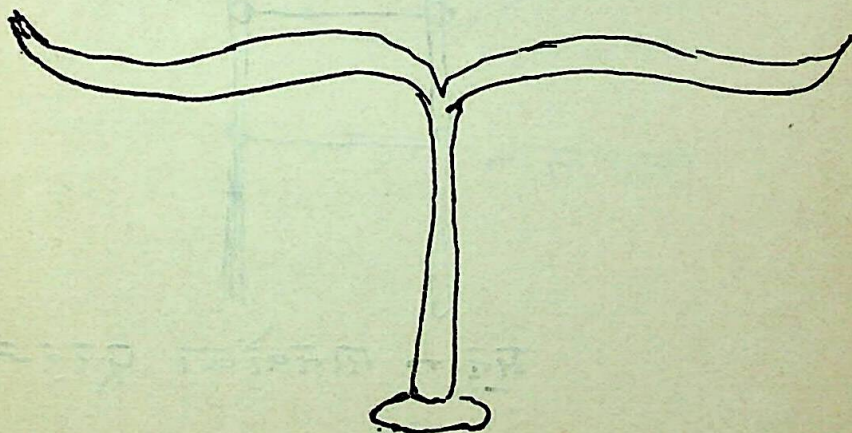
16 नवंबर 1973
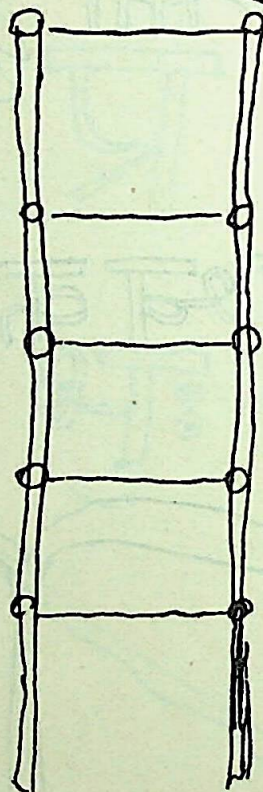
17 नवंबर 1973

मनु – मानवोंका पूर्वज

18 नवंबर 1973
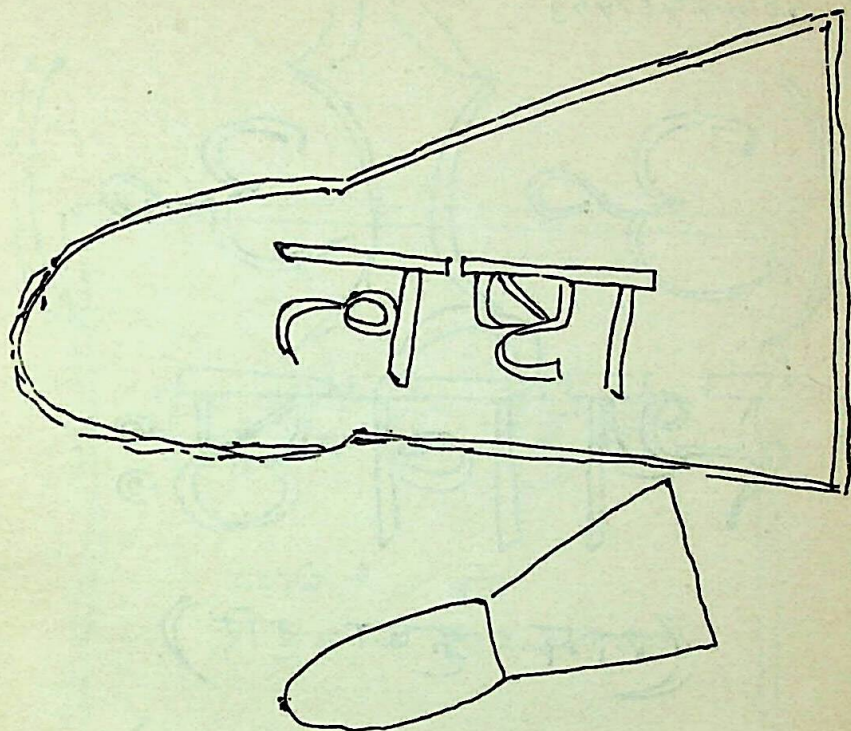
त्वष्टा = तासणारा

२० नवंबर 1973
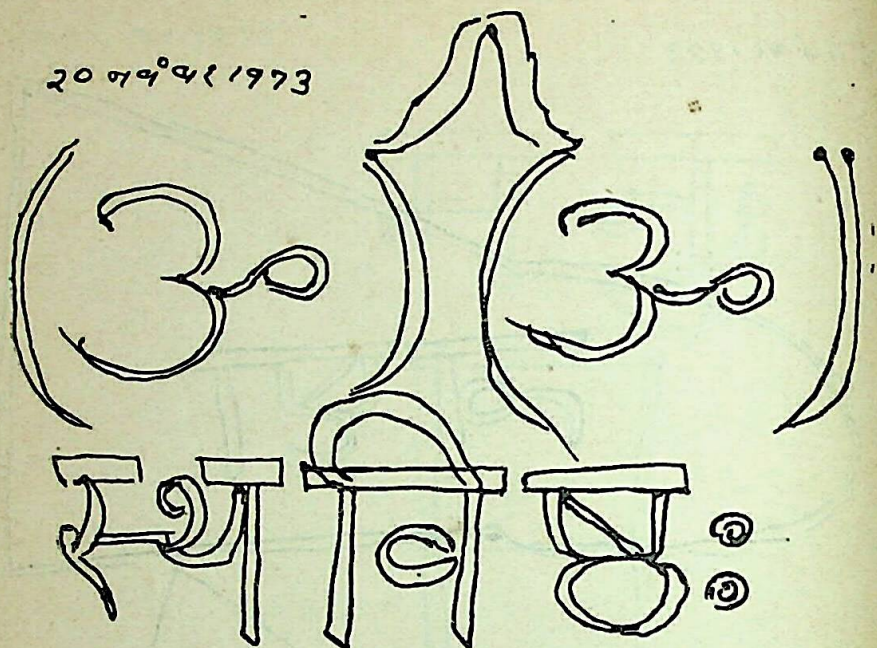
(राम कृष्ण हरि)

स्थविष्ठ = बहुत मोटा
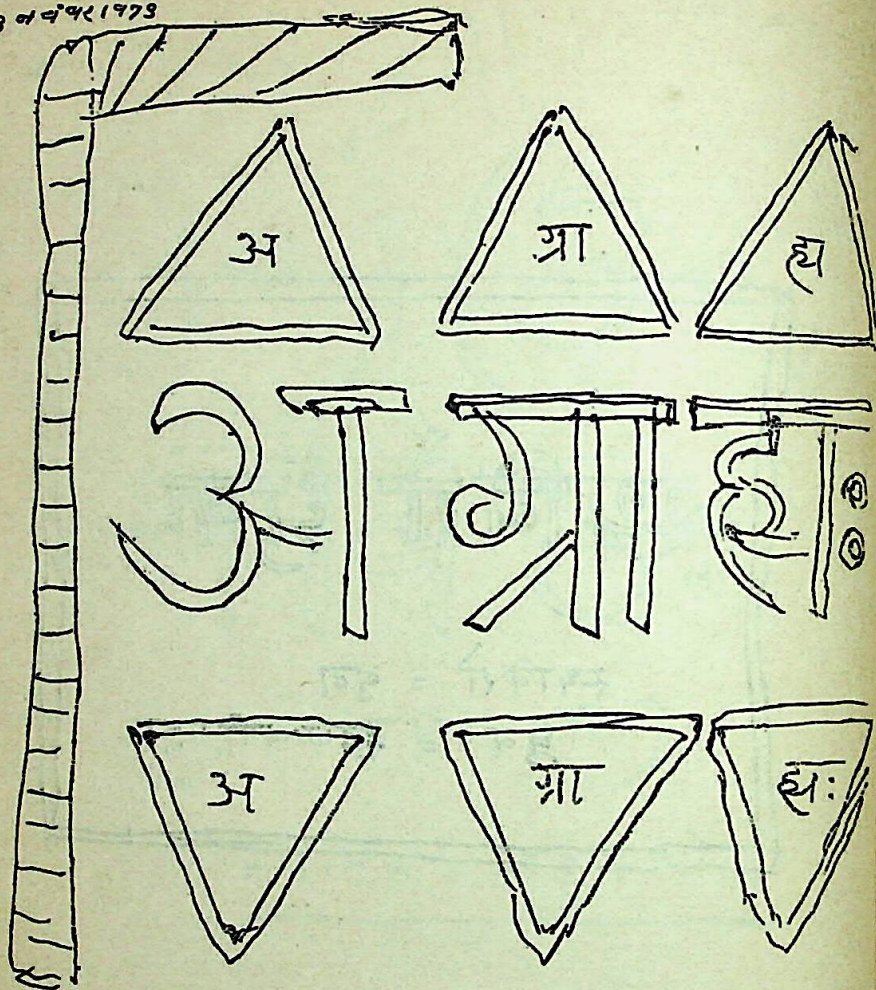
२१ नवंबर 1973

अग्राह्य = जो पकड़ा नहीं जाता
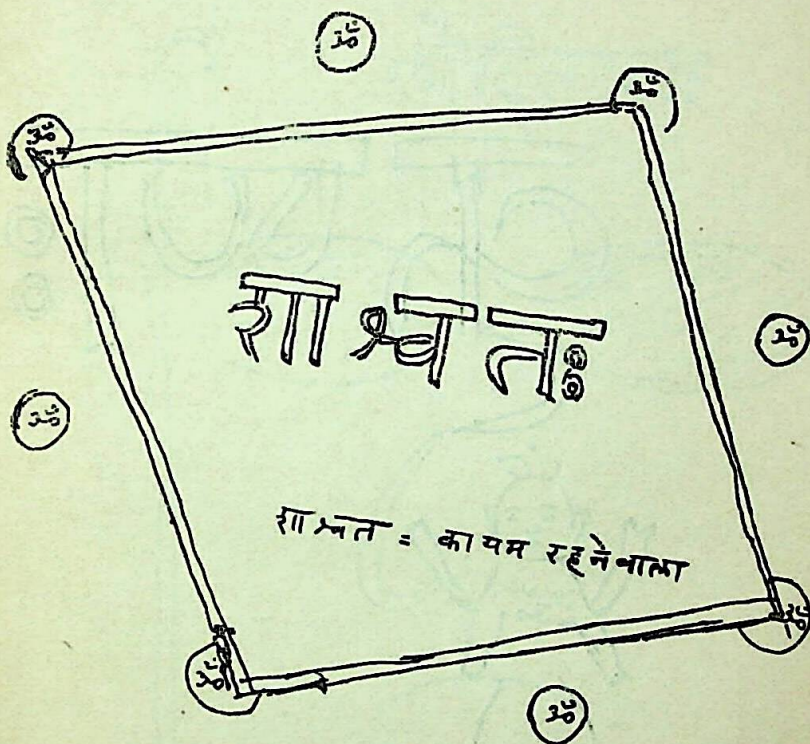
२१ नवंबर १९७३

३० नवंबर 1973

1 दीसंबर 1973
(लाल आंखवाला)
लोहिताक्षः
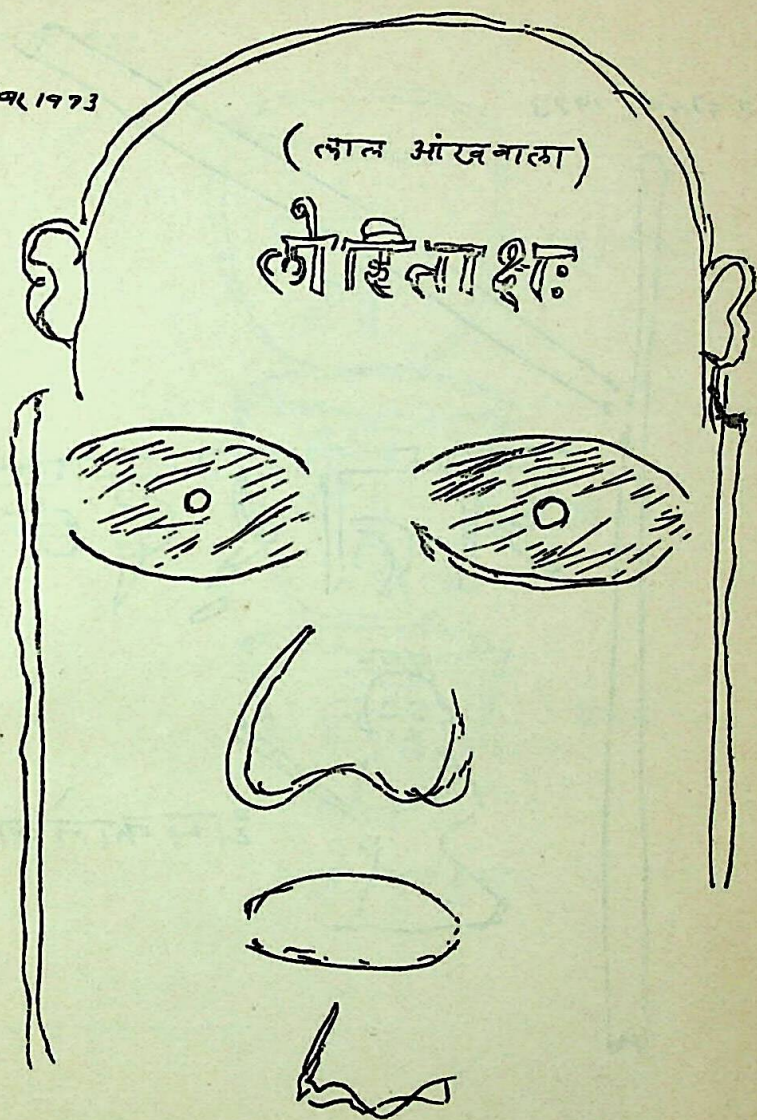
२ दिसंबर 1973
प्रतर्दनः
धमकाने वाला
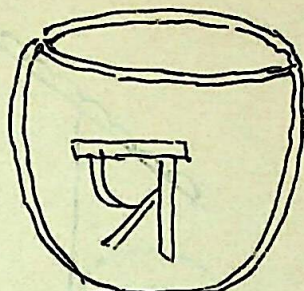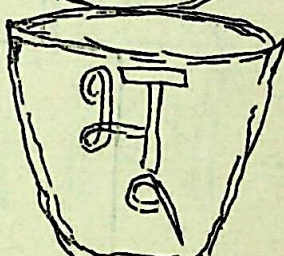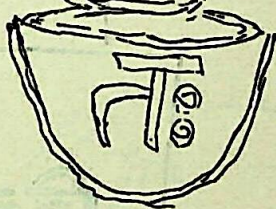
3 दीसंबर 1973

प्रभूत := भरा हुआ
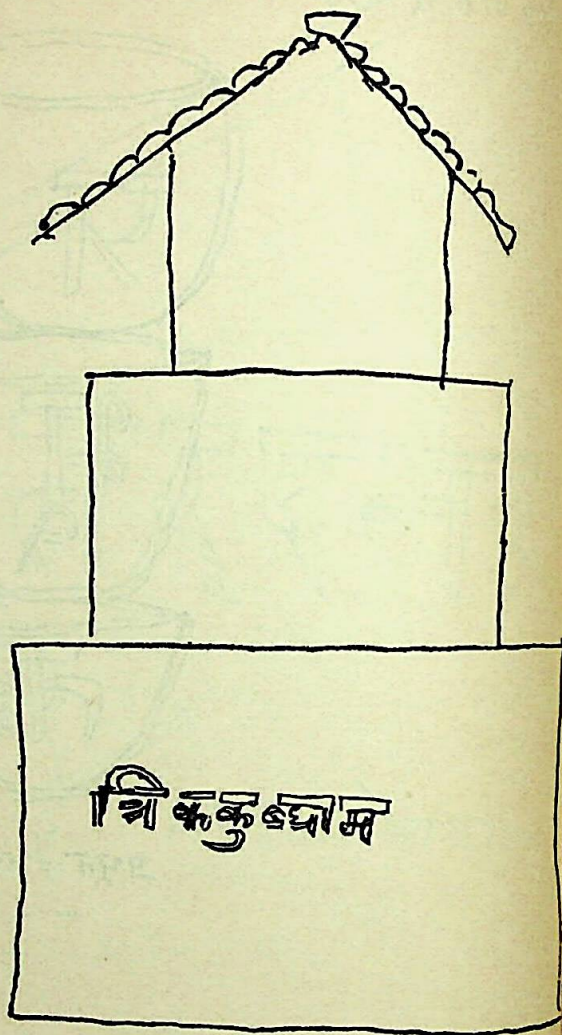
4 दीसंबर 1973

तीन मंजिलवाला घर

१५ नवंबर 1973

सूर्य

चंद्र

नक्षत्र

पवित्रम्

वृक्ष

गाय
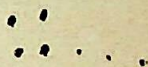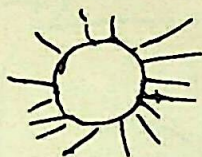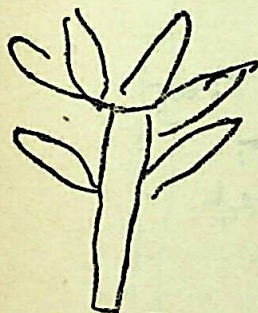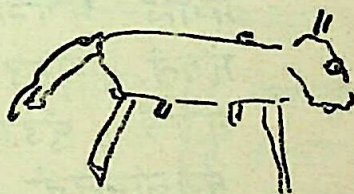
6 दीसंबर 1973

मंगलं भगवान् विष्णुः
मंगलं गरुडध्वजः
मंगलं पुंडरीकाक्षो
मंगलायतनं हरि

7 दीसंबर 1973

ईशानः

ईशान = १ स्वामी
२ शंकर
३ सूरय
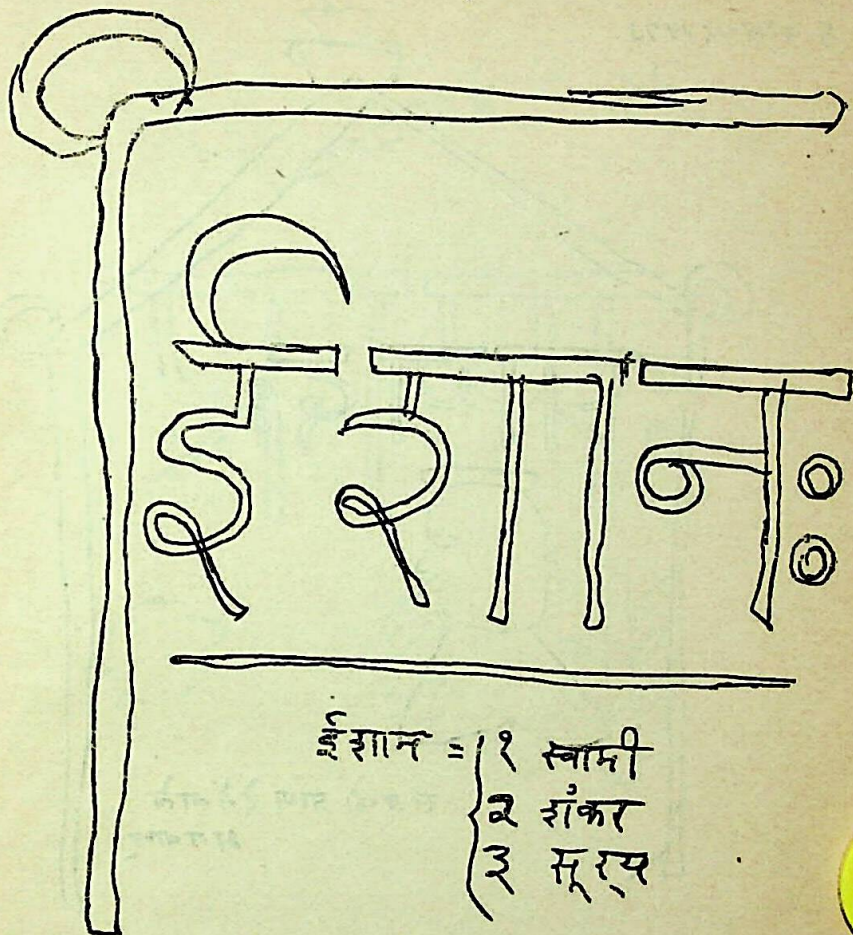
8 दिसंबर 1973
प्राणदः
सबको प्राण देने वाले
भगवान्
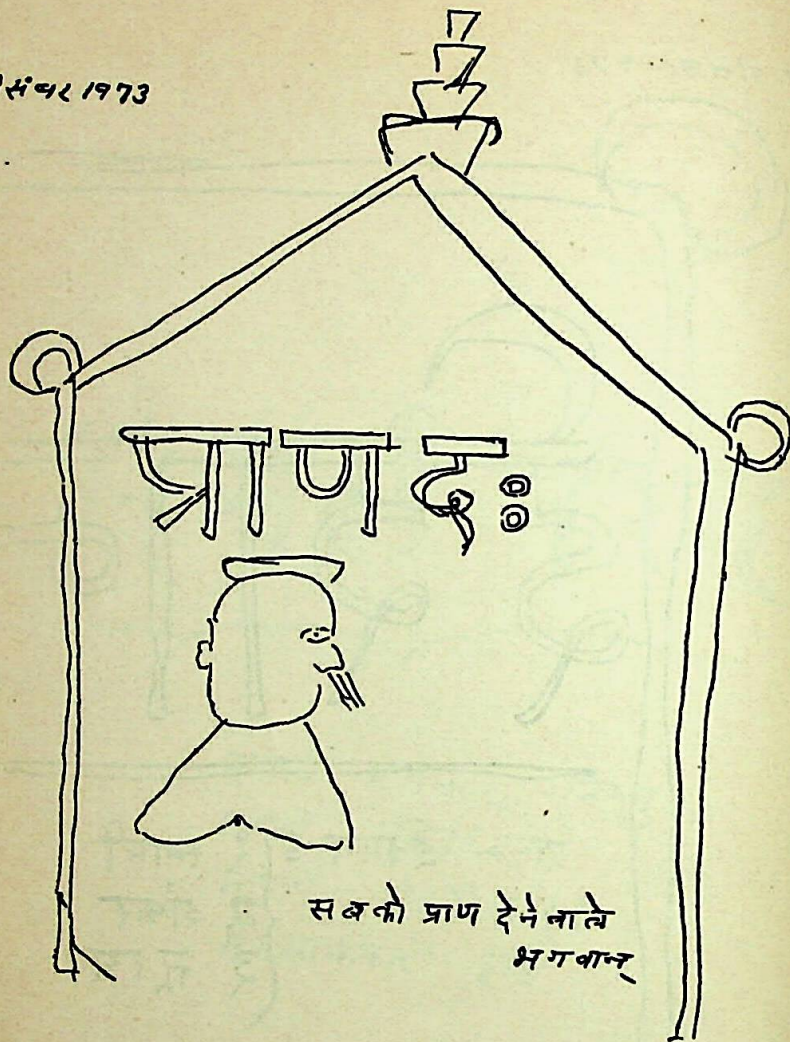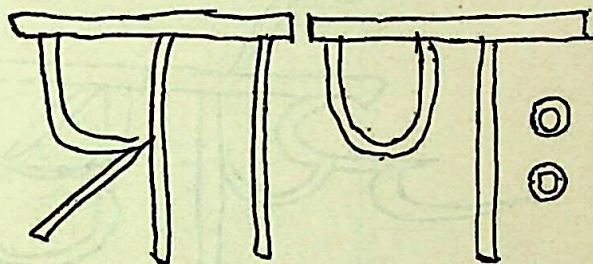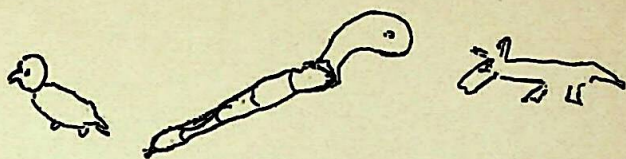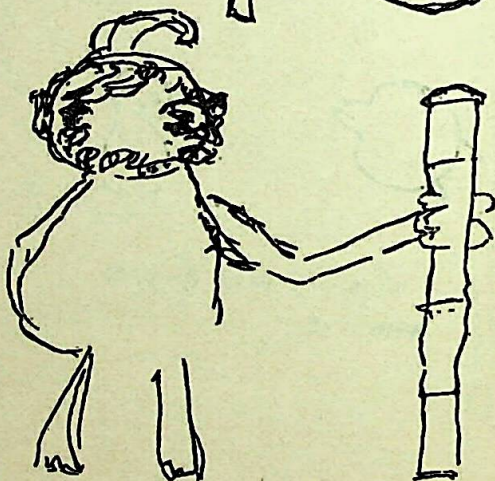
१ दिसंबर 1973

10 दीसंबर 1973
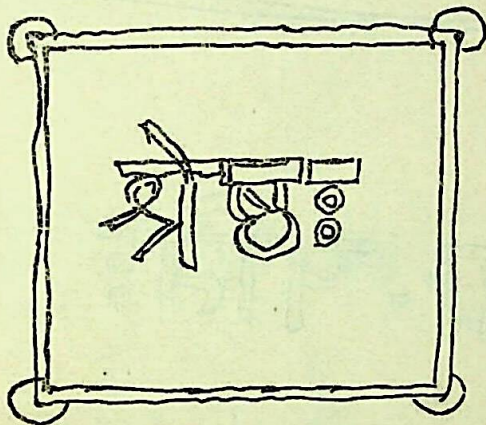
11 दीसंबर 1973

श्रेष्ठ : अत्यंत-कल्याण-कारक

सेठ्ठी

१२ दीसंबर 1973
प्र जा - प तिः
प्रजापति =
प्रजाओंका
पालन
करनेवाला
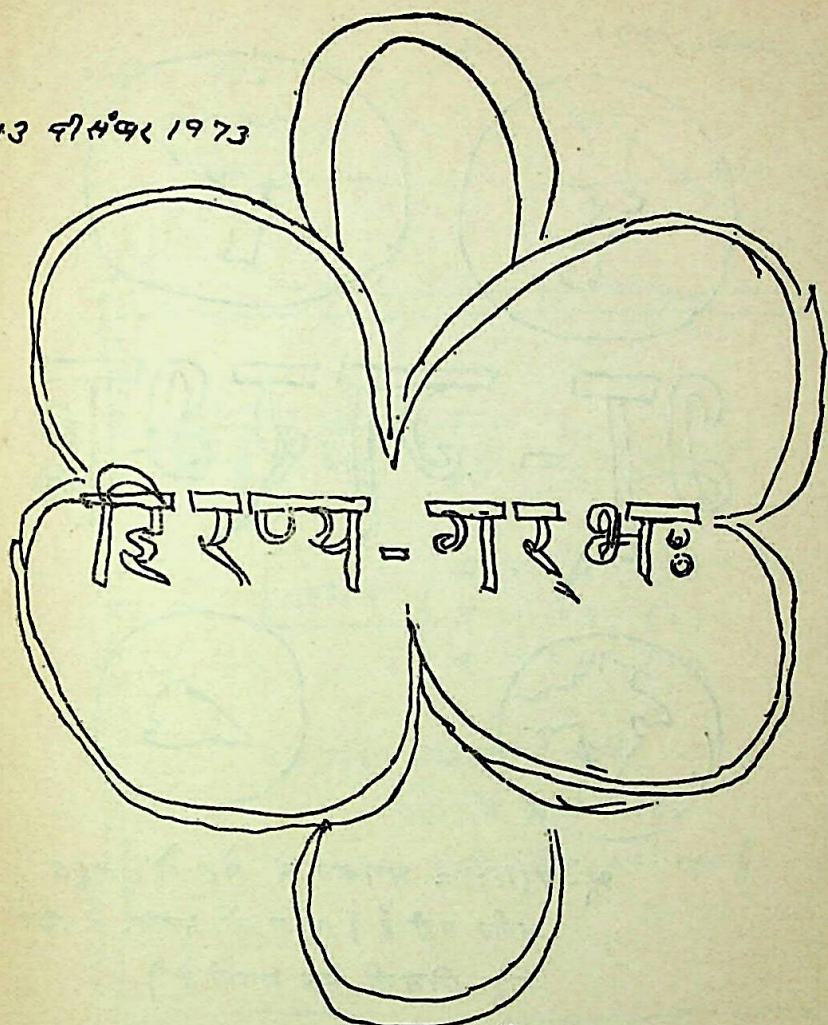
13 दीसंबर 1973
हिरण्य-गरभः
हिरण्य-गरभः = सुवरण की खदान
माताजी को चाहे जितना सुवरण उसमें से
मिल सकेगा।

14 दीसंबर 1973
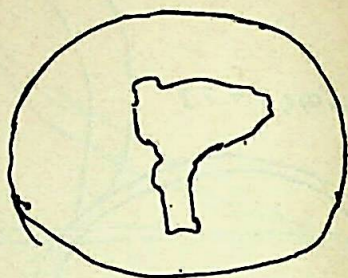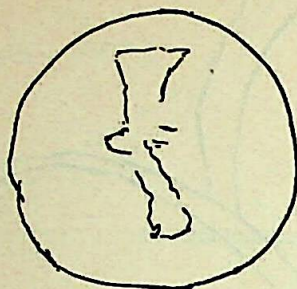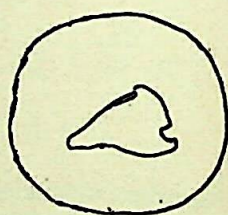
भू-गरभः = भगवान के पेट में बहुत जमीन पड़ी है। बाबा को भूदान के लिये चाहे जितनी मिल सकती है।

15 दीसंबर 1973

मौन
ध्यान
विद्या
माधव
माधव
म = मौन (1)
ध = ध्यान (2)
व = विद्या (3)
माधव-स्मरण के लिये
प्रतिदिन ऊपर लिखी
तीन चीजें करते रहना ॥

16 दिसंबर 1973

मधु-सूदनः

मधु-सूदन = काम वासना को खतम करने वाले ॥

मधु = कामवासना
सूदन = खतम करने वाले ॥

17 डीसेंबर 1973
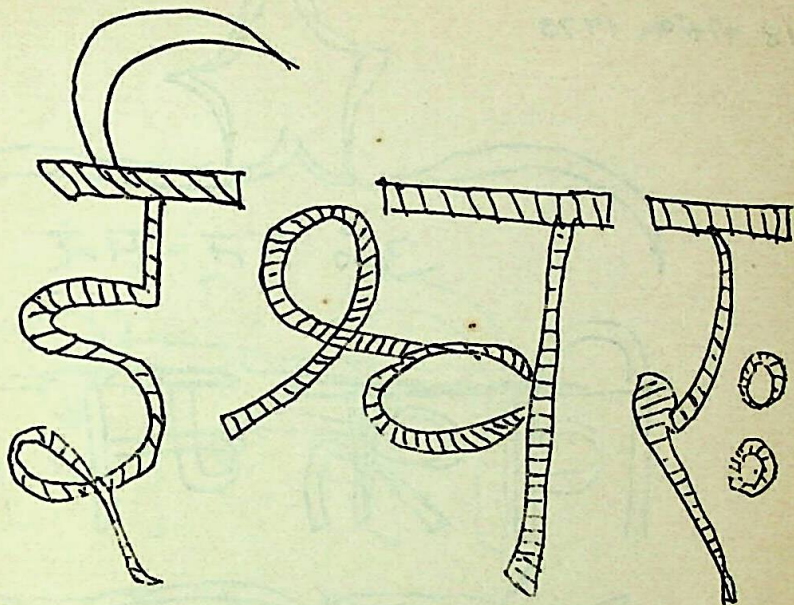
ईश्वर = सर्वांवर
सत्ता
चालवणारा ||
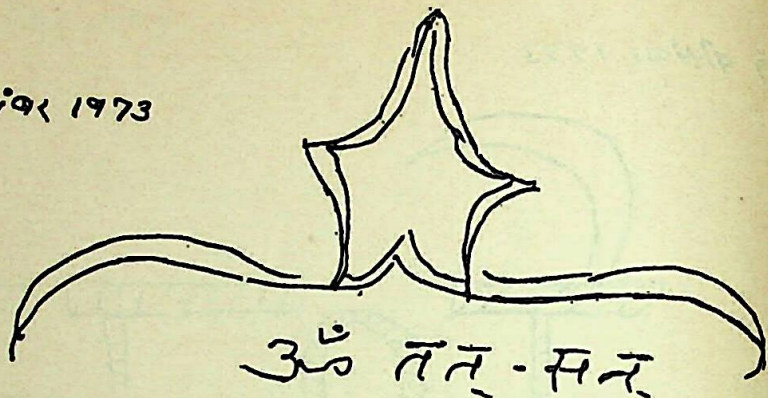
18 नवंबर 1973
ॐ तत् सत्
विक्रमी
विक्रमी = महा-पराक्रमी
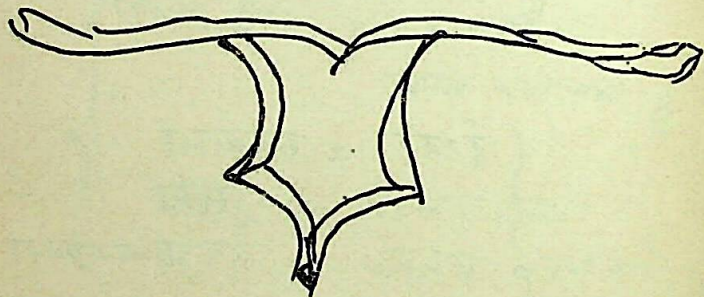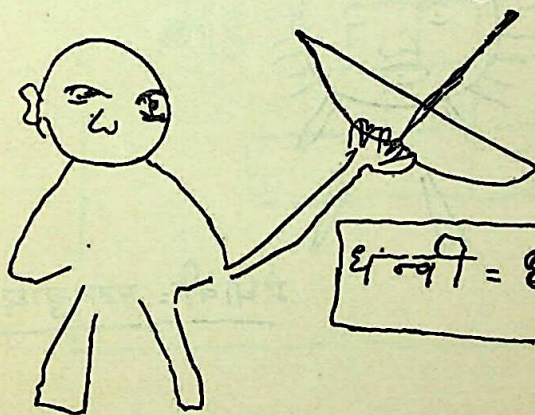
19 दीसंबर 1973
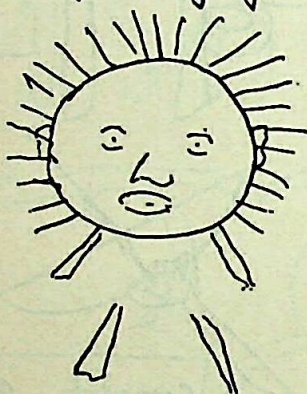
२० दिसंबर 1973

मेधावी = महा-बुद्धिमान्

२१ दीसंबर 1973
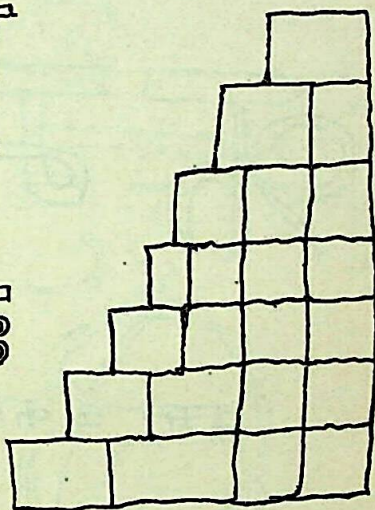
22 नवम्बर 1973

दैनिक कार्यक्रम

४ – ४॥
४॥ – ५
५ – ६
६ – ९
९ – ११
११ – १२

१२ – २
२ – २॥
२॥ – 3
3 – ५
५ – ६
६ – ८
८ – ९

क्रमः = कार्य-क्रम

बनवणारा

24 दीसंबर 1973
अनुत्तमः
अनुत्तमः = सबसे ऊंचा
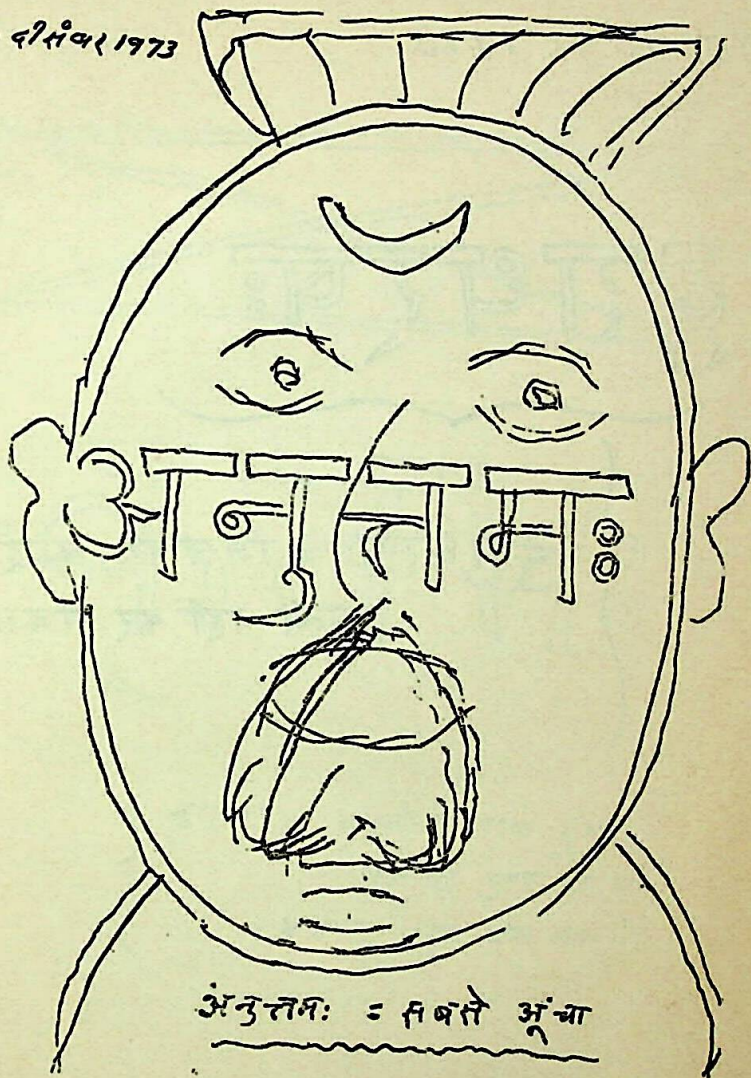
25 दिसंबर 1973

दुराधर्षः

दुराधर्षः = जिस पर कोई हमला नहीं कर सकता।

२६ दिसंबर १९७३
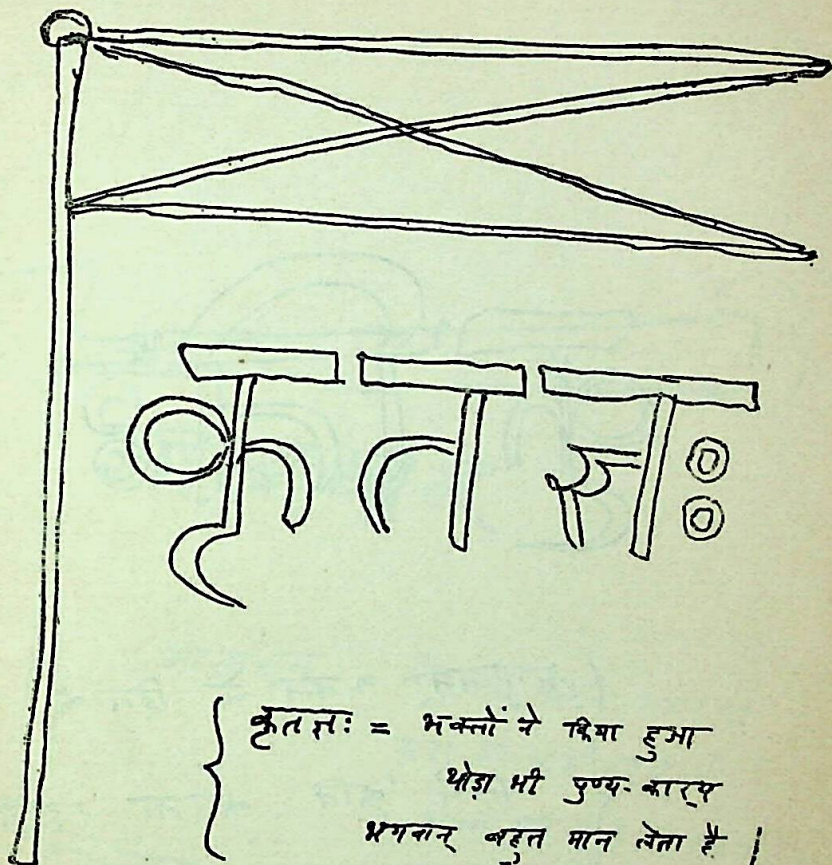
27 दिसंबर 1973

भगवान् भक्त के हित के लिये 'कृति' करता रहता है। भक्त को चिंता की जरूरत नहीं॥

२8 दिसंबर 1973

२९ दीसंबर 1973

30 दिसंबर 1973

31 दिसंबर 1973

ॐ शांति: शांति: शांति:

शरम्
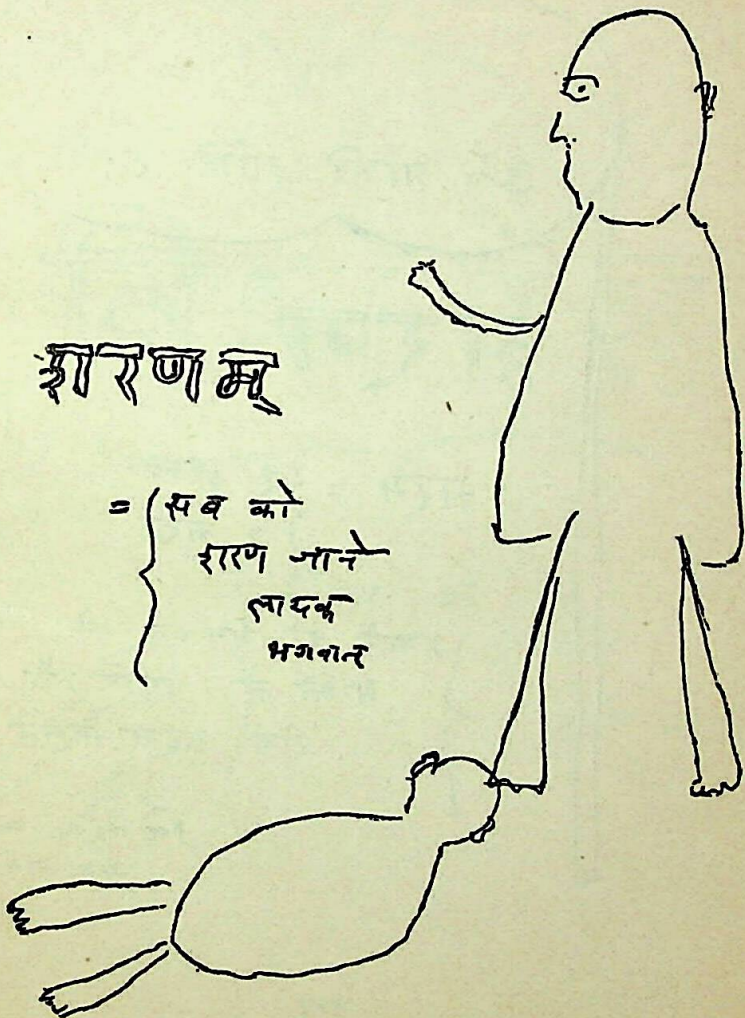
शरम् = { १ शांति
२ सुख

{ भक्तों को भगवान् की
भक्ति से शांति और सुख
दोनों सहज मिलते हैं

विनोबा का
जय जगत्
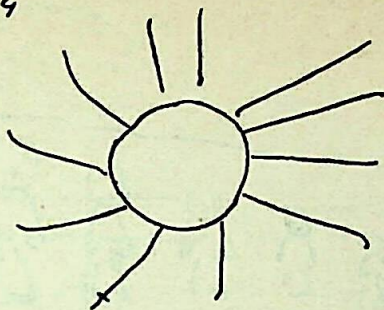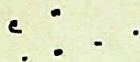
विश्वरेताः
विश्व को प्रेरणा देने वाला
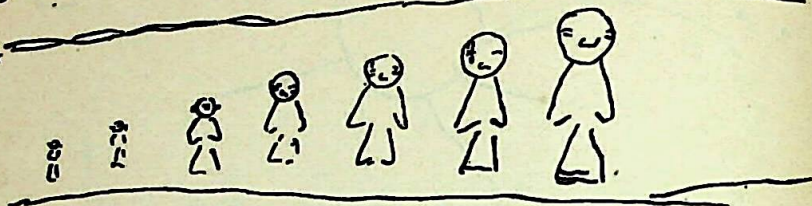
२ जनवरी १९७५

प्रजा = भवः

= समाजको बनांनेवाला

३ जनवरी 1974

जिसको न कोई
मार सकता है
न जीत सकता है।

४ जनवरी 1974

सब प्राणी जिसके आधार से
जीवन जीते हैं।

5 जनवरी 1974

<u>अक्षरार्थ</u> — सर्प।
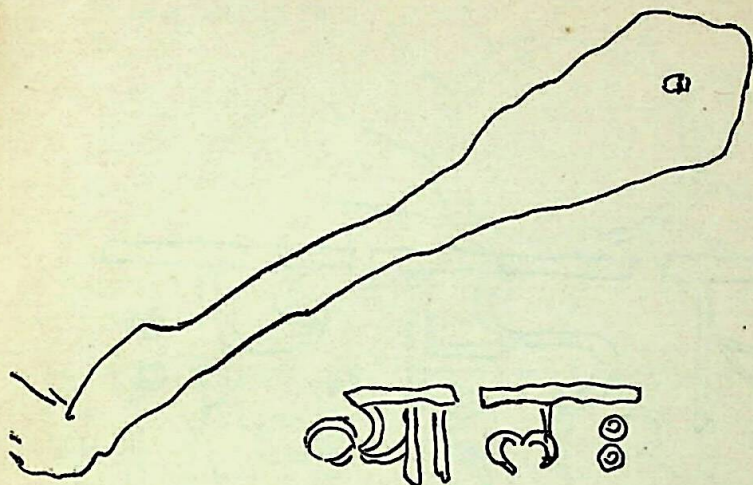
<u>भावार्थ</u> — काल-व्याल ज्यों
ग्रस्यो डोले, मुख पसारे
मीत।

परमात्मा सहसा किसी की
पकड़ में नहीं आता।
अुसके लिये अुत्कट भक्ति
चाहिये॥

6 जनवरी 1974

प्रत्ययः =
- १ निष्ठा
- २ ज्ञान
- ३ अनुभव

१ प्रथम: निष्ठा रखना।
पीछे. ज्ञान होता है।
आखिरमें अनुभव होता है॥

7 जनवरी 1974
सरव-दरशनः
= सब को
देखने वाला
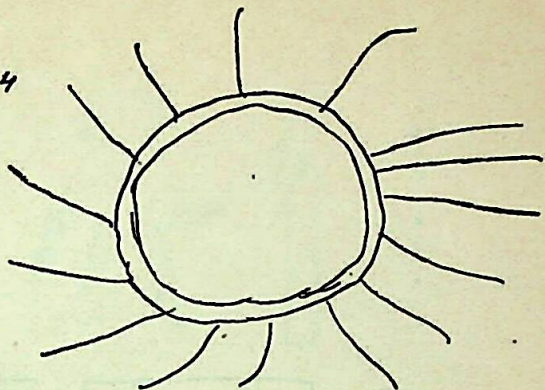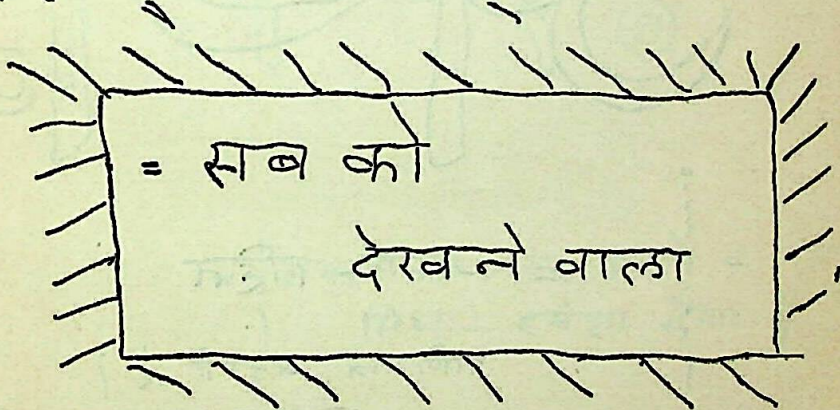
4 जनवरी 1975

= जन्म-रहित

प्राणिमात्र जनमते हैं।
भगवान् का जन्म नहीं,
वह तो है ही॥

जनवरी 1974
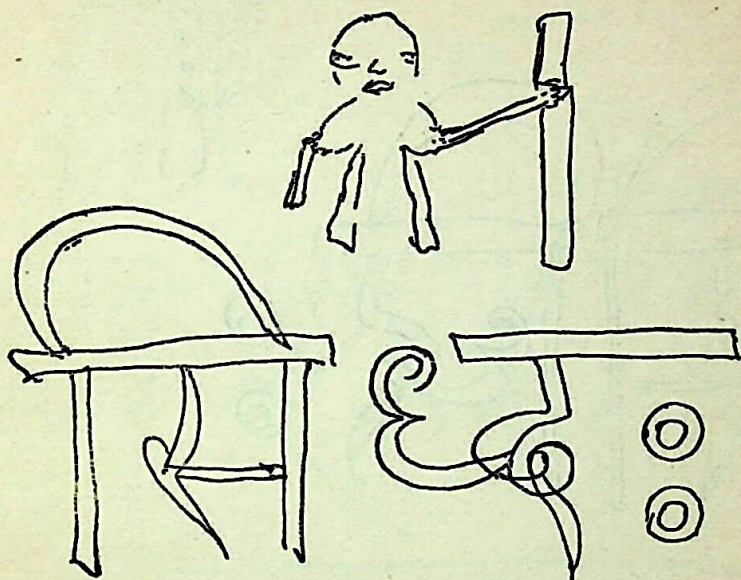
= भक्तों को मदद करने के लिये सिध्द – हमेशा तैयार ॥
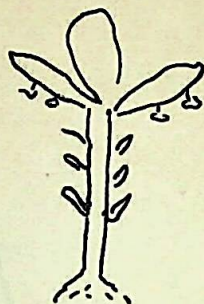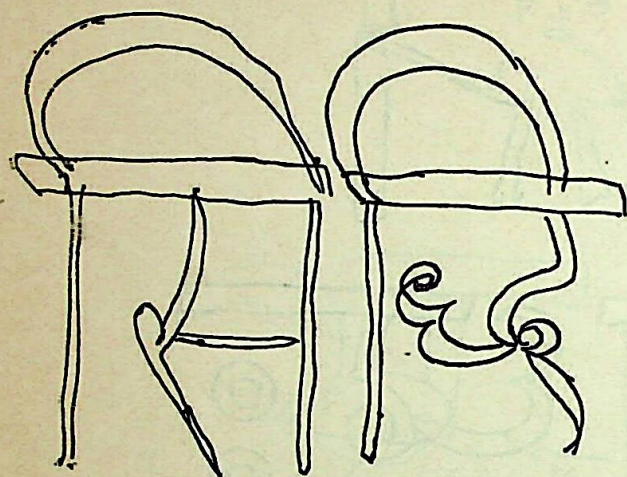
= सफलता (भगवान् के हाथ में)
क (करम करनेका अपना अधिकार)
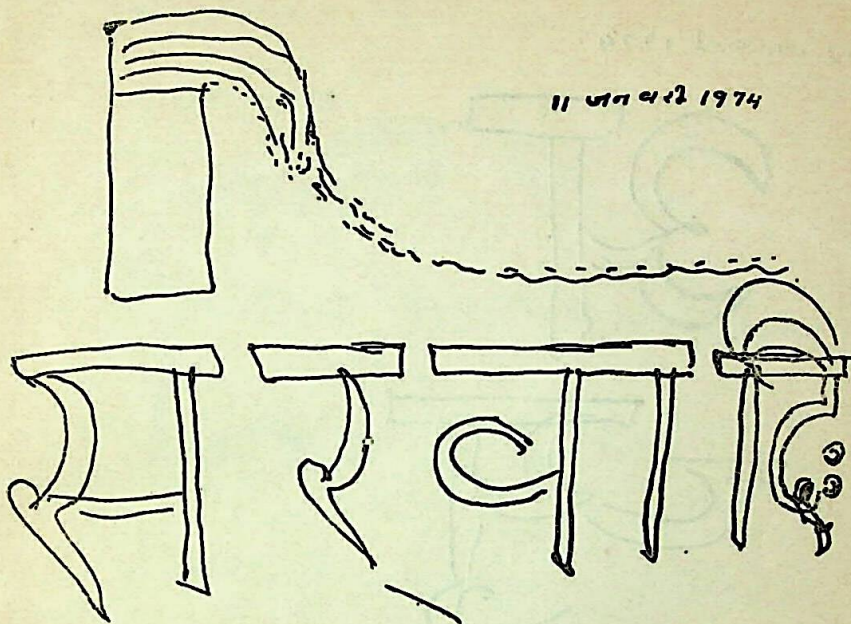
11 जनवरी 1974
= सब के अगम स्थान

12 जनवरी 1974

जो कभी गिरता नही।
उसकी कृपा से भक्त भी नहीं गिरेगा॥

13 जनवरी 1975
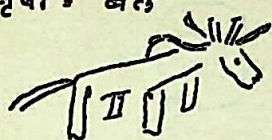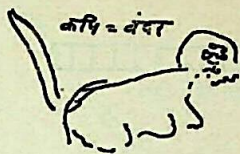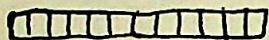
14 जनवरी 1974

= जिसकी शक्ति को
नाप नहीं सकते

15 जनवरी 1975
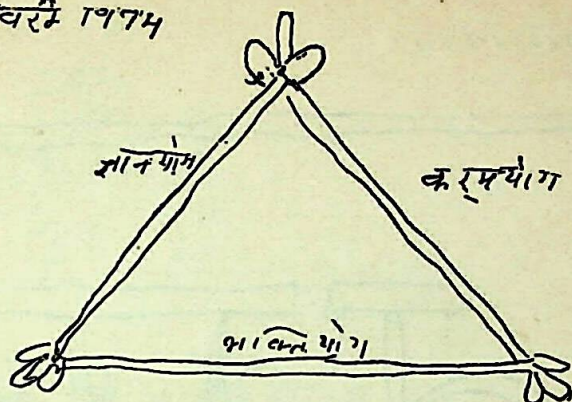
ज्ञानयोग

कर्मयोग

भक्तियोग

सर्व-योग-

विनिःसृतः

ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग,
तीनों के योग से
भगवान की प्राप्ति
होती है ॥

16 जनवरी 1974
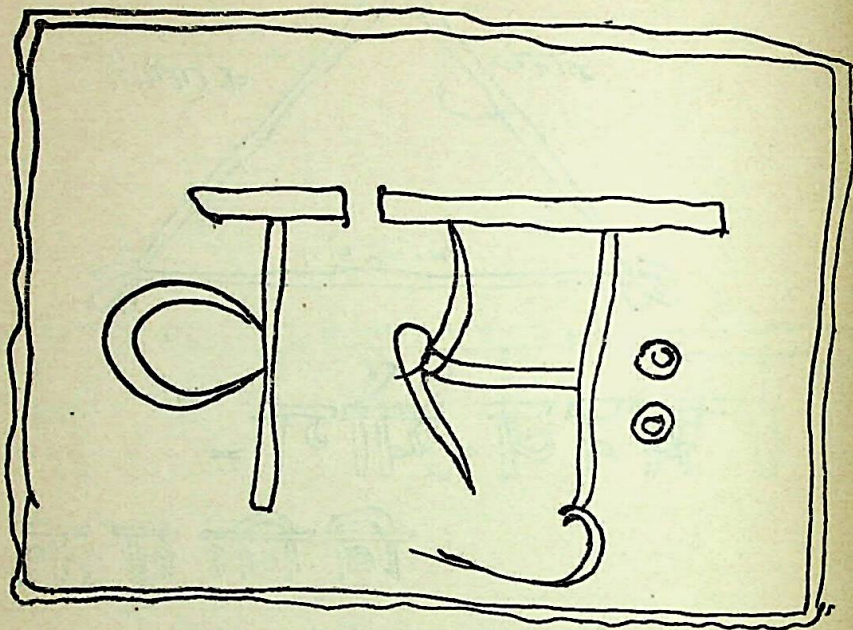
= सौजन्य, भलाई

भगवत्-कृपा से भक्त को
सौजन्य प्राप्त होता है।

17 जनवरी 1994
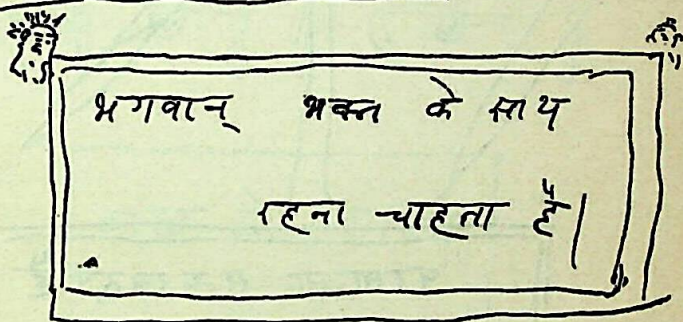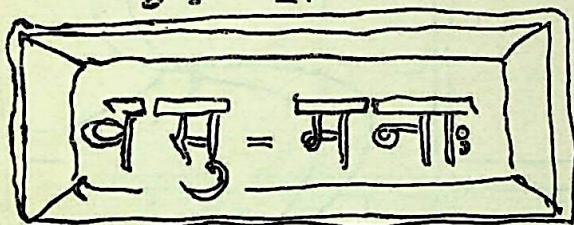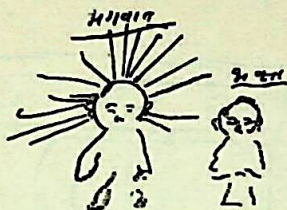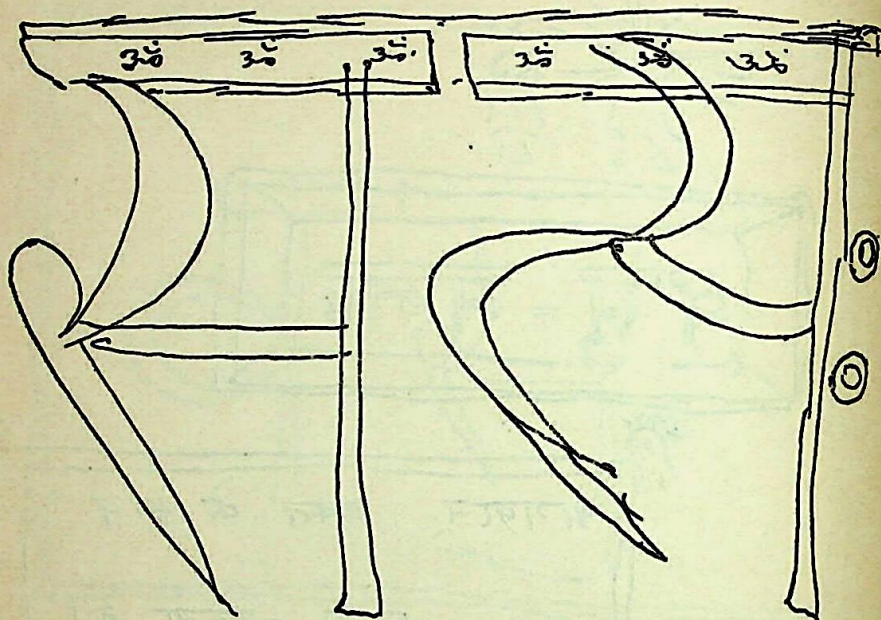
18 जनवरी 1975

19 जनवरी 1974
पंच-समिति
समता
सब के साथ
समान व्यवहार
करने - वाला

२० जनवरी 1974

असंमितः

जिस को कोई
सीमा या मरयादा नहीं
यानी
अनंत-कोटि-ब्रह्मांड-नायक

२१ जनवरी १९७५

जिनका आशीर्वाद
कभी व्यर्थ नहीं जाता

लेकिन

भक्ति करणो पड़सी

२२ जनवरी 1974

पुंडरीकाक्षः

कमल के समान
निरमल नेत्र भगवान के।
हम भक्तों को
देख रहे हैं।

23 जनवरी 1974

वृष = धरम
करम = काम

वृष = करम

धरम के लिये
काम करने की
प्रेरणा देनेवाले ॥

२॥ जनवरी १९७५

वृष = धरम
आकृति = आकार, अवतार

वृषाकृतिः

धरम के रक्षण के लिये
जो बार बार
अवतार लेते हैं।

25 जानेवारी 1974

रुद्रः

= भयंकर,
रडवणारा
(दुर्जनांना)

२८ जनवरी १९७५

बहु-शिराः
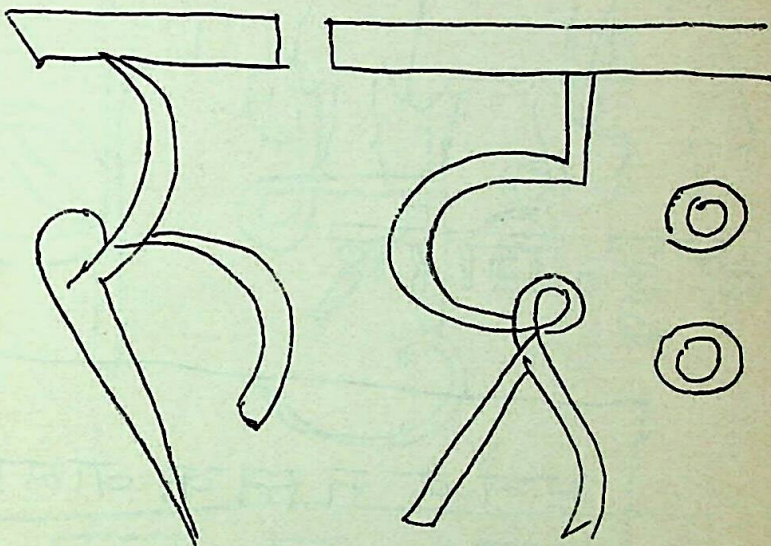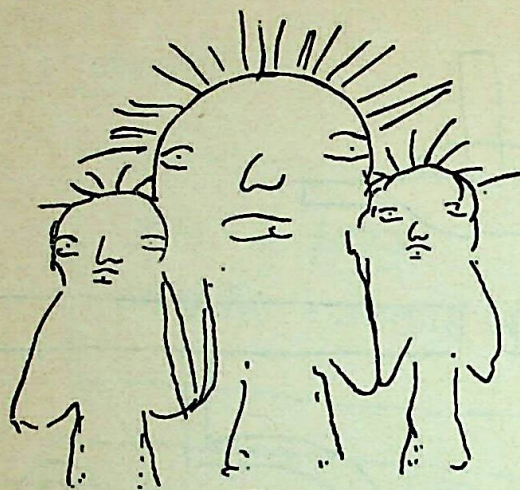
अनेक मस्तक वाला।

भगवान् को भक्तों के
लिये, और दूसरों के
लिये भी,
बहुत सोचना पड़ता है।
इस लिये
अनेक मस्तक॥

२७ जनवरी १९७५
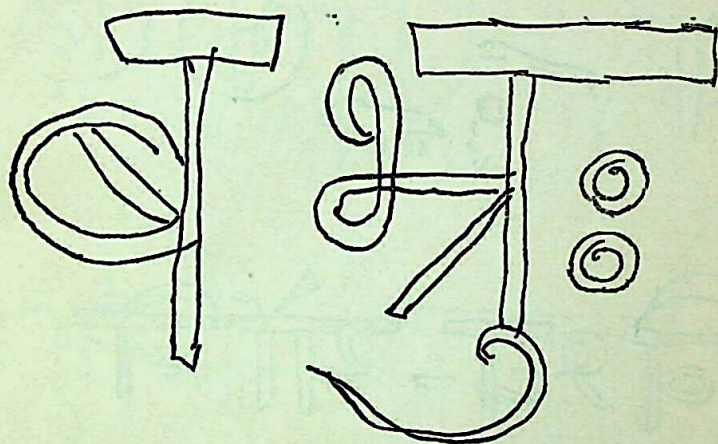
खिचड़ी → भरण पोषण के लिये

श्रृः

सब का भरण

करने वाला

(म्हां ■ ने चिंता कोनी)

28 जनवरी 1974

विश्व का

जन्म-स्थान

२१ जनवरी 1974

हज़ार कान

शुचि-श्रवाः
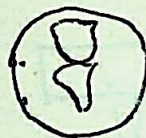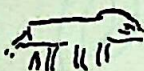
पवित्र हैं नाम जिसके।
हज़ार कानों से सुनो॥

30 जनवरी 1974

गुरु गूड़ दीया मीठा.

= (१) कभी न मरनेवाला

(२) अमृतरस से भरा हुआ
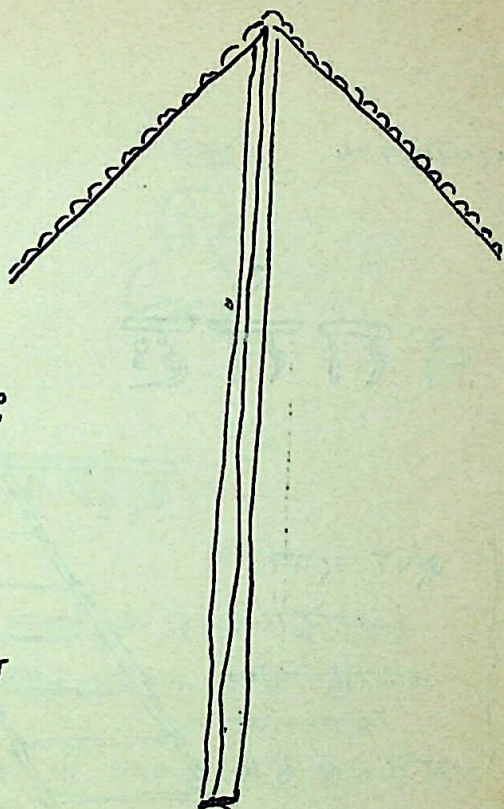
फरवरी/1974
वरारोहः
ऊपर ऊपर
चढने से
आखिरी सीढीपर
भगवान् की
प्राप्ति होती है ||
चढने मे
हारना
नहीं ||

२ फरवरी 1974

महा - तपाऊ
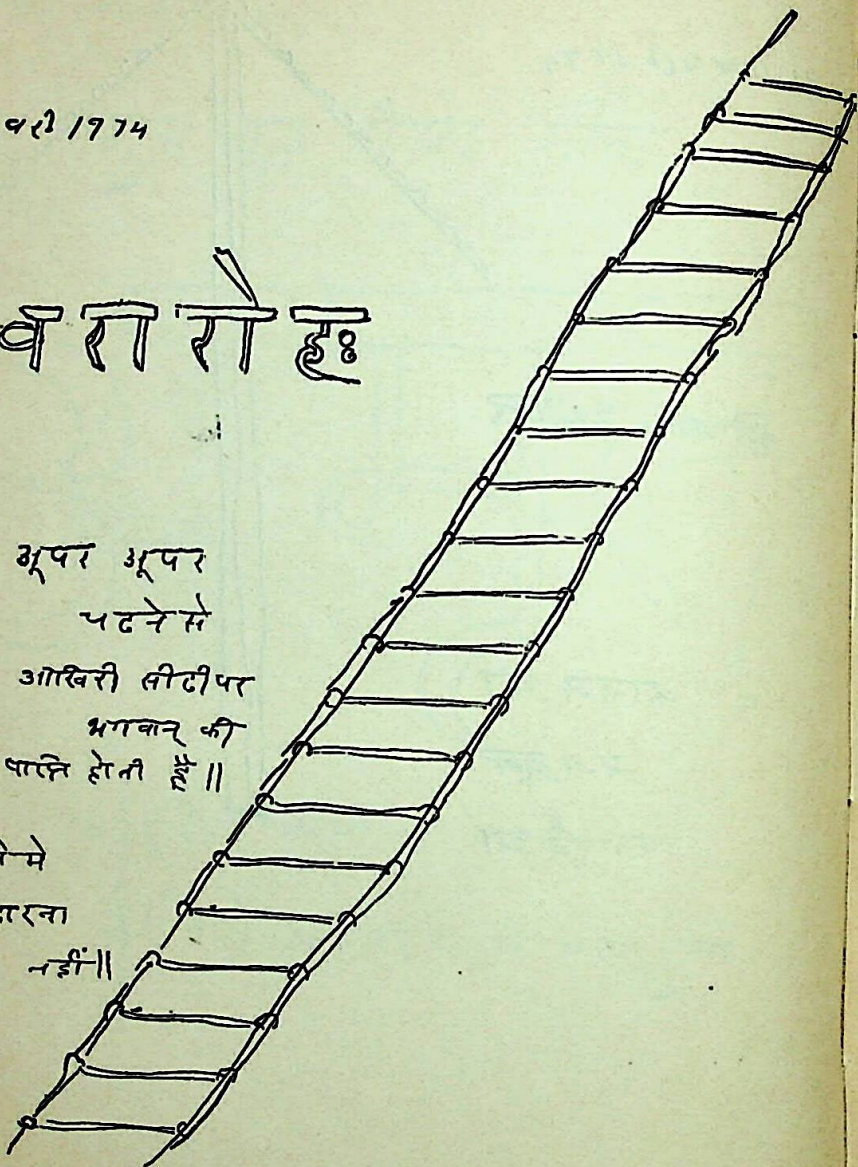
[भगवान् भक्तो के रक्षण के लिये
महान् तपस्या करते है ।

[भक्तों को भी भगवान् के दर्शन के लिये
वैसी ही तपस्या करनी चाहिये ॥

3 ફરવરી 1974

{ भक्तों की रक्षा के लिये सब दूर जाने वाला ||

{ भक्तों को अपने स्थान पर भक्ति करनी चाहिये ||
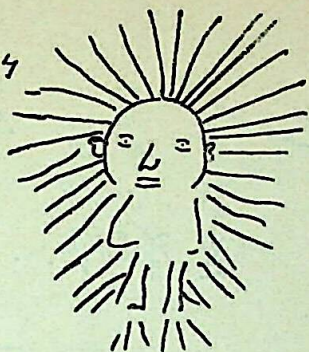
सर्वविद्-भानुः

सब को जानने वाला

और

प्रकाश देने वाला
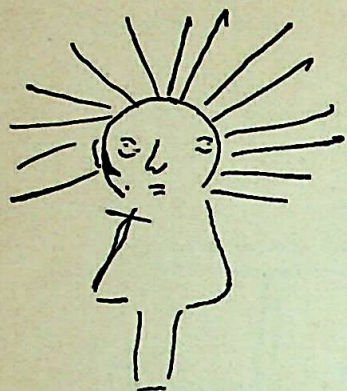
विष्वक्-सेनः
भगवान् के सामने
दुर्जनों की सेना
चारों ओर
भागती है॥

८ फरवरी 1974

7 फरवरी/1975

वेद पंथी

अर्जुन मोरे
पुरोहितम्
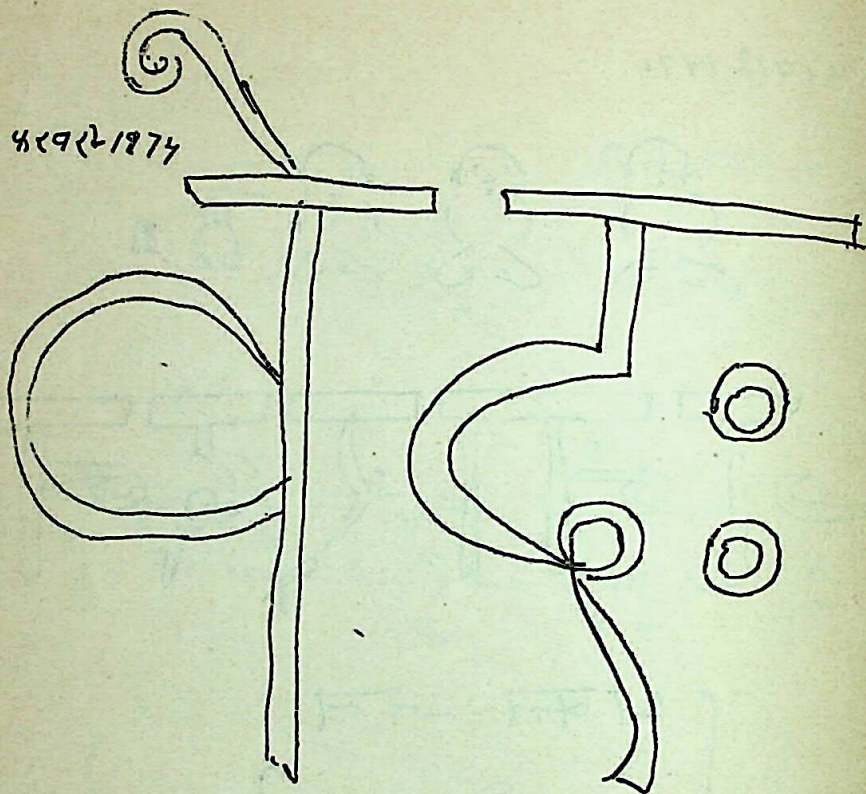
मानव को बोध देने के लिये
भगवान् वेद बने हैं।

लेकिन, जो वेद नहीं समझ सकते
उन के लिये विष्णु सहस्र नाम
वेद का ही रूप है।
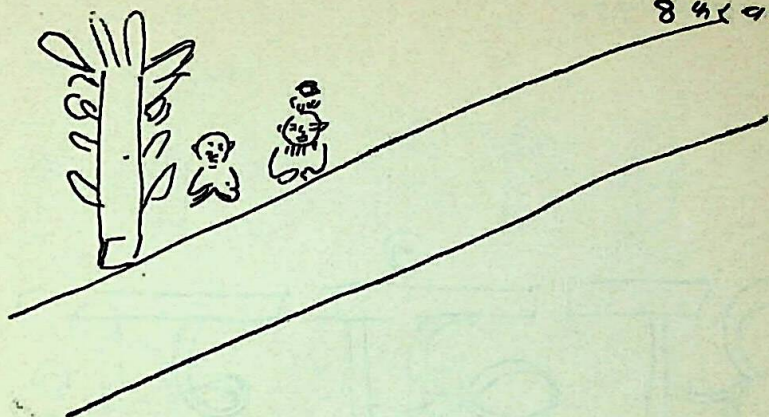
वेद का चिंतन-मनन
करने वाले
ऋषि-मुनि
भगवान् का ही
रूप हैं॥

७ फरवरी 1974

भगवान् में

कुछ भी न्यूनता नहीं।

उस की कृपा से हम को भी
परिपूर्णता मिलेगी।

10 फरवरी 1974

वेदांग:
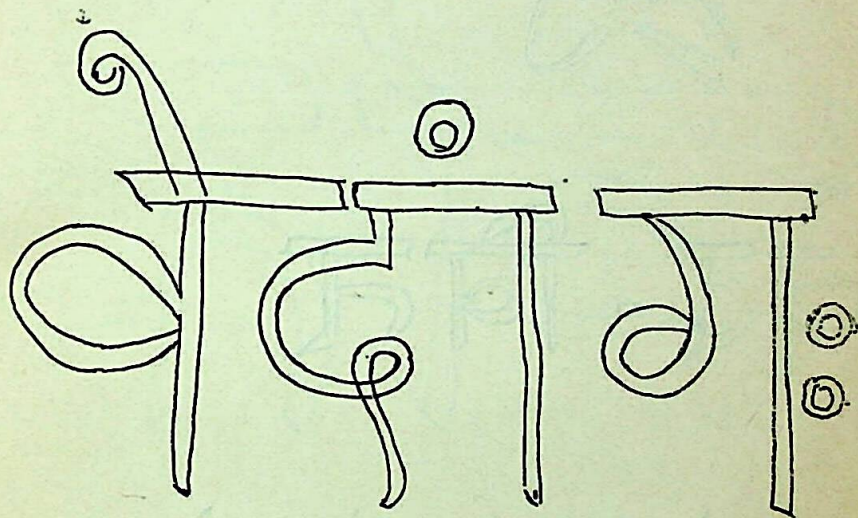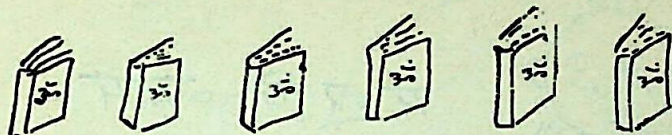
वेदज्ञान के लिये
व्याकरण-आदि
षड् अंगों का
अध्ययन करना पडता है।

[वे अंग भी भगवान के ही रूप हैं।]

11 फरवरी 1974

महर्षि व्यास

'वेद को जानने वाले

महर्षि व्यास

भगवान् का

अवतार थे

भगवान् का
गाना
कौन सुनेगा
?

12 फरवरी 1974

कवि
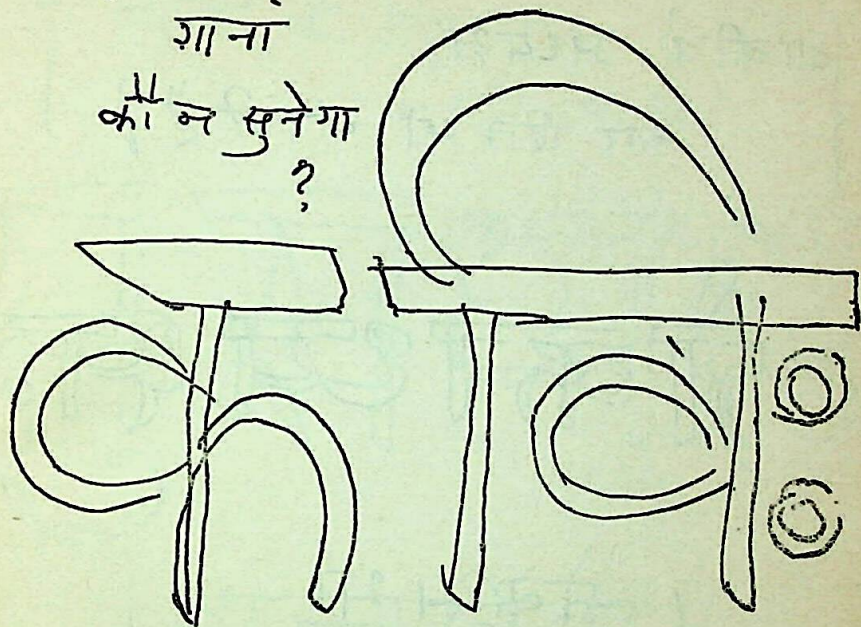
सब देखने वाला
और
निरंतर गाने वाला

13 फरवरी 1974

बाकी के अध्यक्ष
चार दिन की चांदनी है।

लोकाध्यक्षः

लोक सभा
का
वास्तविक अध्यक्ष
भगवान् ही हैं।

14 फरवरी 1974

बाकी के राष्ट्रपति
नाम-मात्र।

गुरुध्यायश्रु

वास्तविक
राष्ट्र-पति
भगवान्

15 फरवरी 1974

दूसरे न्यायाधीश
निरुपयोगी हैं।

धर्माध्यक्ष:

क्या धर्म, क्या अधर्म
इसका निर्णय देनेवाला
न्यायाधीश
भगवान ही है।

16 फरवरी 1974

1 कृत — पुण्याचरण करें
2 अकृत — पुण्याचरण का अभिमान न करें

तब

3 भगवान् की प्राप्ति होती है ॥

17 फरवरी 1974

मनो-बुध्यहंकार-चित्तानि नाहम् ॥

मैं मन नहीं हूं।
बुद्धि नहीं हूं।
चित्त नहीं हूं।
अहंकार नहीं हूं।
सब का साक्षी हूं ॥

चतुरात्मा

१ मन
२ बुद्धि
३ चित्त
४ अहंकार

चारो का साक्षी अंतरात्मा
भगवान् ॥

18 फरवरी 1974

संध्यावंदनमें भगवान् के चोबीस नाम आते हैं।

अुनमें ये चार आते हैं।

आरंभ में है —

केशवाय नमः

संकर्षणाय नमः
वासुदेवाय नमः
प्रद्युम्नाय नमः
अनिरुद्धाय नमः

चातुर-व्यूहः

1. संकर्षण
2. वासुदेव
3. प्रद्युम्न
4. अनिरुद्ध

ये चारों भगवान् के अवतार ॥

१७ फरवरी १९७५
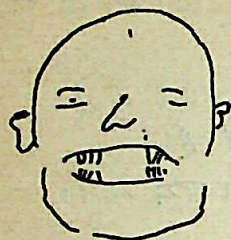
चार दाढा ॥

राक्षसों को खा डालने के लिये ॥

चातुर्-दंष्ट्रः

कराळ दाढा
विकराळ तोंडें
कल्पान्त-अग्नीसम
देखतां चि
दिङ्मूढ झालों सुख तें पळालें
प्रसन्न हो की जग हे उसें चि ॥

२० फरवरी 1974

चतुर-भुजः

[भक्तों की रक्षा के लिये
चार हाथ धारण
किये हैं
भगवान ने।
["अब चिंता कोनी"

21 फरवरी 1974
सूरज
अग्नि
भक्त (श्रम कर रहा है)
भ्राजिष्णुः
[प्रखर, तपने वाला
भगवान्।
और
[भक्त को, प्रखर
तपस्या
करनी होगी॥

22/12/1974

१ पहिला पक्वान्न – आकाश
२ दूसरा पक्वान्न – वायु
३ तीसरा पक्वान्न – प्रकाश
४ चौथा पक्वान्न – पानी
५ पांचवा पक्वान्न – मिट्टी

भगवान् ने
भक्तों के लिये
पंच-पक्वान्न का
भोजन
बनाया
है

२३ फरवरी १९७४

भोक्ता = { खानेवाला,
स्वीकार करनेवाला

भोक्ता

१ भक्त पत्र-पुष्पादि
प्रेमपूर्वक जो भी
अर्पण करेगा,
उस को भगवान्
स्वीकार करता है।

२ प्रलय काल में
सब विश्व को
खा जाता है।

24 फरवरी 1974

भक्तो के
अनंत अपराध
सहन
करने वाला

25 फरवरी 1974

जगदादिज

जगत् के आरंभ में
ब्रह्मदेव के रूपमे
भगवान्
अवतीर्ण हुए।
फिर सूर्य, चंद्र, तारका, वृक्ष, पशु-
मनुष्य आदि पैदा हुए

26 फरवरी 1975

भक्त को भी
पाप-मुक्त रहने की
कोशिश करनी चाहिये।

अनघः

भगवान् को
पाप
छूते नहीं।

27 फरवरी 1974

योगेश्वर जिथें कृष्ण
जिथें पार्थ धनुर्धर
तिथे मी पाहतों नित्य
धर्म श्री जय वैभव

भगवान् विजय
की मूर्ति हैं।
भक्त भक्ति की चिंता करे,
तो
अुसकी भगवत्-कृपासे
सदा विजय होगी।

२४ फरवरी १९७५
जीता
जीतने वाला
१ लड़ाइयों में
२ खेलों में
३ स्पर्धाओं में
४ वक्तृत्व में
५ सब कामों में

1 मार्च 1974

त्वमेव माता
तू माझी माउली

विश्व: योनि:

विश्व की
माताजी

२ मार्च १९७४

भक्तों की रक्षा के लिये
बारंबार
अवतार लेने वाले।

3 मार्च 1974
उपेन्द्र
इंद्र का छोटा भाई
भगवान इतने नम्र हैं
कि जरूरत पडने पर
किसी के छोटे भाई भी
बन सकते हैं।
छोटेलाल जी

4 मार्च 1974

वामनः

भगवान् का पांचवां अवतार

वामन = छोटा रूप
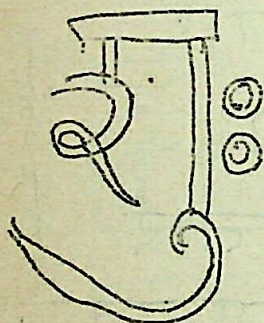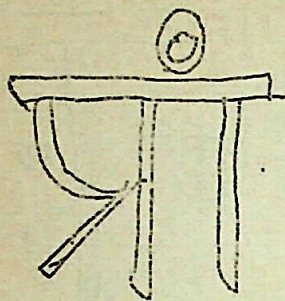
५ मार्च 1974
प्रांशुः
= सबसे ऊँचा
पहले का नाम 'वामन'
उससे उलटा
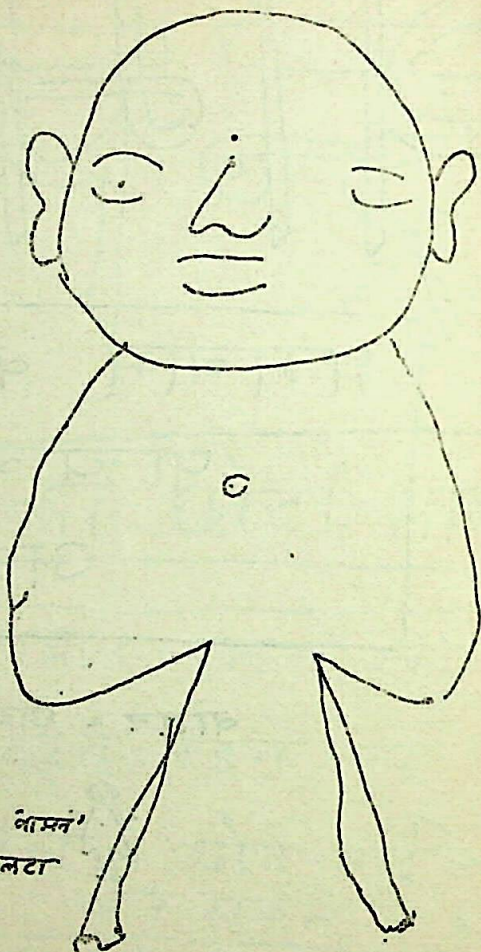
6 मार्च 1974

अ-मोघः

भगवान् का
आशीर्वाद
कभी
व्यर्थ
नही जाता ।

लेकिन उसके लिये भक्त को
अपना जीवन शुध्द करना पडेगा।
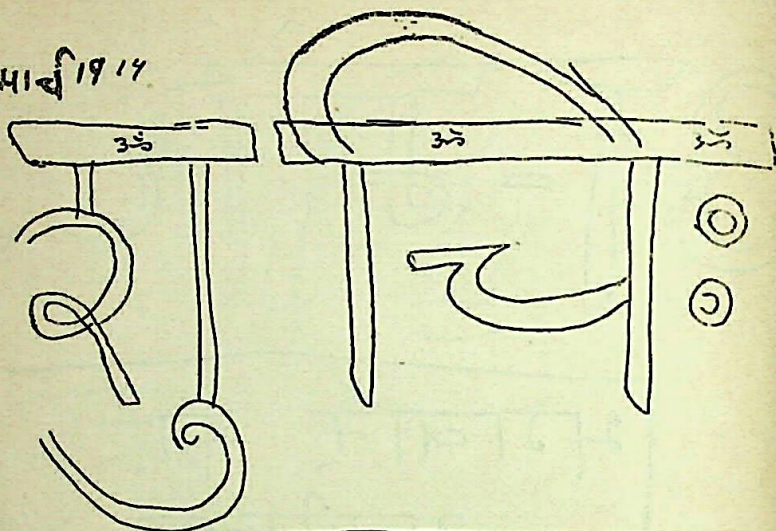
7 मार्च 1914
ॐ ॐ ॐ
शुचि
भगवान
स्वच्छ
निर्मल
पवित्र हैं।
भक्तों को भी
वैसा होने की
कोशिश करनी चाहिये।

ॐ
8 मार्च 1978
अजित:
= तेजस्वी
बलशाली
उदात्त
स्फूरतियुक्त
भगवान की भक्ति का
नाटक करने वाला
कैसा होना चाहिये?

२ मार्च 1975

अतीन्द्रः

इंद्र से भी बढ़कर
पराक्रम
करने वाले।

इंद्र बहुत हुआ तो
स्वर्ग देगा।
भगवान मोक्ष दे सकते हैं।

10 मार्च 1974

प्रलय काल में
भगवान्
सब को
अपने पास बुला लेते हैं।

फिर क्या करते हैं?
आगे के नाम में
बताया जायगा॥

11 मार्च 1975

प्रलय के बाद
फिरसे उत्पत्ति करके.
स्त्री शक्ति- संमेलन के
लिये प्रवृत्त करते हैं

और भी
जिस को जो गोरख धंदा
करना हो
वह करने के लिये
अनुमति देते हैं।

12 मार्च 1974

13 मार्च १९७५
नियमः
भगवान् की सृष्टि में
सूर्य, चंद्र, ग्रह, नक्षत्र
सब अत्यंत नियम-पूर्वक
चलते हैं
माताजी को भी वैसे ही
नियमपूर्वक
चलना पडता ||

१५-मार्च १९७५

यम:
भगवान् अंदरसे सबका
नियमन करते हैं।
भक्तों के लिये
अहिंसा-सत्य-अस्तेय-
ब्रह्मचर्य-असंग्रह
ये पांच 'यम' कहलाते हैं
इनका उत्तम पालन किया जाय।
नहीं तो, 'यम' के दरबार में॥
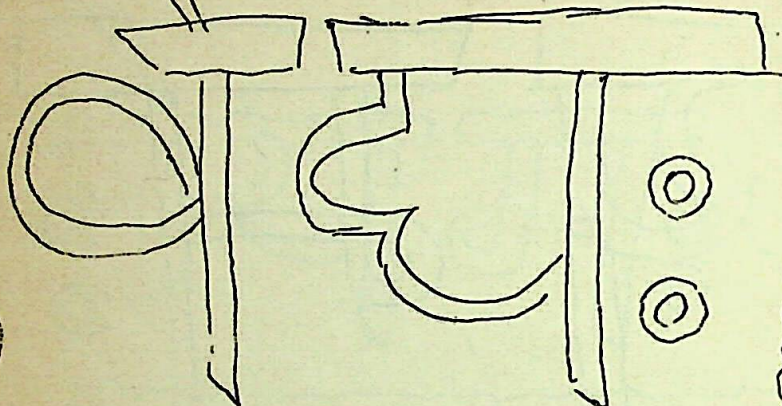
15 मार्च 1975
बोध
जानने योग्य
हम पचासों चीजें
जानते हैं।
लेकिन, कमबख्त
भगवान को ही भूल जाते हैं

16 मार्च 1974

वैद्यः
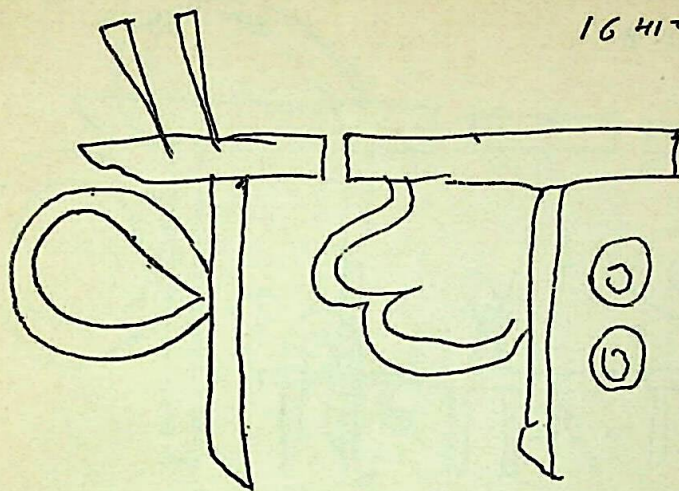
(१) वैद्य = विद्यावान्, ज्ञान दाता ।

(२) वैद्य = हकीम, औषध-दाता ॥

17 मार्च 1974

भगवान सदा
योग से
मग्न रहते हैं।

भक्त को भी योगी बनना चाहिये।
नहीं तो वह रोगी बनेगा।
'य' के बाद 'र' आता है।
या योगी, या रोगी॥

18 मार्च 1974

वीरहा

= वि + ईर + हा

भक्तों की
विविध प्रेरणाएं
- यूं करूं वूं करूं -
भगवान् खतम कर देता है

फिर, भक्त एकाग्र होकर
भगवान् के ध्यान मे
लग जाता है ॥
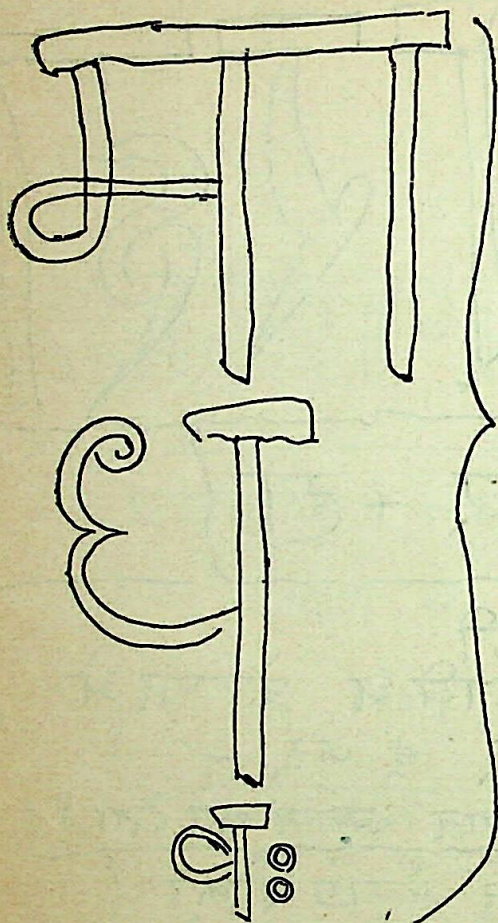
१९ मार्च १९७५
मधु
मधुविद्या से
यानी
ब्रह्मविद्या से
भगवान् का
साक्षात्कार
होता है ॥
इस लिये
ब्रह्मविद्या मांदे रमे
रहणो पड़सी!
ॐ

20 मार्च 1974
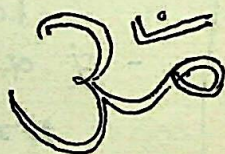
मधु वाता ऋतायते
मधु क्षरान्ति सिंधव.
माध्वीर् न संतु ओषधी

मधु

मधु नक्तमुतोषसो
मधुमत् पार्थिवं रज
मधु द्यौरस्तु नः पिता

मधुमान्नो वनस्पति.
मधुमान अस्तु सूर्य
माध्वीर् गावो भवन्तु न.

भगवान् बहुत मीठे हैं।
जैसे, शहद
जैसे गुड
जैसे, गाय का दूध

माताजी के लिये

२१ मार्च १९७४.
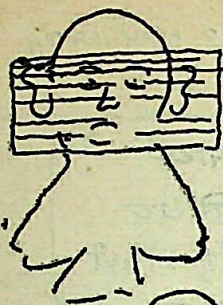
अतींद्रियः

भगवान्
इंद्रियांच्या पलीकडे।

म्हणून भक्ताने हि इंद्रिये
आवरलीं पाहिजेत ॥

२२ मार्च १९७४

माझी ही त्रिगुणी दैवी
माया न तरवे कुणा
कासे: लागले माझ्या
ते चि जाती तरूनियां ॥
— गीताई

महामाया

भगवान्
महा-मायावी है।

भगवद्-भक्ति से ही
माया-तरण होगा

23 मार्च 1974

वैसे ही भक्तों को भी
निरंतर कार्य करते हुअे
अुत्साह में कभी
कमी नहीं होने देनी
चाहिये ॥

महोत्साहः

भगवान् निरंतर
कार्य करते
रहते हैं।
फिर भी अुनके अुत्साह में
कभी कमी नहीं होती ॥

२५ मार्च १९७५

महा-बलः
भगवान् अत्यंत
बलवान हैं—
हम भक्त तो
बहुत सारे
निर्-बल होते हैं
लेकिन, "सुनेरी मैं ने
निर्बल के बल राम"

25 मार्च 1974

भगवान् की
अद्भुत बुद्धि का
हमको आकलन होना
संभव नहीं।

इसलिये
हम तो यह प्रारथना करेंगे—

युक्ति नाहीं बुद्धि नाहीं
विद्या नाहीं विवेकिता
तेणता भक्त मी तूझा
बुद्धि दे रघुनायका
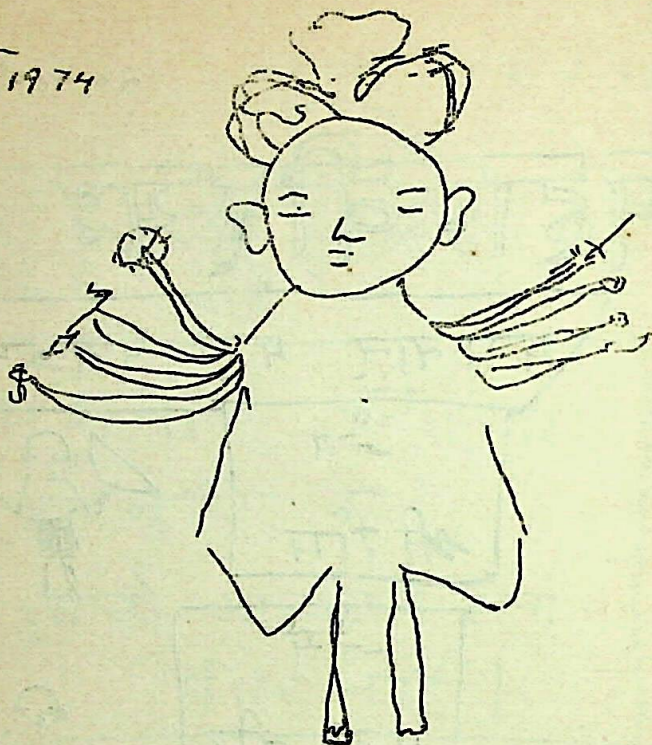
26 मार्च 1974

महा-शक्तिः

भगवान् महा-शक्ति
काली के रूप में
विश्व की रक्षा
- करते हैं

२४ मार्च १९७५

महा-द्युति:

भगवान् अत्यंत तेजस्वी क्रांति-पुरुष।

29 मार्च 1974

भगवान् की मूरतें
अपनी अपनी
कल्पना की होती है

अनिर्देश्य - वपुः

भगवान् का रूप
कैसा है
कोई नहीं कह सकते
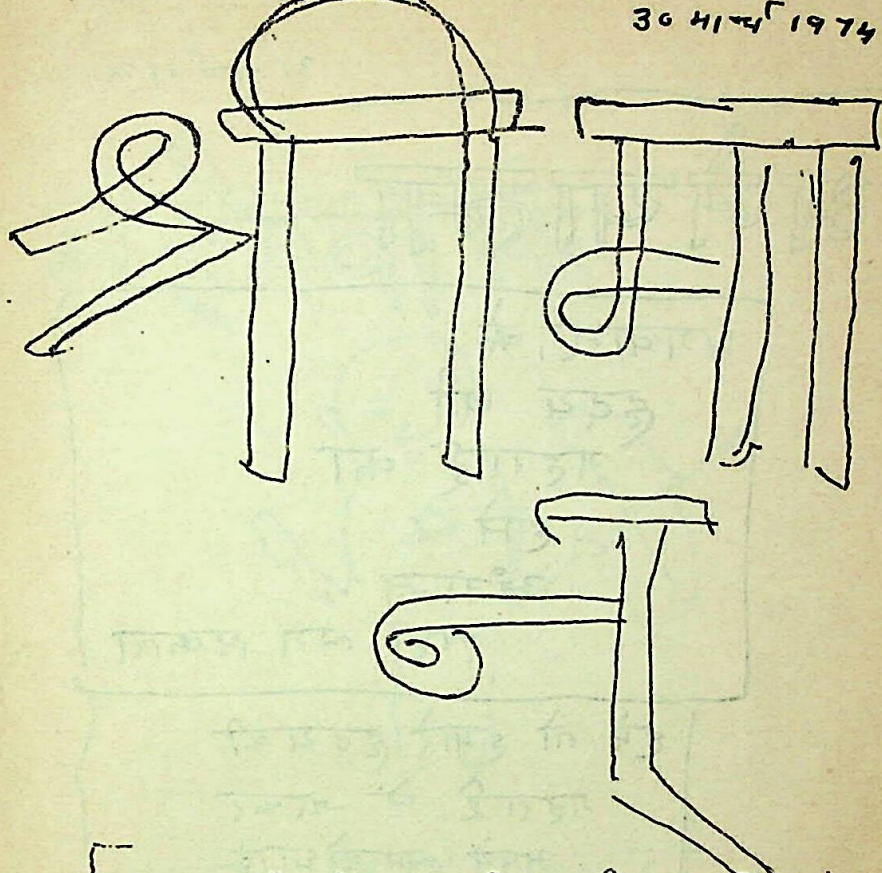
30 मार्च 1974

'श्री' यानी शोभा, कांति, लक्ष्मी, सब कुछ।
माताजी के – "माला श्रीमान्',
जो 'श्रीमन्नो' कहलाते हैं,
उनका नाम विष्णुसहस्रनाममें चार दफा आया है।
धन्य माताजी!

31 मार्च 1975

अमेयात्मा

भगवान् के
हृदय की
गहराई का
हमें
अंदाज
नहीं लग सकता

हमें तो हमारे हृदय की
गहराई में जाकर
अपने काम क्रोधादि
विकारों का
शोधन
करना चाहिये

2 अप्रैल 1974
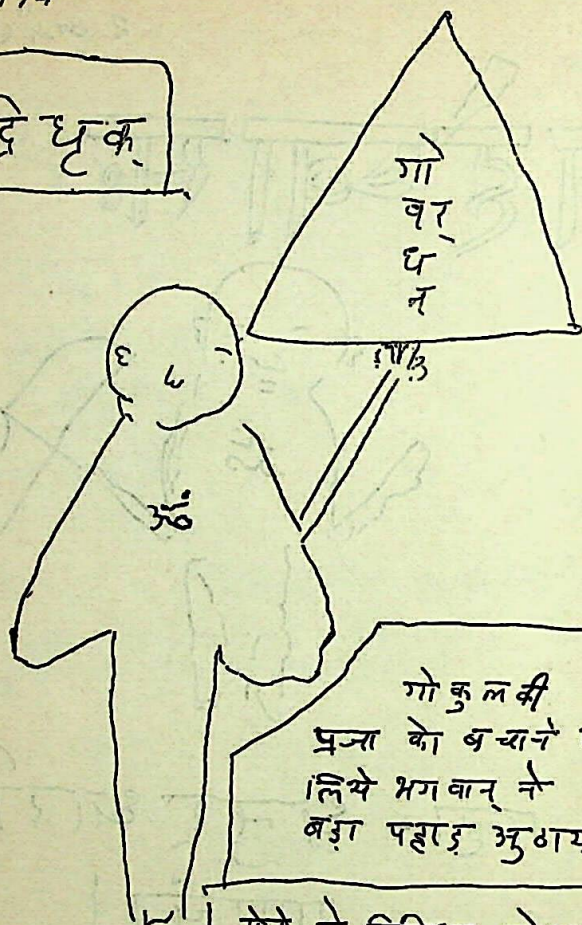
1 अप्रैल 1974
महाद्रिधृक्
गोवर्धन
ॐ
गोकुल की प्रजा को बचाने के लिये भगवान् ने बड़ा पहाड़ उठाया
मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरा न कोई.

3 अप्रैल 1974
मही-
भरता
पृथ्वी का
भरण करने वाला
भगवान्

4 अप्रैल 1977

श्री-निवासः

श्री, याने लक्ष्मी,
जिनके पास
रहती है।
वे भगवान्
लक्ष्मी-नारायण

5 अप्रैल 1974
सतां गतिः
सज्जनों का
ऐकत्र मिलने का
स्थान
भगवान्

6 अप्रैल 1975

अनिरुद्धः

भगवान्,
जिन को
कोई भी
नहीं
रोक
सकता

7. अप्रैल 1974

सुरानंदः

"सु-र उत्तम दान देने वालों को 'सुर' कहते हैं।

'देव' यह दूसरा अरथ होता है। देने वालों को 'देव' कहते हैं।

देवों को आनंद देने वाले भगवान

8 अप्रैल 1975
गो-
विंद:
खोई हुई
गायों को
खोज निकालने वाला
माताजी का दोस्त

१ अप्रैल 1975
गोविंदां
पतिः
गायों को
खोजने वालों में
सर्व-श्रेष्ठ
भगवान
कृष्ण
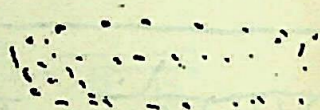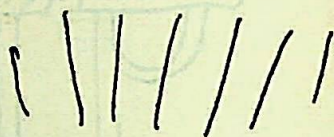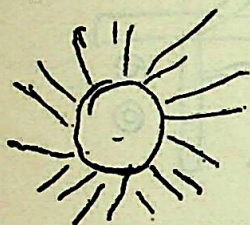
10 अप्रैल 1974
मरीचिः
सूर्य-किरणों द्वारा
बारिश बरसा कर
सब को
सुखी करने वाले
भगवान्

11 अप्रैल 1975

दमनः

भगवान्
राक्षसों का
दमन करता है

हमारे चित्तमें भी
काम-क्रोधादि अनेक राक्षस
निवास करते हैं।
अुन का दमन
भक्ति और वैराग्यसे
हमे करना चाहिये ॥

12 अप्रैल 1974

ॐ

हंसः

हन्ति संसार-भयम्

दूर करता है
संसार-भय
भगवान

आज से डरो मत

13 अगस्त 1974
सुपर्ण:
भगवान्
अुत्तम पंखवाला
पक्षी
गगन-विहारी
सब जगह
अुड़ता रहता है
लेकिन अुस को कोई देखते नहीं
हरि हरि!

14 अप्रैल 1974
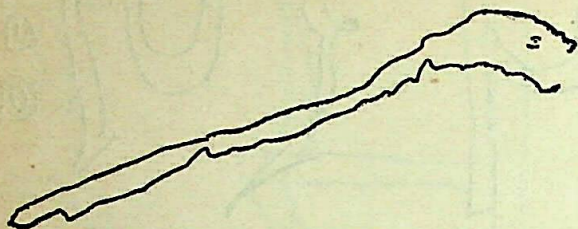
भुजङ्गोत्तमः

भगवान्

उत्तम सर्प

शेष-नाग

सांपों को मारना नहीं चाहिये
वे खेती की बहुत सेवा करते हैं

15 अप्रैल 1974
ॐ
* कोटि-कोटि..
तोले सोना!
हिरण्य — नाभः
जिस के
नाभि में
कोटि कोटि-कोटि···तोले
सुवरण है।
माताजी! आपको जितना चाहिये
ले लीजिये

भगवान्
भक्तों के रक्षण के लिये
उत्तम तपश्चर्या
करते हैं

भक्तो को भी
भगवान् के दर्शन के लिये
उत्तम तपश्चर्या
करनी होगी

17 अप्रैल 1975
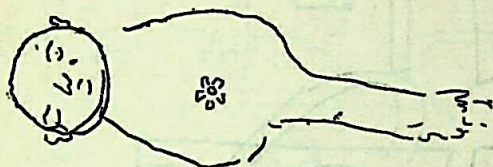
18 अप्रैल 1975

प्रजा-पतिः

भगवान् विश्व की
सब प्रजाओं के पति हैं

अपने राष्ट्र-पति
पांच पांच साल के
लिये चुने जाते हैं।

भगवान् कायम के लिये हैं

भगवान् को
मृत्यु छू नहीं सकता

हम को भी
मृत्यु छूता नहीं।
केवल हमारे शरीर को
छूता है।

20 अप्रैल 1975

सावधान
कौन पुण्य करता है
कौन पाप करता है
भगवान सतत देखता रहता है
इसलिये हम को
सतत सावधान रहना चाहिये
खबरदार !

२१. अप्रैल 1974
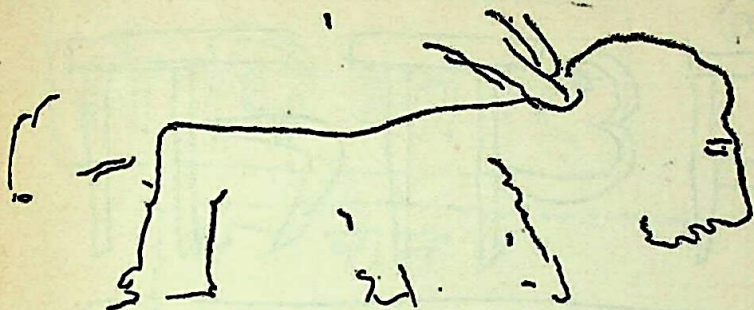
सिंह

भगवान् महा-पराक्रमी
जैसे जंगलमे सिंह ।

लेकिन, भक्तो को डरने का
कारण नहीं ।
भक्तों के लिये तो
वे गाय ही बन जाते हैं ।

22 अप्रैल 1974

23 अप्रैल 1975.

भगवान्

भक्तों के साथ

स्वयं भी

जुड़ जाता है।

31 मार्च 1975

सत्य रः
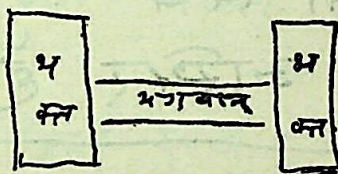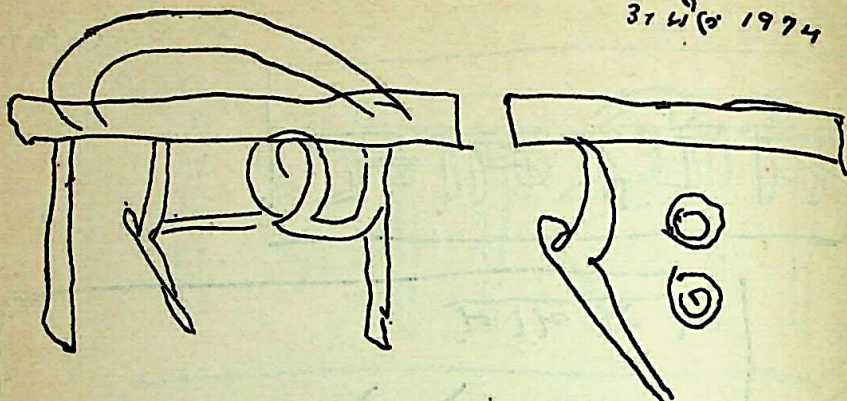
भगवान्
स्थिर हैं।

बाकी सब
अस्थिर है

इस लिये अस्थिर वस्तु की
आसक्ति रखनी
नहीं चाहिये

२६ अप्रैल 1974
अजः
= सतत घूमने वाला
भगवान् भक्त-रक्षा के लिये
निरंतर सब दूर घूमते रहते हैं
अुनको देखने के लिये
आंख खोलनी पडती

२७ अप्रैल १९७५

दुरमारषण॥

भगवान

जिनका हमला

दुर्जनों पर

जोरदार

होता है।

उसका मुकाबला

कोई नहीं

कर सकता

सावधान!

28 अप्रैल 1974

शास्ता

यानी — शासन करने वाला

'शासन' के दो अर्थ होते हैं:—

1. शिक्षा करना.
2. शिक्षण देना

भगवान दोनों करता है, जिस को जिसकी जरूरत

माताजी को क्या जरूरत है?

२१ अप्रैल १९७५

विश्रुतात्मा

भगवान् का
नाम सब लोगोंने
सुना है

फिर भी
हम बेवक़ूफ़
भूल जाते हैं

30 अप्रैल 1974

सुरारिहा

= सु + र + अरि + हा

सु = अुत्तम
र = देनेवाले
(वे) 'सुर' यानी 'देव'
कहलाते है

अुनके 'अरि' यानी शत्रु
वे 'राक्षस' कहलाते हैं

अुन राक्षसों को
यानी 'रखनेवाले'
कंजूसों को

हा = मारनेवाला।
भगवान् मारता है

मेरी मां कहती थी जो देते हैं वे देव
जो रखते हैं वे राक्षस

1 मई 1974
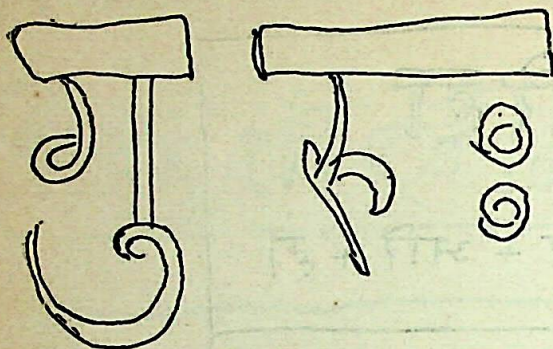
सरव-वीद्याओ के
सिखाने वाले
भगवान्

लोग नाहक स्कूलों में जाके
समय बरबाद करते हैं

भगवान् से सब विद्याऐं
खेत में काम करनेवाले
भक्त को मिल सकती है।

2 मे 1974

सरवोत्तम
ब्रह्मविद्या
जिससे मनुष्य को
मुक्ति मिल सकती है,

वह सिखाने वाले
सरवोत्तम गुरु
भगवान हैं।

उनकी शरण में जाना

3 मै 1994

भक्तों को रहने के
लिये उत्तम धाम
— परं धाम
— भगवान्

म्हाने चाकर राखो जी!
चाकर रहशां बाग लगाशां
नित उठ दरशन पाशां
परं धाम की कुंज-गालिन में
गोविंद-लीला गाशां

4 मे- 1974

सत्यः

भगवान्
सत्य-स्वरूप हैं

झूठ जरा भी
सहन नहीं करते

अब व्यापार कैसे
चलेगा-
देख लीजिये

5 मे 1974

सत्य - पराक्रमः

भगवान् का पराक्रम
कभी मिथ्या नहीं
हो सकता

चाहे कितने भी संकट
उपस्थित हों

भक्तों को भी कभी
हिंमत नहीं हारनी चाहिये

6 मे. 1975
निमिषः
भगवान कभी कभी
आँख बंद करके
समाधिस्थ
रहते हैं
तो भक्तो की
परीक्षा
होती है

7 मे 1975.

अ-निमिष

भगवान कभी कभी
आंख खोल करके
देखते हैं

हमारे भक्त
परं धाम में
सामूहिक साधना
किस तरह करते है
यह देखने के लिये

8 मे 1974
स्त्रग्वी
भगवान् गलेमे
'वैजयंती' नामकी
माला धारण
करते हैं
अुस माला में अनेक
पुष्प हैं
जैसे
१ लल्ला - कश्मीर
२ मीरा - राजस्थान गुजरात
३ मुक्ता - महाराष्ट्र
४ अक्का - करनाटक
५ आँडाळ - तमिळ नाडु

९ मे 1974

वाचस्पतिरुदारधीः

भगवान्

सर्व विद्याओं के

स्वामी हैं

और

उदार बुध्दीवाले भी हैं

जो चाहे सो मांगलो
लेकिन
अक्कल रख के

10 मे 1974
अग्रणीः
भगवान्
सज्जनों के
आगे आगे
चलता है
और कहता है -
जो घर फूंके आपना
चलो हमारे साथ

११ मे १९७५

भगवान्
गांव का नेतृत्व
करने के लिये
तैयार हैं।

हर अेक गाव समझ बूझ कर
ग्रामदान में आ जाय,
तो
भगवत्-कृपासे वहां
किसी चीज़ की
कमी नहीं रहेगी

12 मे 1974

'श्रीमान्' शब्द
विष्णुसहस्रनाम में
यह तीसरी बार
आया है
और अेक दफा आअेगा।

श्री = लक्ष्मी
शक्ति
सरस्वती
} तीनों

ग्रामदानी गाँव में
भगवत् कृपा से
भरपूर रहेंगे।

13 मे 1974

भगवान् ने शास्त्र
बनाये

तदनुसार वह न्याय
देता है ।

बबूर बोअेंगे तो
बबूर मिलेंगे

आम बोअेंगे तो आम

यह है न्याय
अब जो चाहो, करो

14 मे 1974
नेता
भगवान् भक्त को
परंधाम की तरफ
ले जाता है
नेता = ले जाने वाला
भक्त को
चिंता कोनी

15 मे 1974

समीरणः

भगवान्

उत्तम प्रेरणा
देने वाला।

बाहर

वायु के रूप में

अंदर

श्वास के रूपमें
यानी
प्राण के रूपमें

16 मे 1974

सहस्र - मूरधा
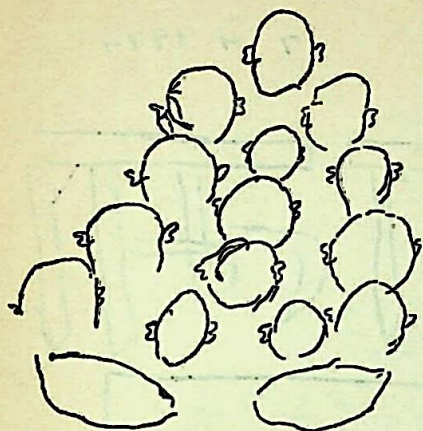
भगवान्

हजारों मस्तकवाले

(फिर भी हम नहीं देखते हैं तो भगवान का क्या दोष ?)

17 मे 1974

विश्वात्मा

भगवान्
विश्व में
भरा हुआ है

इस लिये
अब, "जय हिंद", "जय भारत"
नहीं चलेगा

अब केवल
"जय जगत"

18 मे 1974
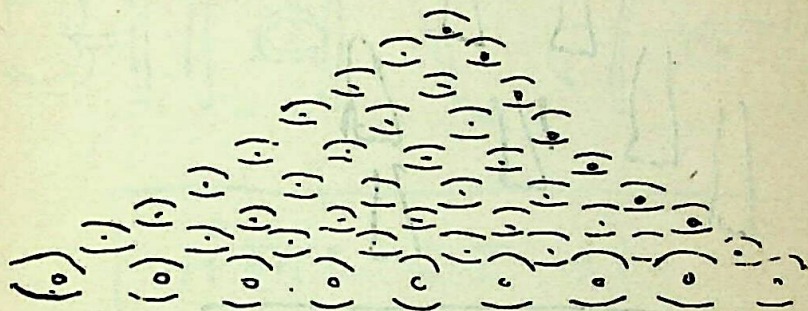
19 मे 1974
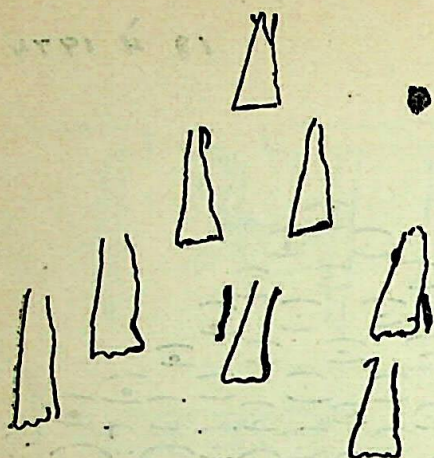
सहस्र-पात

हजारों पांव वाला
भगवान्

भक्तों से मिलने के लिये
सब दूर जाता आता
रहता है

२० मे 1974

२१ मे 1974

भगवान्
हमेशा
"निवृत्त"
यानी
"समाधिस्थ"
रहते हैं।

हम को भी
समाधि का
अभ्यास
करना चाहिये

२२ मे 1974

संकेत

भगवान
माया से
ढंका हुआ है।

माया का आवरण
निकालना पड़ेगा।
तब
भगवान के दर्शन होंगे

उसके लिये
माता जी !
बहुत परिश्रम करना पड़ती

२३ मे १९७५

संप्रमारदनः

भगवान्
रुद्र-कालादि रूप लेकर
सब को
खूब ठोकते पीटते हैं।

इस लिये हम को
सदा
सावधान
रहणो पडसी

24 मे 1975

अर्हः -

संवर्तकः

दिवस बनानेवाला

भगवान् सूर्यरूप
धारण कर के
दिवस प्रकाशित
करते हैं

इसी लिये हमारे काम बनते हैं
नहीं तो २४ घंटे लेटे
रहना पड़ता
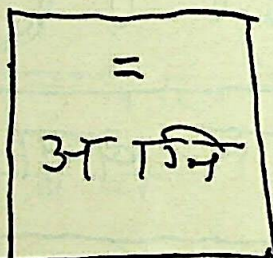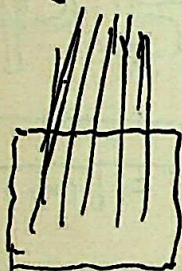
25 मे 1974
वह्निः
=
अग्नि
भगवान् यज्ञ के लिये
होमकुंड में अग्निरूप बनते हैं
सिगड़ी के लिये
चूल्हे में आ जाते हैं
भगवान् की
कितनी कृपा !

26 मे 1974
अनिलः
भगवान
सृष्टि में
वायुरूप
शरीर में
प्राणरूप

27 मे 1974

धरणी - धारु

भगवान्
पहाड़
परवत
टीले भी
बनता है

फिर अुसमें से
नदियां बहना
शुरु होता है

फिर, अनाज की कमी नहीं रहेगी

लेकिन श्रम करणो पडसी

माताजी तैयार है ?

२४ मे १९७५

सु-प्रसादः

भगवान्

अपकार करने वालों को भी
मोक्ष देते हैं

जैसे, रावण, कंस आदि
द्वेष करने वालों को भी
मोक्ष दे दिया

कैसा है उनका
सुंदर प्रसार!

२९ मे 1974

प्रसन्नात्मा
रजोगुण और तमोगुण से
पूरणतया मुक्त
केवल शुध्द सत्त्वगुण से
परिपूरण
इस लिये
सदा सुप्रसन्न
भगवान् हमेशा
हंसते रहते हैं

30 मे 1974

छत्रक

भगवान्
विश्व को
धारण किये हुए हैं

फिर,
हम काहे बोझ उठाएं?

31 मे 1975

विश्व-भुक्

भगवान्
विश्वका
पालन करता है

और फिर
विश्व को
खा भी जाता है
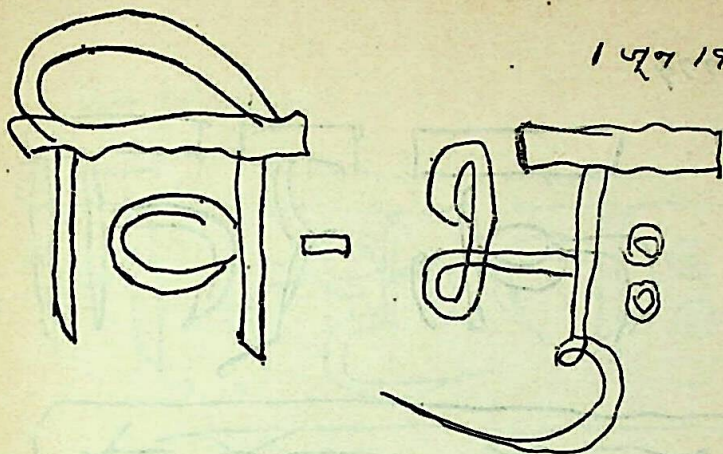
1.7.1974
वि-भुः
भगवान
विविध रूप
धारण
करते हैं।
और
दुनियामें
सब दूर,
फैले जाते हैं
फिर भी
हम अंधे
देख नही पाते!

२ जून 1974

सत्करता

सत्कार करने वाले
भगवान्

भगवान् सब का
सत्कार करते हैं

मिश्री का टुकड़ा
हर अेक को
देते हैं!

3 जून 1974

सत्कृतः

क्यों कि, भगवान् सब का
सत्कार करते हैं

इसलिये,
सब लोग
भगवान का
सत्कार करते हैं

पूजा, अर्चा आरति
भगवान् की
परंधाममें
चलती है

४ जून १९७४

साधुः

भगवान् हर अेक कार्य न्यायपूर्वक करते हैं।

इसलिये वे सर्वश्रेष्ठ साधु हैं

हम को भी न्यायपूर्वक व्यवहार करना चाहिये

नहीं तो मार खाअेंगे

5 जून 1974

जह्नुः

सब को
अपने
प्रेम से
ढाकने वाला

'जह्नु' भगवान् की
कन्या 'जाह्नवी'
गंगा कहलाती हैं

6 जून 1974

नारायणः
नर समूह
यानी
'समाज'
को
देवता
नारायण
हमें समाज को निरंतर
सेवा करते रहना चाहिये
खास करके, दरिद्र-नारायण को

7 जून 1975

नर
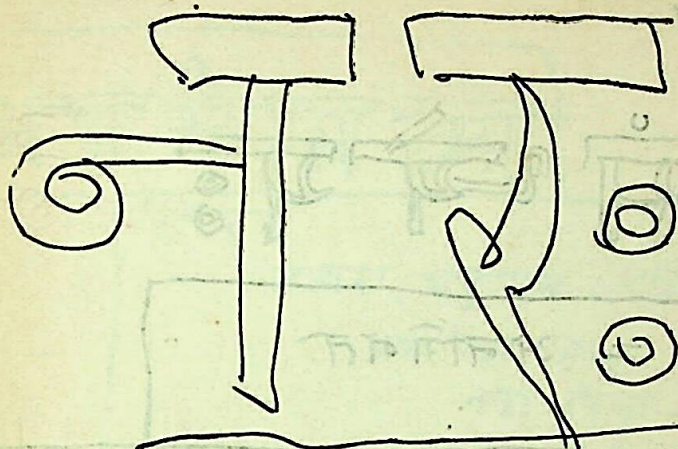
नारायण = समाजरूप
नर = व्यक्तिरूप

हर अेक व्यक्ति में
भगवान् ने
प्रवेश किया है

8 जून 1995

असंख्येयः

= अनगिनत

भगवान ने विश्व में
कितने रूप
धारण किये हैं?

करो गिनती ——
कोटि - कोटि - कोटि - कोटि -
कोटि - कोटि - कोटि -
कोटि - कोटि ——
कोटि ------- -

९ ५-७ १९७५

अप्रमेयात्मा

भगवान्

प्रत्यक्ष, अनुमान आदि
प्रमाणोंसे सिध्द
नहीं किया जासकता

वह स्वयं-प्रमाण है

उस को मानना है.
तो मानो

नहीं तो
गढेमें गिरो
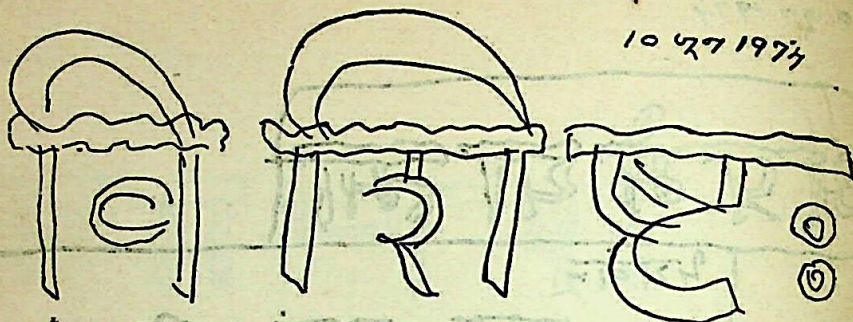
10 फर 1975
विशिष्ट
सब शिष्टों में
सज्जनों में
सर्व-श्रेष्ठ
सबसे ऊंचे
अब वहां तक हम
कैसे पहुंचेंगे
कल सोच करके आना

11 जून 1974

शिष्ट-कृत

अ-शिष्टों को
शिष्ट बनाता है
शिष्टों का
पालन करता है।
भगवान्

तो
हम को कमसे कम,
भक्ति तो करनी चाहिये
कि नहीं?
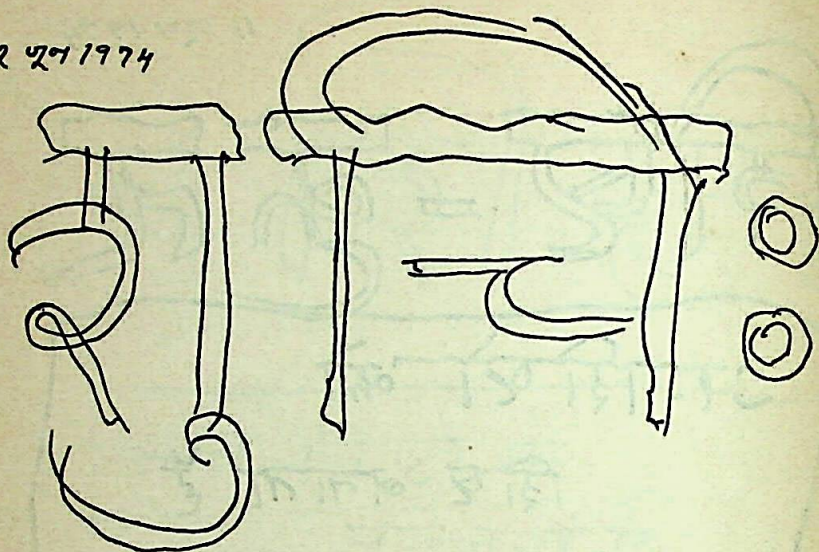
12 जून 1974

13 जून 1977
सिध्दारथः
१
जिस को प्राप्त करने का
कुछ भी शेष नहीं है
जो कृत कृत्य है
२
गौतम बुध्द का नाम
सिध्दार्थ था।
अुस का सहज स्मरण
यहां हो जाता है

14 जून 1974

सिध्द-संकल्प:

भगवान् को अपने चित्तमें कोई संकल्प करना ही नहीं पड़ता

संकल्प करने के पहले ही वह सिध्द हो जाता है

15 जून 1974

सिद्धि-दः

सिद्धि = करम फल-सिद्धि

काम करनेका अधिकार
भक्तों का।

फल-सिद्धि
भगवान् के
हाथ में

लेकिन् कर्मानुसार फल देने में
वह चूकता नहीं

16 जून 1977

सिद्धि — साधनः

भगवत्-कृपासे भक्तों को
सर्व सिद्धियां हासिल
हो सकती हैं।

लेकिन

भक्त सिद्धियां चाहते ही नहीं!

अष्ट महा-सिद्धि आंगणीये रे ऊभी
मुक्ति छे एमनी दासी रे

17 जून 1974

वृषाह्नी

वृष = पुण्य
अह् = दिन

भगवान् की स्मृति में
अनेक पुण्य दिन
मनाये जाते हैं।

जैसे
रामनवमी
कृष्णाष्टमी
महाशिवरात्रि
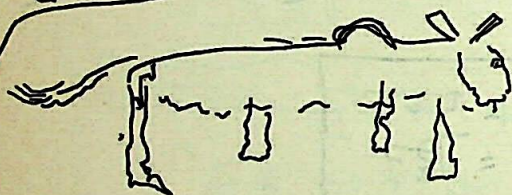
18 जून 1975
वृषभः
धर्म रूप बैल
खेती पर मलमूत्रादि की वर्षा करने वाला
भक्तों पर शुभकामनाओं की वर्षा करने वाला

19 जून 1974

२० जून 1974
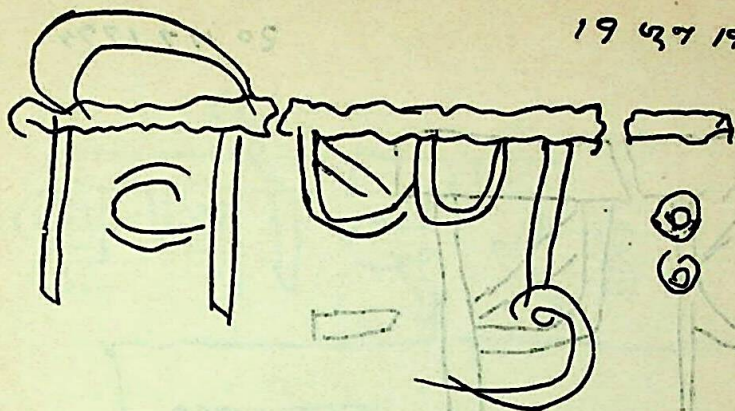
परं धाम चढ़ने की
इच्छा रखने वालों के लिये
भगवान्
धरम की सीढ़िया
बन जाते हैं ।

२१ जून १९७५

२२ जून 1974
वर्धमानः
= बढ़ाने वाला
सब को भगवान
बढ़ाता जाता है
पेड़ों को
पक्षियों को
पशुओं को
मनुष्यों को
और
माताजी को भी

२७ जून 1974

वरधमान
१
भगवान प्रति-क्षण
बढ़ता जा रहा है
वैसे,
हम को भी
बढ़ते जाना चाहिये
"शतं जीव शरदो वरधमान:"
(सौ साल बढ़ते जाओ)
अैसा आशीरवाद दिया जाता है
२
जैनों के चोवीसवें तीरथंकर
महावीर का नाम 'वरधमान' था।
अुनकी २५००वीं
पुण्य-शताब्दी इस साल
मनाई जा रही है

२२ ५-७ /1974
वर्धानः
= बढ़ाने वाला
सब को भगवान
बढ़ाता जाता है
पेड़ों को
पक्षियों को
पशुओं को
मनुष्यों को
और
माताजी को भी

23 जून 1975

वर्धमान

1. भगवान प्रति-क्षण
बढ़ता जा रहा है

वैसे,
हम को भी
बढ़ते जाना चाहिये

"शतं जीव शरदो वर्धमानः"
(सौ साल बढ़ते जाओ)
अैसा आशीर्वाद दिया जाता है

2. जैनों के चोवीसवें तीर्थंकर
महावीर का नाम 'वर्धमान' था।

अुनकी 2500वीं
पुण्य-शताब्दी इस साल
मनाई जा रही है

२५ ५.७.१९७५
विविक्तः
= अलग रहने वाला
भगवान् सबके साथ
बढ़ता जाता है
(वरधमान)
वैसे
अलग भी रह जाता है
हम को भी
दिन में सब के साथ काम करना चाहिये
और
रात को अलग होकर एकांत में
ध्यान-चिंतन मे लग जाना चाहिये

25 जून 1975
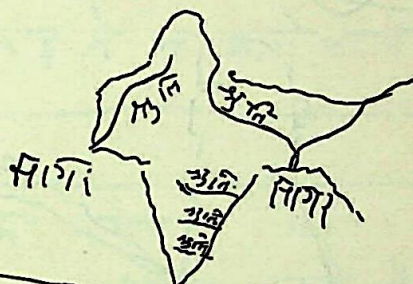
श्रुति-सागरः
सागर
सागर
जैसे सब नदियां समुद्रमें
पहुंच जाती हैं,
वैसे सब श्रुतियां (यानी वेदमंत्र)
भगवान का ही
गुणगान
करती हैं

२६ जून 1974

27 जून 1975

हम भगवान का
ध्यान करने बैठते हैं
लेकिन
वे पकड़ में नहीं आते
फिर भी
ध्यान की कोशिश
निरंतर जारी रखनी चाहिये
हार नहीं खानी चाहिये

२४ जून 1974

वाग्मी

= वक्ता

वेदवाणी जिनके
मुख से निकली
उनसे बढ़ कर वक्ता
कौन हो सकते हैं?

हम को तो श्रोता
बनना चाहिये

29 ५ 7 1974

महेंद्र:

सरवश्रेष्ठ देवता
इंद्र
जिस की कृपा से
परजन्य बरसता है

अुस इंद्र से भी
श्रेष्ठ
भगवान
जिनकी आज्ञा से
इंद्र काम करता है ॥

३० ५ ७ १९७५
वसुः
= धन देनेवाला
भगवान भक्त को
धन देते हैं
लेकिन
कितना देंगे?
आज के लिये आज
और
कल के लिये कल

1 जुलै 1974

वसु
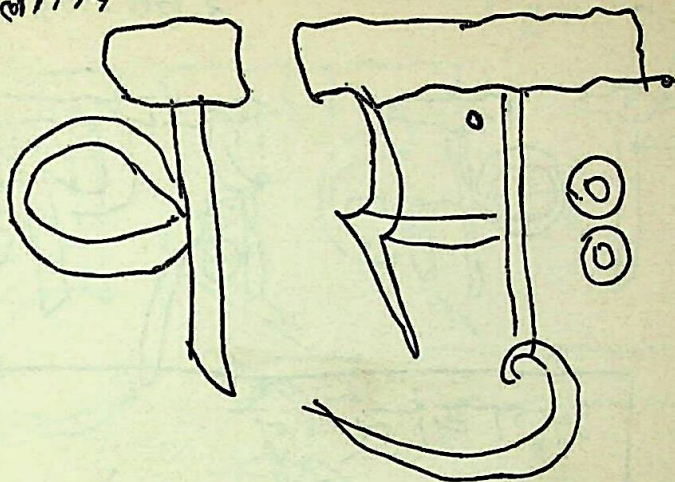
भगवान
भक्तों के लिये
निवास-स्थान

महाराष्ट्र-बंगाल इत्यादि
प्रांतों में 'वसु'-आदि नाम
रखा जाता है

2 जुलाई 1974

नैक-रूपः

भगवान् ने
अपनी माया से
अनेक रूप
धारण
किये हैं

ये सब रूप हमारी आँख के सामने
खड़े हैं

हम देखना सीखें

3 जुलै 1975

बृहद्-रूपः

भगवान् ने
बहुत बड़ा
विशाल रूप भी
धारण
किया है

लेकिन भक्तों को
घबड़ाने की जरूरत नहीं
अगर भक्ति हो तो

४ जुलै १९७५
शिपि-विष्ट:
शिपि = किरण
भगवान ने अपने को
ढंकने के लिये
किरण ओढ़ लिये ?
लेकिन
ढंकने के बजाय
वह सब की आंखों के सामने
प्रगट हो गया ।
फिर भी माताजी
वह ढंका ही हुआ है न ?

5 जुलाई 1974
प्रकाशन
सब दूर
प्रकाश
फैलाने वाले
हम सोते रहेंगे तो
बिचारा क्या करेगा?

6 जुलाई 1975

ओजस्-तेजो-द्युति-धरः

(१) स्नेह की आकरषण-शक्ति

(२) करमयोग की प्रखरता

(३) ज्ञान-विज्ञान की प्रभा

तीनों धारण
करने वाले
भगवान्

हम को भी
यथाशक्ति
यथामति
इन तीनों के लिये
प्रयत्न करते रहना चाहिये

फलदाता तो-
भगवान् है ही

7 जुलै 1974

प्रकाशात्मा

भगवान् प्रकाश ही है

भगवान् ही
प्रकाश है

भगवान् के अलावा
बाकी जो कुछ दिखता है
वह सब अंधेरा है

(हम अंधेरे में गोते खा रहे हैं
प्रभु हमें बचाओ)

8 जुलै 1974

प्रतापनः

= तपाने वाले

भगवान
सब को
तपाते हैं

सज्जनों को
दुर्जनों को
सब को

अुससे सज्जनों की
सज्जनता
निखरती है

दुरजनों की
दुर्जनता
खतम होती है

१ जुलै 1974

अहूः

= भरपूर, भरा हुआ

भगवान
ज्ञान
वैराग्य
और दैवी संपत्ति से
भरपूर, भरा हुआ है

खोद खोद करके चाहे जितना
हासिल कर लो

10 जुलै 1974

स्पष्टाक्षरः

= ॐ

स्पष्ट उच्चारण करके
-ऊंचे से बोला जाने वाला-
ओंकार
भगवान् का रूप है

इसी लिये माताजी की अेक लड़की का नाम
'ओम्' रखा है न?
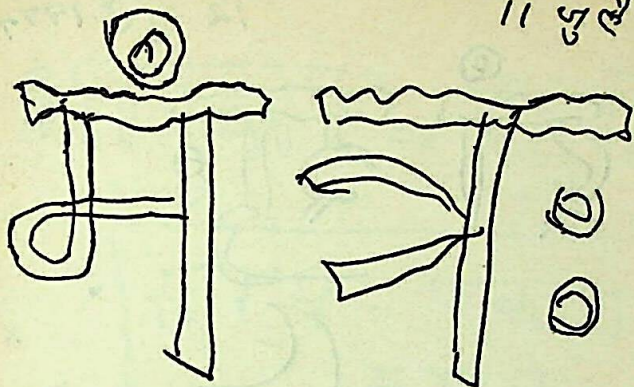
11 जुलै 1974
मंत्रः
१ चारों वेदों के मंत्र
२ वेद-सार गायत्री मंत्र
३ गीतोक्त ॐ तत्सत् मंत्र
४ 'राम- कृष्ण- हरि'
इत्यादि
संतों के सिखाये हुओ मंत्र
इन मंत्रों से मनन करने पर
भक्तों को भगवान् का
साक्षात्कार होता है।
जय जगत
बाबा का मंत्र

12 जुलै 1975

चंद्रांशुः
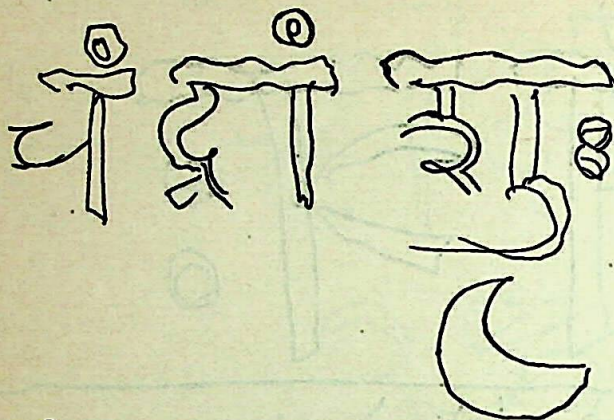
चंद्र-किरण के
समान
तप्त हृदय को
शीतल करनेवाले
भगवान्

13 जुलै 1974

भास्कर-द्युतिः

सूर्य-प्रकाश के
समान
बुद्धि को
ज्ञान देने वाले
भगवान्

14 जुलै 1974

अमृतांशूद्भवः

अमृतांशु = शीतल किरण चंद्रमा
उसका उद्भव
भगवान् के मनसे
हुआ है,
ऐसा वेदवाक्य है।

"चंद्रमा मनसो जातः"
यह है वेदवाक्य

15 जुलै 1974

भानुः

= सर्वत्र भासमान होने वाले।

लेकिन हम अंधे देखते ही नहीं

माताजी, क्या किया जाय?

16 जुलै 1974

सार-बिंदुः

खरगोश के रूपमें
भगवान्
चाँदपर चढ़ गये

भगवान् वहां से सबको देखते हैं

वही खरगोश अब
बाबा की कोटड़ी के
सामने
आकर बैठा है

जब चाहो, देख लीजिये

17 जुलै 1974

18 जुलै 1974

औषधं

संसार रूपी रोग
मिटाने के लिये
भगवान् का नाम ही
सरवोत्तम
औषध है

अन्य औषधों की
जरूरत कोनी

19 जुलाई 1974

सर्वेश्वरः

सब का मालिक

हम सब सेवक हैं

लेकिन हम ही
अनेक धंदों के
मालिक हो जाते हैं

भगवान ही हमें बचाएं

20 जुलै 1974

सब के साथ
समान व्यवहार
करने वाले
भगवान

गीता के उपदेश का सार भी
साम्य-योग है

हम को यथाशक्ति
समत्व-बुद्धि रखने की
कोशीश करनी चाहिये।

21 जुलै 1974

२२ जुलाई 1975

सत्य-
धरम-
पराक्रमः

धरम निष्ठ — ब्राह्मण
पराक्रमी — क्षात्रिय

उभय शक्ति संपन्न
भगवान्

२३ जुलै १९७५

भूत - झाली जी,

भव्य - जी हि होतील

भवन = भूते आहेत आजजी;

नाथ : सगळी जाणतो ती मी
मज कोणी न जाणती
- गीताई

तीं सगळी भूते भगवंताच्या
कृपेची याचना करतात

हिंदी-मराठी में
अंतर कोनी

24 जुलै 197?

पवनः

पवनरूप में सब दूर
बहता रहता है। इधर से
उधर संदेश सुनाता है।

ध्यान न देते हुए
कान वाले भी नहीं सुनते

ध्यान देने वाले
बाबा के जैसे बहरे भी
सुनते हैं

माताजी का क्या हाल है?

25 जून 1974

पावन
पतित-पावन नाम
ऐकुनी आलों मी द्वारा
- मराठी
मैं हरि पतित-पावन सुने
हम पतित तुम पतित-पावन
दोउ बानक बने
- हिंदी
पतित-पावन बाना
आउ केते बेळकू
- ओड़िया

26 जुलै 1975

अनलः

आग्नि
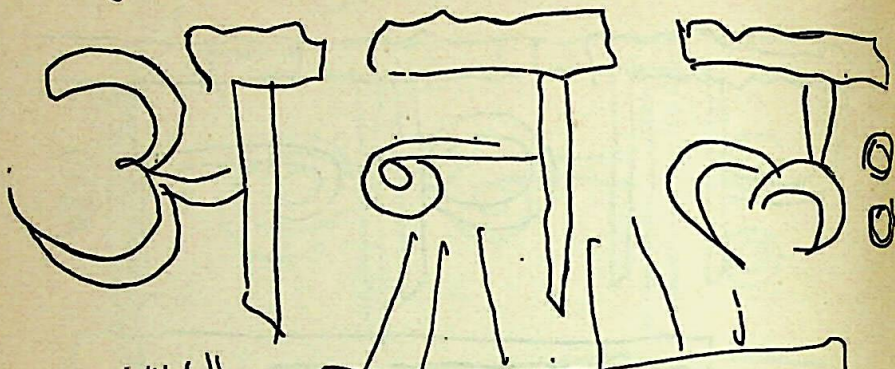
न अलं यस्य
जिसकी क्षुधा
कभी तृप्त होती नहीं
जितना खिलाओ
अुतनी अधिक ही
बढ़ती है

27 जुलै 1974

काम-
है
जो भगवान की भक्ति करेगा
अुसके मनमें कभी
अशुभ वासना
आ जाय
तो भगवान अुस
वासना को अेक क्षणमें
खतम कर देगा

28 जुलै 1974

काम-कृत

भगवान् भक्त के हृदयमें
शुभ कामनाअें
शुभ भावनाअें
शुभ प्रेरणाअे
भर देता है।

अुनसे प्रेरित होकर
भक्त अपना सारा जीवन
भगवान् की भक्तिमें
लगा देता है।

२१ जुलै 1974

कांतः
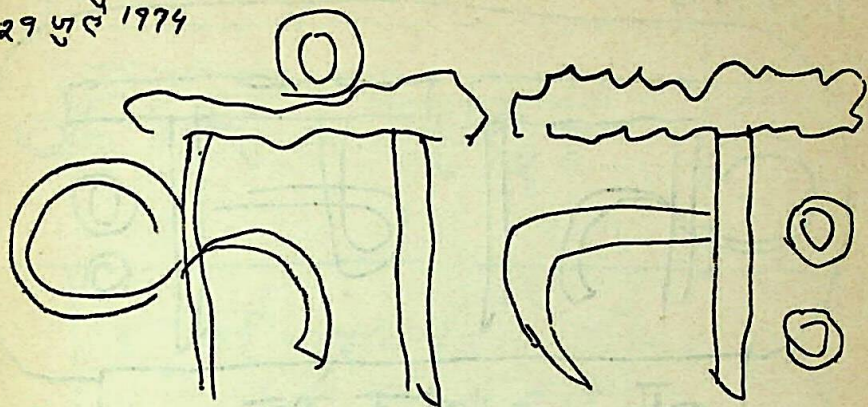
= वांछित

भक्तजन भगवान् की
कृपा की
अपेक्षा रखते हैं।

अपेक्षा तो हम भी
रखते हैं,
लेकिन मुफ्त में
बिना कुछ सेवा किये!

30 जुलै 1975

कामः

क = ब्रह्मदेव

अ = विष्णु

म = महादेव

क + अ + म = काम
(शांकरभाष्य)

31 जुलै 1974

काम - प्रद:

१ कोई चाहता है
कुटुंब सुखी हो।

२ कोई इच्छित है
व्यापार बढ़े।

३ कोई कहता है
धरम निष्ठा वृद्धिंगत हो।

४ कोई विरक्त मुमुक्षु
- मुक्ति की अपेक्षा करता है।

भगवान ये सब कामनाएं
पूरण करता है

माताजी! अपनी अपनी
अकल की परीक्षा है

सावधान!

1 अगस्त 1974

प्रभु:
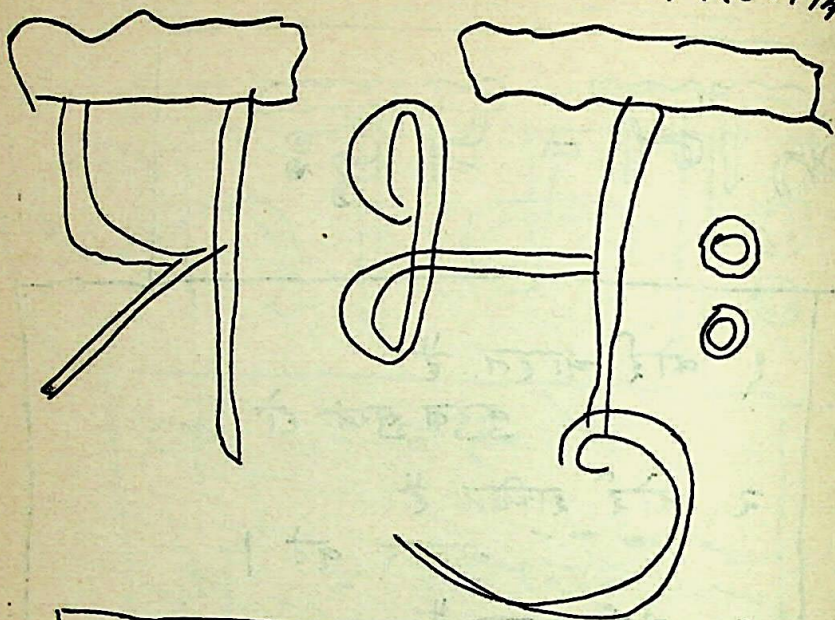
प्रभावशाली
सर्व समरथ
सब के स्वामी
सेवकों की
निरंतर चिंता करनेवाले

लेकिन कमबख्त सेवक ही
स्वामी की परवा नहीं करते।

अजब तमाशा है

2 ऑगस्ट 1975

युगादि-कृत्

भगवान युगोंको बनाने वाले

भगवान् ने मानव के
विकास के लिये
चार युगोंका आरंभ किया

१ कृतयुगमें तपश्चर्या
२ त्रेतायुगमें ज्ञान
३ द्वापरयुगमें यज्ञ
४ कलियुगमें दान

औसा धर्म सिखाया

3 ऑगस्ट 1975

युगावतार

युगा युगमे भक्तो की
रक्षा के लिये
बार बार
अवतार लेने वाले

राखावया जगीं संता
दुष्टां दूर करावया
स्थापावया पुन्हां धरम
जन्मतों मी युगीं युगीं
-गीताई

अभी बौधावतार
चल रहा है।

4 ऑगस्ट 1974

नैवेद्य-माया

भगवान् की अनेक मायाऐं हैं।

शास्त्रकारोंने अुस के तीन रंग बताये हैं

1 सात्त्विक
2 राजस
3 तामस

माताजी ! आप का रंग कौनसा है ?

[माताजी हरा रंग त्रिगुणातीत]

5 ऑगस्ट 1975

महाशनः

= बहुत खाने वाला
मोठा खादाड (गीताई)

गीता मे 'काम' (वासना) को
'महाशन'
कहा है

भगवान तो
अुस काम-वासना को भी
खा जाता है

6 ऑगस्ट 1974

अ-दृश्य

भगवान् स्थूल दृष्टि से
देखे नहीं जा सकते

सूक्ष्म अंतर्-दृष्टि से
देखें तो सर्वत्र
भरे हुए हैं।

मारां नयणानी आळस रे
न निरख्या हरिने जरी

7 ऑगस्ट 1975

ये सत-रूप॥

योगियों के लिये भगवान का रूप प्रगट ही है

इस लिये वे गाते हैं: —

आंख न मूंदौं कान न रूधौं
तनिक कष्ट नहिं धारौं
खुलै नैन पहचानौं हंसि हंसि
सुंदर रूप निहारौं
साधो! सहज समाध भली

8 ऑगस्ट 1974

9 ऑगस्ट 1975

अनंत-जित

भगवान् के अनंत भक्त हैं।
उनके साथ वह अनंत खेल खेलता है।
और सब खेलों में उसीकी जीत होती है।

कभी माताजी के साथ भी खेलता है।
तो, माताजी गिर पड़ती हैं।
फिर माताजी को वह उठाता है।
और माताजी को भी जीत लेता है।

जय! अनंत-जित!

10 अगस्त 1974

इष्ट ॐ

सब को भगवान्
इष्ट है।

सब चाहते हैं
भगवान् की कृपा

लेकिन, हमलोग कमबख्त
भक्ति करने की जिम्मेवारी
नहीं उठाना चाहते।
मुफ़्त में कृपा चाहते हैं।

शिष्टों में यानी
-श्रेष्ठों में-
परम श्रेष्ठ

जें जें आचरितो श्रेष्ठ
तें तें चि दुसरें जन
गीताई

लेकिन् भगवान् का अनुकरण
हम करने जाअेंगे
तो मार खाअेंगे

१२ ऑगस्ट १९७५

शिष्टेष्ट

शिष्टों की
यानी, संत-सज्जनों की
इष्ट-देवता
भगवान् ही हैं।

१ कोई शिव की उपासना करते हैं
२ कोई विष्णु की
३ कोई सूर्य की
४ कोई गणपति की
५ कोई देवी की

लेकिन ये सब एक
भगवान के ही
अनेक नाम हैं।

13 अगस्त 1974
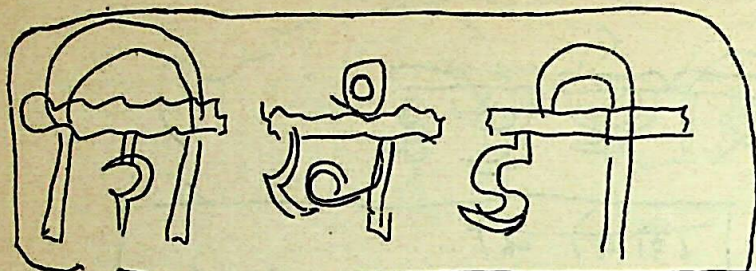
शिखंडी
१ मयूर-पिच्छ
धारण करने वाले
भगवान् श्री कृष्ण
२ मयूर-पिच्छ,
माताजी भी
धारण करती हैं
वह हैं भगवत् सेविका

१५ अगस्त १९७५

नहुषः

= बांधने वाले

१ भक्तो को
प्रेम से बांधने वाले

२ सब भूतों को
माया पाश से
जकड़ने वाले

15 ऑगस्ट 1974

वृषः
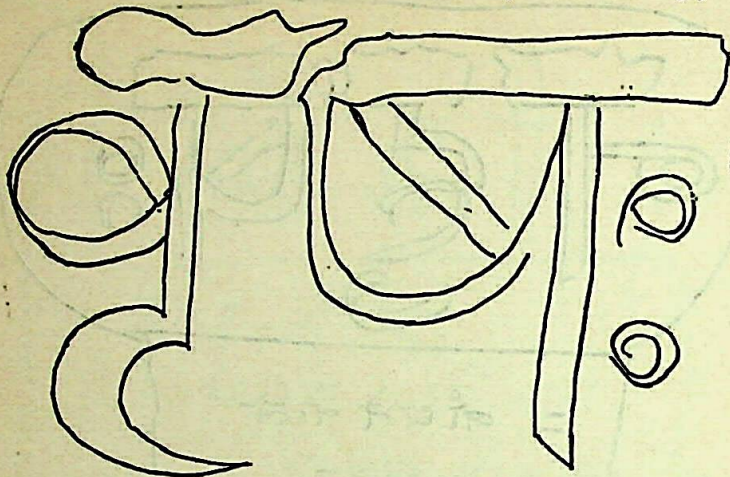
= वरषाव करने वाला भगवान्

भक्त जो जो चाहता है
भगवान् ऊपरसे
वह बरसाता है

माताजी! मांग लो—
चाहे मोटर
चाहे स्कूटर
चाहे स्वेटर
चाहे दूध-घी

16 ऑगस्ट 1974

क्रोध-हा

ब्रह्मचर्यादि पालन
करनेवालों को,
यानी
काम-विजय करनेवालों को,
बहुधा
क्रोध सताता है।
वह काम का ही
दूसरा रूप है।

भगवान् भक्तों को
क्रोध में से
छुड़ाता है।

17 अगस्त 1975

क्रोध-कृत-करता

क्रोध करने वाले
दुर्जनों को
भगवान्
काटते है

माताजी को तो
क्रोध आता ही नहीं है
इसलिये निरुद्यम निद्रा
लेती है

18 अगस्त 1974

विश्व-बाहु
भगवान् के बाहु दुनियाभर फैले हैं।
काहे के लिये ?
१ सज्जनों को आशीर्वाद देने के लिये
२ दुर्जनों के दंडन के लिये

19 ऑगस्ट 1975

महीं-धारः

महीं = पृथ्वी

पृथ्वी को
धारण किये हुओ
भगवान्
पृथ्वीपर रहने वाले
सब प्राणीयो की चिंता करते हैं

लेकिन् वे प्राणी तो
अेक दूसरों के साथ झगड़ा करते हैं
मारते काटते हैं
और खा भी जाते हैं ?

अच्युत
= न गिरनेवाला
भगवान् कभी गिरते नहीं
लेकिन
माताजी बार बार
गिरती है
अच्युत को स्मरण करो
तो गिरेगी नहीं
या, गिरेगी तो भी
झट उठेगी
20 ऑगस्ट 1974

प्रथितः

= प्रसिध्द, मशहूर।

भगवान् का नाम सब दूर
दुनिया में फैला हुआ है।

लेकिन हम संसार ग्रस्त
उनको भूल जाते हैं।

फिर आपत्ति आने पर
उनको याद करते हैं

इसलिये, कुंतीने भगवान् से
वर मांगा—
"विपदः सन्तु नः शश्वत्"

हे भगवान्! हम को हमेशा
आपत्ती दे

21 अगस्त 1975
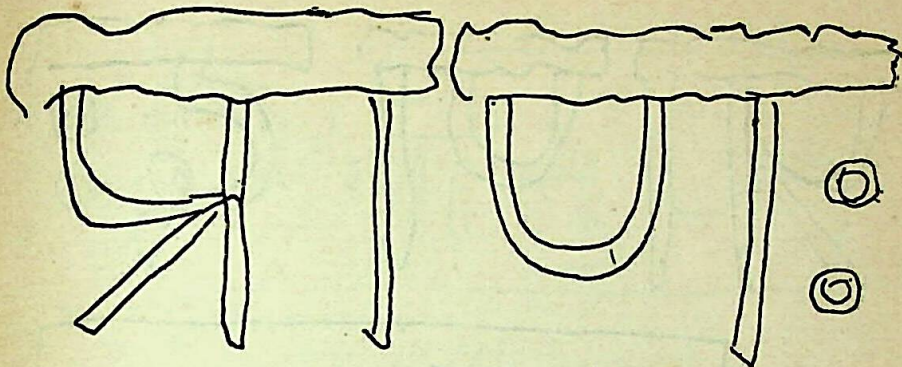
प्राण
भगवान्
सब के
प्राण-स्वरूप हैं
भगवान् की जब तक इच्छा है कि हम जीवित रहें, तब तक ही हमारा प्राण (श्वासोच्छ्वास) जारी रहेगा।
बाद सब खतम!
22 ऑगस्ट 1974

प्राण दः
सब को
प्राण वायु
सतत देनेवाला
अनेक जन्मों के लिये
देता रहेगा।
कबतक ?
जबतक वासना रहेगी
वासना मुक्ति से जीव
परमात्मा में लीन होगा
फिर प्राण की जरूरत
नहीं रहेगी
23 ऑगस्ट 1974

वासवानुजः
= इंद्र के छोटे भाई
इंद्र ऊपरसे
बरसात बरसाअेंगे
ये छोटे भाई नीचे
कुअें खोदेंगे
और
खेती करेंगे
'कृष्ण' का अरथ है
खेती करनेवाला
२५ ऑगस्ट १९७५

जल संचय
समुद्र

इस का सूक्ष्म अर्थ है
करम-योग

जैसे, नदियों का पानी
निरंतर बहता हुआ
समुद्र में डूब जाता है,
वैसे, निरंतर निष्काम
सेवा कार्य करते हुये
भगवान् में डूब जाना

25 अगस्त 1974

अधिष्ठानं
= मूलाधार
भक्ति
सब साधनों का
मूलाधार
राम - हरि - राम
राम - हरि - राम
राम - हरि - राम
राम - हरि - राम
26 अगस्त 1974
३३७

अप्रमत्तः

= सदा सावधान

प्रमाद-रहित

बुद्ध देवने भिक्षुओं को
कहा था :—
ध्यान रक्खो भिक्षु!
कभी प्रमाद न करो

न गफलत से
रहो इक दम

यह ज्ञान योगी का
लक्षण है

27 अॉगस्ट 1974

राम - हरि - राम
राम - हरि - राम
राम - हरि - राम
राम - हरि - राम

प्रतिष्ठित

= स्थित-प्रज्ञ

भगवान् स्थितप्रज्ञ हैं।
तो, हमको भी अुनका निरंतर
स्मरण करते हुअे,
स्थितप्रज्ञ बनने की
कोशीश करनी चाहिये।

इसी लिये,
हम रोज स्थितप्रज्ञ के
गीताई माअुली के श्लोक
बोलते हैं

लेकिन औसा न हो कि,
जीभ फिरे मुख मांही
मनुआ तो दहु दस फिरे

या, मनुआ तो निद्रा लेता रहे

यह तो सुमिरण नाहीं

राम-हरि-राम

28 ऑगस्ट 1974

स्कंदः

स्वामी कारतिकेय

गणपती के बड़े भाई

गणपति विद्यावान्
बड़े पेटवाले

कारतिकेय शूरवीर
बड़े हाथ वाले

'स्कंद' का रूप दक्षिण में 'कंद' होता है।
'कंदस्वामी' दक्षिण में लोकप्रिय है

'स्कंद' के तीन अरथ हैं —
१ शूर शांतिसैनिक
२ स्वच्छता-सफाई-करनेवाले
३ धरम-रक्षक

29 ऑगस्ट 1974

राम-हरि-राम
राम-हरि-राम
राम-हरि-राम

धर्म को
धारण करने वाला
30 ऑगस्ट 1974
राम - हरि - राम
राम - हरि - राम
राम - हरि - राम
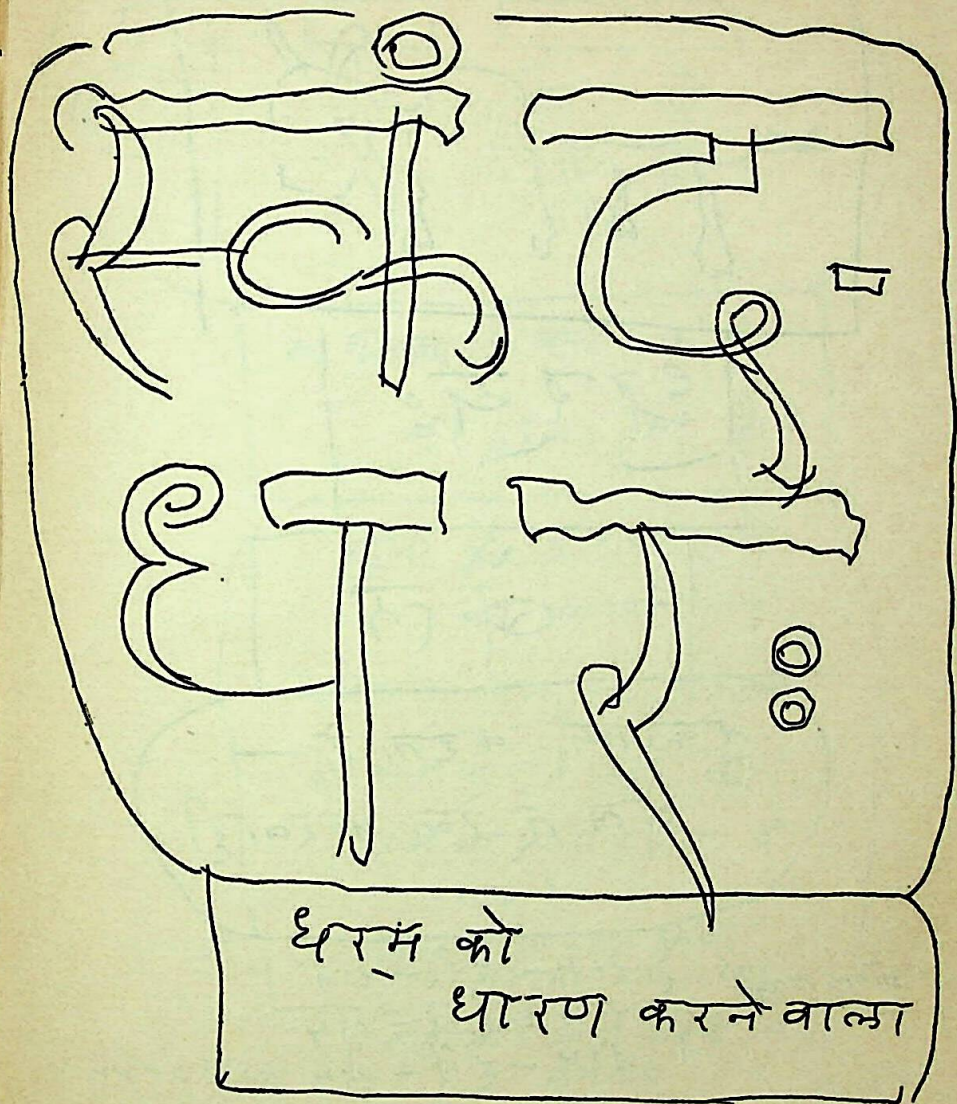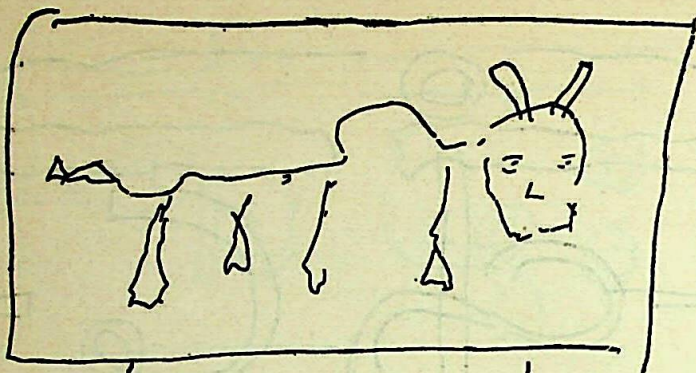
धुरयः
= बैल
तुकाराम कहता है—
बैल तूं देवा भारवाही
३१ ऑगस्ट 1974
राम – हरि – राम
राम – हरि – राम
राम – हरि – राम

वरदः

भगवान् भक्तों को
वरदान देता है।

कुंती ने भगवान् से
वर मांगा --
"विपदः सन्तु नः शश्वत्"
हे भगवान्! हमें तू
हमेशा आपत्ति दे
क्यों?
जिससे आपका स्मरण
निरंतर बना रहेगा

माताजी! आप कौनसा वरदान
मांगेगी?

1 सप्टेंबर 1975

वायु-वाहनः
वायु को बहाने वाले
भगवान् अपना पंखा चला करके वायु को गति देता है
फिर, पेड़ वगैरा सब हिलने लगते हैं
फिर, माताजी भी पंखा चलाती है
और माताजी की मोटर भी दौड़ती है
२ सप्टेंबर 1974

वासुदेवः
सब विश्व में
'बसा हुआ'
यानी भरा हुआ
भगवान्
भरा हुआ है,
लेकिन
अंधे को दीखता ही नहीं
3. सप्टेंबर 1974

बृहद्भानु
बृहत् = ब्रह्म
भानु = प्रकाशक
भगवान् की कृपासे
भक्तों को
ब्रह्म
प्रकाशित होता है
राम - हरि
राम - हरि
राम - हरि
4 सप्टेंबर 1974

भगवान्
सृष्टीका आरंभ
करने वाले
आदि-देव

अुनके बाद
अनेक देवो ने
जन्म लिया
भिन्न भिन्न कार्य
करने के लिये

5 सप्टेंबर 1974

राम-हरि
राम-हरि
राम-हरि

पुरं-दरः
नगरों को
फोड़ने वाला
भगवान् को पहले
'ग्रामणीः' यानी ग्राम-नेता कहा है
भगवान् को गांव प्यारे हैं
आजकल नगर बढ़ रहे हैं
अुनको फोड़ने के लिये
शायद
भगवान् को आना पड़े
6 सप्टेंबर 1974
राम-हरि
राम-हरि
राम-हरि

अ-शोक

भगवान्
जिस को ज़रा भी शोक नहीं

चाहे कोई जीओ
चाहे कोई मरे

हम तो ज़रा ज़रा सी बातपर
शोक करते रहते हैं

फिर भी, अपने लड़के का
नाम रखते हैं 'अशोक'

गौतम बुद्ध के धर्म को
मानने वाला
'अशोक' नामक
अेक चक्रवर्ती राजा हो गया

अुस नाम का अनुकरण करके हम
अशोक नाम रखते हैं बच्चे का

आशा करते हैं-
कभी वह भी बादशाह हो जायगा!

7 सप्टेंबर 1974

राम-हरि
राम-हरि
राम-हरि

तारण:
तारने वाला
भगवान
वह नहीं होता
तो, हम सब डूबने वाले ही थे
त्यांस शीघ्र चि मी स्वयें
संसार सागरांतूनि
काढितों मृत्यु मारुनी
8 सटेंबर 1974
राम-हरि
राम-हरि
राम-हरि

तारः
तार-स्वर से
यानी
ऊँची आवाज से
जिसका जप
किया जाता है
वह
ॐ
ओंकाररूप भगवान्
9 सप्टेंबर 1974
ॐ
राम-हरि
राम-हरि
राम-हरि
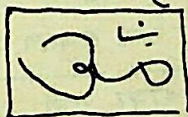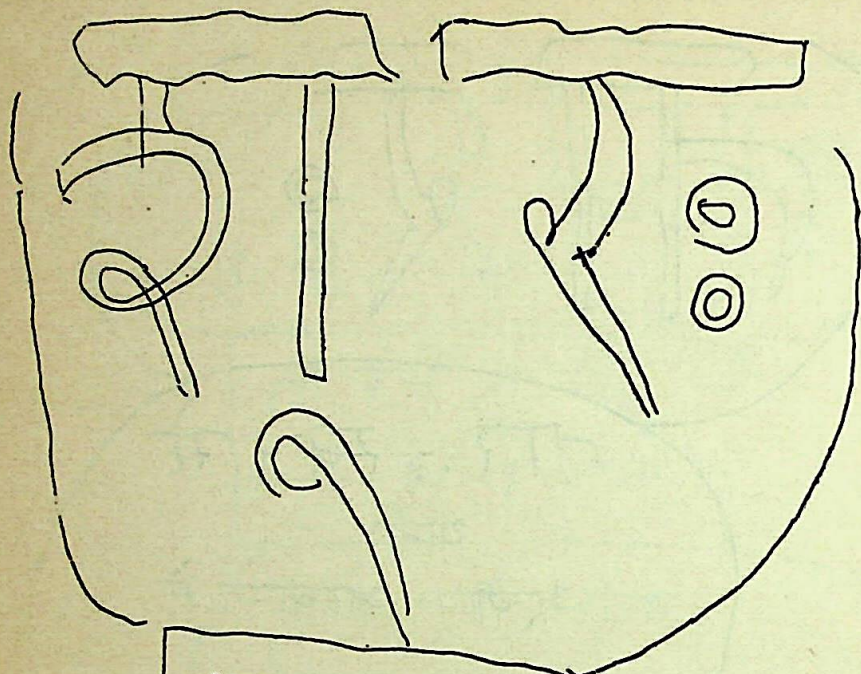
भगवान् शूर हैं।
सज्जनों का रक्षण करना
दुर्जनों को दूर भगाना
यह शूर ही कर सकता है
हम को भी कायर नही होना चाहिये
इसके लिये बोलिये
10 सप्टेंबर 1974
राम-हरि
राम-हरि
राम-हरि
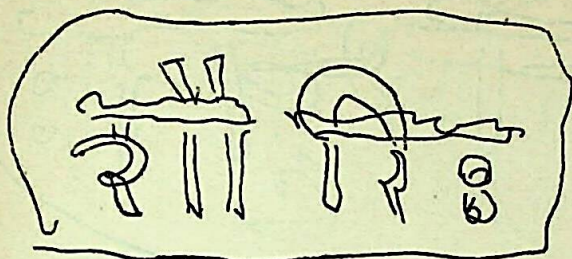
शौरिः
शूर-पुत्र
भगवान् कृष्ण
जो भक्त काम-क्रोधादि-षड्रिपुओं को जीतेगा वह 'शूर' होगा। और भगवान् अुस के भी अपनेको 'पुत्र' समझेंगे। यानी अुसकी सेवा करेंगे।
11 अक्टूंबर 1974

जनेश्वरः

भगवान्

१ जनेश्वर आहे

२ सज्जनेश्वर आहे

३ विद्वज्जनेश्वर आहे

४ महाजनेश्वर आहे

५ शासक जनेश्वर आहे

याला पंच-शक्ति-सहयोग म्हणतात

हमारा यह करतव्य हम करेंगे
तो, भगवान्की हम पर कृपा होगी

13 सप्टेंबर 1974

राम-हरि

अनुकूल

भगवान्
सब को
अनुकूल

१ धरम्
२ अरथ
३ काम
४ मोक्ष
} चार पुरुषारथ

जो चाहे मांग लो

भगवान् अनुकूल हैं
लेकिन
अपनी अक़्ल कायम रखो

14 सप्टेंबर 1974

भक्त-जनों की रक्षा के लिये
सो-सो-बार आनेवाले

द्रौपदी की लाज राखी
तुम बढ़ायो चीर। कारुण्य मूरति
कृष्ण

द्रौपदी के लिये, जब दु. शासन
अुसे नग्न कर रहा थां, शत-शत
वस्त्रों का रूप लेकर भगवान
अवतरित हुअे थे

15 सप्टेंबर 1974 { राम-हरे
राम-हरे
राम-हरे
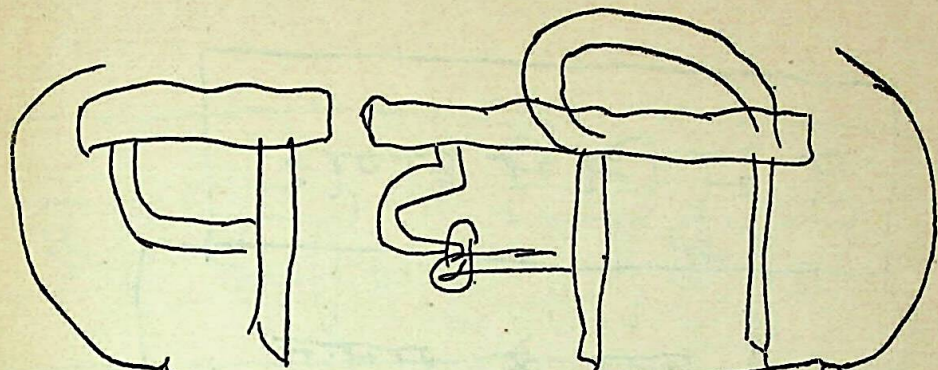
हाथ में कमल
लिये हुअे भगवान्
शंख-चक्र-गदा-पद्म
कंठ माळ सोई
मेरे तो गिरिधर गोपाल
दूसरो न कोई
राम-हरि
राम-हरि
राम-हरि
16 सप्टेंबर

पद्म निभेक्षणः

पद्म के समान
आंखं वाले
भगवान्

हमारे लिये यही
आदरश है। हमारी
आंख भी कमल के समान
निरमल होनी चाहिये।

निरमल — यानी
सब का गुण देखनेवाली आंख

इसी लिये, माताजी, जमनालाल जी ने
अपने लड़के का नाम 'कमलनयन'
रखा था

17 सप्टेंबर 1974
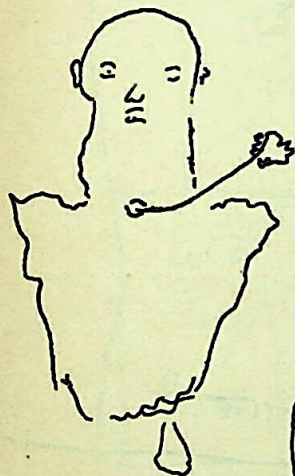
पद्म-नाभः
जिस की नाभिमें
कमल है
जिसमें ब्रह्मदेव
निवास करते हैं
हम को उनकी नाभिमें तो
स्थान नहीं मिल सकता
लेकिन
चरणों में मिल जाय
तो भी
बहुत कमाया
राम-हरि
राम-हरि
राम-हरि
18 सप्टेंबर 1974

अरविंदाक्षः

= कमल-नयन

विष्णुसहस्रनाम में

१ पुंडरीक
२ पुष्कर
३ पद्म
४ अरविंद

'कमल' के ये नाम हैं

आंख हमेशा कमलपत्रवत्
निर्मल, निर्लिप्त, सब का गुण देखनेवाली
चाहिये, तभी भगवत्-कृपा होगी

19 सप्टेंबर 1974

राम-हरि
राम-हरि
राम-हरि

पद्म-गरभः

जिसके हृदयमें
पद्म है

जब हृदय कमलवत्
निरमल होता है
तभी साधक कमल-नयन बन सकता है

राम-हरि
राम-हरि
राम-हरि

२० सप्टेंबर १९७४

शरीर का भरण-पोषण करने-वाले भगवान्

वे परजन्य-वृष्टि करते है उससे शरीरपोषण के लिये अन्न मिलता है

लेकिन, हमको खेत में अनाज बो करके खेती करनी होगी। तब शरीरपोषण के लिये अन्न मिलेगा। नहीं तो, केवल परजन्य-वृष्टिसे घास ही उगेगा।

लेकिन माताजी का तो, घास का रस-सेवन करके भी, शरीर-पोषण होगा न ?

२१ सप्टेंबर १९७४

महाक्षः

बड़ी आंख वाला।

भगवान् आंख खोल करके
भक्तों की तरफ देखता है।

लेकिन भक्तों को आंख बंद करके
भगवान का ध्यान करना पड़ता है

अगर वह आंख बंद करेगा
तो दुनिया खतम, भक्त भी खतम

अगर भक्त आंख खोलेंगे
तो भगवान दिखेगा ही नहीं
दुनिया दिखेगी

25 सप्टेंबर 1974

राम - हरि
राम - हरि
राम - हरि

अर्हं

भरा हुआ

भगवान् महा-निधि है

परंतु, वह गुप्त-धन है

जैसे खाने होती है

उस गुप्त धन को
बाहर निकालने के लिये
खोदना पड़ेगा

खोदने के लिये
क्या, माताजी
आप तैयार है ?

२३ सप्टेंबर १९७४

शुद्धात्मा

सब से बुढा, या बुढी,
भगवान्

माताजी की माता की माता की माता की	माताजी के पिता के पिता के पिता के
माता	पिता

राम - हरि
राम - हरि
राम - हरि

२४ सप्टेंबर १९७४

महर्द्धिः

ऋद्धि, सिद्धि, समाधि
समृद्धि — इत्यादि सबसे
भरे हुओ भगवान
— ओक खजाना
है

लेकिन, इन चीजों की कामना
भक्त करेगा तो भक्त गिर जायगा।

22 सप्टेंबर 1974

राम-हरि
राम-हरि
राम-हरि

गरुड़-ध्वजः

भगवान् 'विष्णु' की ध्वजा पर
गरुड़-चिह्न है

भगवान् गरुड़-ध्वज हैं
वैसे वे गरुड़-वाहन भी हैं

'गरुड़' भगवान् का हवाई जहाज है।
उस पर आरूढ़ हो कर वे तुरंत
भक्त रक्षा के लिये पहुंच जाते हैं;

चाहे, शांति-कुटीर जाना हो
चाहे, लक्ष्मी-नारायण-मंदिर,
चाहे, ब्रह्मनिवास मंदिर।

२८ सप्टेंबर १९७५

जिस की
किसी के साथ
तुलना नहीं हो सकती
और क्या लिखा
जाय ?
राम हरे
राम - हरे
राम - हरे
27 सीतंबर 1974

शारभः

भगवान्
परमेश्वर, परमात्मा
शरीरों में
प्रवेश करके
अंतरात्मा के रूप में
चमकता है

उस को देखने के लिये
ज़रा गरदन झुकानी पड़ती है

राम हरि
राम हरि
राम हरि

२८ सितंबर 1975

१ भीमः
२ अ- भीमः
ऐसे दो रूप इस एक शब्द के
होते हैं।
भीमः = भयंकर (दुर्जनों के लिये)
अभीमः = अभयं-कर (सज्जनों के लिये)
१ 'भीम' का अर्थ बलभीम हनुमान भी है।
२ भीम — यानी, जरासंध को कुश्तीमें
उखाड़ने वाले पाँडुपुत्र भीम भी है।
२१ सीतंबर १९७५
राम हरि
राम हरि
राम हरि

समयज्ञः

(१) सम + यज्ञ = समयज्ञ

सब प्राणीमात्र के लिये
समान भाव रखना — यही
उनके यजन-पूजन का
उत्तम साधन है

समत्व मारासधनमच्युतस्य
= समत्व ही भगवान् का आराधन है

(२) समय + ज्ञ = समयज्ञ

भगवान् समय को जानने
चतुर हैं।
अपने निश्चित समय पर
जन्म देते हैं
और निश्चित समय पर
मृत्यु देते हैं

३० सीतंबर १९७५ { राम हरि
राम हरि
राम हरि

1 ऑक्टोबर 1974

हविर् - हरिः

जो भक्त भगवान् को नित्य
आहुति (हविस्) देते हैं
उनके सब पापों को
भगवान् दूर करते हैं

इस लिये आहुति के तौरपर
कुछ न कुछ सेवा समाज की
करते रहना चाहिये
ईश्वरार्पण - भावसे

राम हरि
राम हरि
राम हरि

2 ऑक्टोबर 1974

सर्वलक्षण-लक्षण्यः ३६०

भगवान् का जो भी लक्षण करो
भगवान् को लागू होगा

इसी लिये, तुकाराम ने कहा —
'तुका म्हणे जें जें बोला
ते तें साजे या विठ्ठला'

अब, आज से यह नाम-लेखन समाप्त हो रहा है

आज का पवित्र दिन है गांधी-जयंती

लेखन-समाप्ति क्यों ?

कारण १

सब लक्षण इस भेद नाममें आ गये
भगवान् के लक्षण तो अनंत होंगे
समर्थ (रामदास) कहते हैं —
"चोवीस-नामी सहस्रनामी
अनंत-नामी तो अ-नामी
तो कैसा आहे अंतरयामी
विवेके ओळखावा।"
(कबीर) कहते है —
"श्वास श्वास पे राम कहे
वृथा श्वास मत खोय"

कारण २

यह ३६० वाँ नाम है। इति वर्ष
के ३६० दिनों के लिये पर्याप्त है

कारण ३

आज से बाबा अपनी पेन्सिल
'राम हरि' को अरपण करेगा

राम हरि
राम हरि
राम हरि

विष्णुसहस्रनाम

मूलपाठ

ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

॥ श्रीविष्णुसहस्रनाम-स्तोत्रम् ॥

यस्य स्मरण-मात्रेण जन्म-संसार-बंधनात्
विमुच्यते नमस् तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे
नमः समस्त-भूतानां आदि-भूताय भू-भृते
अनेक-रूप-रूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय पुरुषोत्तमाय ॥

(१)

१ ॐ विश्वं विष्णुर् वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः
भूतकृद् भूतभृद् भावो भूतात्मा भूतभावनः
२ पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानांपरमा गतिः
अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च
३ योगो योगविदांनेता प्रधानपुरुषेश्वरः
नारसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः
४ सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर् भूतादिर् निधिरव्ययः
संभवो भावनोभर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः
५ स्वयंभूः शंभुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः
अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः

६ अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः
विश्वकर्मा मनुस् त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरोध्रुवः
७ अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः
प्रभूतस् त्रिककुब्धाम पवित्रं मंगलंपरम्
८ ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः
९ ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः
अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान्

(२)

१० सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेताः प्रजाभवः
अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः
११ अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः
वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः
१२ वसुर् वसुमनाः सत्यः समात्मासंमितः समः
अमोघः पुंडरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः
१३ रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर् विश्वयोनिः शुचिश्रवाः
अमृतः शाश्वतस्थाणुर् वरारोहो महातपाः
१४ सर्वगः सर्वविद्भानुर् विष्वक्सेनो जनार्दनः
वेदो वेदविदव्यंगो वेदांगो वेदवित् कविः
१५ लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः
चतुरात्मा चतुर्व्यूहश् चतुर्दंष्ट्रश् चतुर्भुजः
१६ भ्राजिष्णुर् भोजनं भोक्ता सहिष्णुर् जगदादिजः
अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः
१७ उपेंद्रो वामनः प्रांशुर् अमोघः शुचिरूर्जितः
अतींद्रः संग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः
१८ वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः
अतींद्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः

१९ महाबुद्धिर् महावीर्यो महाशक्तिर् महाद्युतिः
अनिर्देश्यवपुः श्रीमान् अमेयात्मा महाद्रिधृक्
२० महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतांगतिः
अनिरुद्धः सुरानंदो गोविंदो गोविदांपतिः

(३)

२१ मरीचिर् दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः
हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः
२२ अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः संधाता संधिमान् स्थिरः
अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा
२३ गुरुर् गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः
निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः
२४ अग्रणीर् ग्रामणीः श्रीमान् न्यायो नेता समीरणः
सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात्
२५ आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः संप्रमर्दनः
अहःसंवर्तको वह्निर् अनिलो धरणीधरः
२६ सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग् विश्वभुग् विभुः
सत्कर्ता सत्कृतः साधुर् जह्नुर् नारायणो नरः
२७ असंख्येयो ऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृत् शुचिः
सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः
२८ वृषाही वृषभो विष्णुर् वृषपर्वा वृषोदरः
वर्धनो वर्धमानश् च विविक्तः श्रुतिसागरः
२९ सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेंद्रो वसुदो वसुः
नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः
३० ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः
ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मंत्रश् चंद्रांशुर् भास्करद्युतिः
३१ अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिंदुः सुरेश्वरः
औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः

३२ भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः
कामहा कामकृत् कांतः कामः कामप्रदः प्रभुः

(४)

३३ युगादिकृद् युगावर्तो नैकमायो महाशनः
अदृश्यो व्यक्तरूपश् च सहस्रजिदनंतजित्
३४ इष्टो ऽविशिष्टः शिष्टेष्टः शिखंडी नहुषो वृषः
क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर् महीधरः
३५ अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः
अपांनिधिरधिष्ठानं अप्रमत्तः प्रतिष्ठितः
३६ स्कंदः स्कंदधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः
वासुदेवो बृहद्भानुर् आदिदेवः पुरंदरः
३७ अशोकस् तारणस् तारः शूरः शौरिर् जनेश्वरः
अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः
३८ पद्मनाभो ऽरविंदाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत्
महर्द्धिर् ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः
३९ अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः
सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान् समितिंजयः
४० विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर् दामोदरः सहः
महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः
४१ उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः
करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः
४२ व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः
परर्द्धिः परमस्पष्टस् तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः

(५)

४३ रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयो ऽनयः
वीरः शक्तिमतांश्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः

४४ वैकुंठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः
४५ ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः
उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः
४६ विस्तारः स्थावरस्थाणु प्रमाण बीजमव्ययम्
अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः
४७ अनिर्विण्णः स्थविष्ठो ऽभूर् धर्मयूपो महामखः
नक्षत्रनेमिर् नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः
४८ यज्ञ इज्यो महेज्यश् च क्रतुः सत्रं सतांगतिः
सर्व-दर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम्
४९ सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत्
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर् विदारणः
५० स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत्
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः
५१ धर्मगुब् धर्मकृद् धर्मी सदसत् क्षरमक्षरम्
अविज्ञाता सहस्रांशुर् विधाता कृतलक्षणः
५२ गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गरुः

(६)

५३ उत्तरो गोपतिर् गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः
शरीरभूतभृद् भोक्ता कपींद्रो भूरिदक्षिणः
५४ सोमपो ऽमृतपः सोमः पुरुजित् पुरुसत्तमः
विनयो जयः सत्यसंधो दाशार्हः सात्वतांपतिः
५५ जीवो विनयितासाक्षी मुकुंदो ऽमितविक्रमः
अंभोनिधिरनंतात्मा महोदधिशयोऽन्तकः
५६ अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः
आनंदो नंदनो नंदः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः

५७ महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः
त्रिपदस् त्रिदशाध्यक्षो महाशृंगः कृतांतकृत्
५८ महावराहो गोविंदः सुषेणः कनकांगदी
गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश् चक्रगदाधरः
५९ वेधाः स्वांगो ऽजितः कृष्णो दृढ़ः संकरषणोऽच्युतः
वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः
६० भगवान् भगहानंदी वनमाली हलायुधः
आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर् गतिसत्तमः
६१ सुधन्वा खंडपरशुर् दारुणो द्रविणप्रदः
दिविःस्पृक् सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः
६२ त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक्
संन्यासकृत् शमः शांतो निष्ठा शांतिः परायणम्
६३ शुभांगः शांतिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः
गोहितो गोपतिर् गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः

(७)

६४ अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृत् शिवः
श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतांवरः
६५ श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमान् लोकत्रयाश्रयः
६६ स्वक्षः स्वंगः शतानंदो नंदिर् ज्योतिर्गणेश्वरः
विजितात्मा ऽविधेयात्मा सत्कीर्तिश् छिन्नसंशयः
६७ उदीर्णः सर्वतश्चक्षुर् अनीशः शाश्वतस्थिरः
भूशयो भूषणो भूतिर् विशोकः शोकनाशनः
६८ अर्चिष्मान् अर्चितः कुंभो विशुद्धात्मा विशोधनः
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः
६९ कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः

७० कामदेवः कामपालः कामी कांतः कृतागमः
अनिर्देश्यवपुर् विष्णुर् वीरोऽनंतो धनंजय
७१ ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद् ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः
ब्रह्मविद् ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः
७२ महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः
महाक्रतुर् महायज्वा महायज्ञो महाहविः
७३ स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः
७४ मनोजवस् तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर् वसुमना हविः

(८)

७५ सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः
७६ भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयो ऽनलः
दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः
७७ विश्वमूर्तिर् महामूर्तिर् दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान्
अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः
७८ एको नैकः सवः कः किं यत् तत् पदमनुत्तमम्
लोकबन्धुर् लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः
७९ सुवर्णवर्णो हेमांगो वरांगश् चंदनांगदी
वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश् चलः
८० अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक्
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः
८१ तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतांवरः
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृंगो गदाग्रजः
८२ चतुर्मूर्तिश् चतुर्बाहुश् चतुर्व्यूहश् चतुर्गतिः
चतुरात्मा चतुर्भावश् चतुर्वेदविदेक पात

८३ समावर्तो ऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा
८४ शुभांगो लोकसारंगः सुतंतुस् तंतुवर्धनः
इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः
८५ उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः
अर्को वाजसनः शृंगी जयंतः सर्ववित्जयी

(६)

८६ सुवर्णबिंदुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः
महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः
८७ कुमुदः कुंदरः कुंदः पर्जन्यः पावनोः ऽनिलः
अमृताशो ऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः
८८ सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजित् शत्रुतापनः
न्यग्रोधोदुंबरो ऽश्वत्थश् चाणूरांध्रनिषूदनः
८९ सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः
अमूर्ति रनघो ऽचित्यो भयकृद् भयनाशनः
९० अणुर् वृहत् कृशः स्थूलो गुणभृन् निर्गुणो महान्
अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्धनः
९१ भारभृत् कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः
आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः
९२ धनुर्धरो धनुर्वेदो दंडो दमयिता दमः
अपराजितः सर्वसहो नियंता ऽनियमो ऽयमः
९३ सत्त्ववान् सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः
अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत् प्रीतिवर्धनः
९४ विहायसगतिर् ज्योतिः सुरुचिर् हुतभुग् विभुः
रविर् विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः
९५ अनंतो हुतभुग् भोक्ता सुखदो नैकजो ऽग्रजः
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः

९६ सनात् सनातनतमः कपिलः कपिरव्ययः

स्वस्तिदः स्वस्तिकृत् स्वस्ति स्वस्तिभुक् स्वस्तिदक्षिणः

९७ अरौद्रः कुंडली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः

शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः

९८ अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणांवरः

विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः

९९ उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः

वीरहा रक्षणः संतो जीवनः पर्यवस्थितः

१०० अनन्तरूपो ऽनंतश्रीर् जितमन्युर् भयापहः

चतुरस्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः

१०१ अनादिर् भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिरांगदः

जननो जनजन्मादिर् भीमो भीमपराक्रमः

१०२ आधारनिलयो ऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः

ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः

१०३ प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत् प्राणजीवनः

तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः

१०४ भूरभुवः स्वस्तरुस् तारः सविता प्रपितामहः

यज्ञो यज्ञपतिर् यज्वा यज्ञांगो यज्ञवाहनः

१०५ यज्ञभृद् यज्ञकृद् यज्ञी यज्ञभुग् यज्ञसाधनः

यज्ञांतकृद् यज्ञगुह्य अन्नमन्नाद एव च

१०६ आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः

देवकीनंदनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः

१०७ शंखभृन् नंदकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः

रथांगपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः

१०८ सर्वप्रहरणायुध ॐ नमः इति ॥

नमोऽस्त्वनंताय सहस्र-मूर्तये
सहस्र-पादाक्षि शिरोरु-बाहवे
सहस्र-नाम्ने पुरुषाय शाश्वते
सहस्र-कोटी-युग-धारिणे नमः

आकाशात् पतितं तोयं
यथा गच्छति सागरम्
सर्व-देव नमस्कारः
केशवं प्रति गच्छति ।

हरहे नमः हरहे नमः हरहे नमः

राम-हरि
राम-हरि
राम-हरि

विष्णुसहस्रनाम-माहात्म्य

(विष्णुसहस्रनाम के माहात्म्य के संबंध में विनोबाजी द्वारा समय-समय पर व्यक्त किये गए विचार। 'मैत्री' के सौजन्य से।)

पारायण का लाभ

हम रोज सुबह ईशावास्य का पाठ करते हैं। वह एक उपनिषद ऐसी है, जिसमें पारमार्थिक जीवन का परिपूर्ण स्वरूप थोड़े में रख दिया है। अगर कोई मुझे कहेगा कि तू एक ही ग्रंथ चुन ले, तो मैं ईशावास्य चुनूंगा। मैंने उसपर एक विस्तृत टीका भी लिखी है। कठिन है समझने के लिए, लेकिन पर्याप्त है। परन्तु वह चीज ऐसी है कि रोज प्रार्थना में वह बोलते रहें, उतने से लाभ नहीं होगा। थोड़ा तो होगा, बोलते-बोलते चित्त पर कुछ संस्कार होता रहेगा; परन्तु उस पर चिंतन-मनन करना चाहिए, आचरण में लाना चाहिए, तब उसका लाभ होगा। शाम को हम स्थितप्रज्ञ के श्लोक बोलते हैं। उसमें परिपूर्ण गीता आ जाती है। स्थितप्रज्ञ गीता का आदर्श है। वह शब्द भी गीता का अपना स्वतंत्र शब्द है। उसमें साधक का भी लक्षण बताया है और सिद्ध पुरुष का लक्षण भी बताया है। साधना भी बतायी है और अन्तिम लक्ष्य भी बताया है—एक परिपूर्ण दर्शन है। सिवनी जेल में उस पर व्याख्यान देने का मौका आया था। उसकी 'स्थितप्रज्ञ दर्शन' किताब प्रकाशित हुई है। लेकिन उसके भी चिंतन, मनन, आचरण का सवाल आता है।

परन्तु हम जो विष्णुसहस्रनाम बोलते हैं, उसमें केवल पारायण की ही बात है। वहां तो केवल 'स्मरणमात्रेण' शुद्धि होती है। ऐसे तो सभी नाम एक भगवान के ही हैं। अंत में कहा है :

आकाशात् पतितं तोयं
यथा गच्छति सागरम्
सर्व-देव-नमस्कारः
केशवं प्रति गच्छति।

ब्राह्मण जो संध्या करते हैं, उसमें भी प्रथम नाम केशव ही है। नामदेव को भी केशव नाम अत्यंत प्रिय है। पंढरपुर के विठ्ठल का मूल नाम केशव है। ईंट पर खड़ा है, इसलिए उसको विट्ठल कहते हैं। साररूप केशव नाम प्रसिद्ध है। महाराष्ट्र में विट्ठल नाम प्रसिद्ध है। राम नाम तो है ही। हरि नाम भी है। 'रामकृष्णहरि' तो रूढ़ है। इन सब नामों का जप होता ही है। लेकिन एक ही नाम हजार-हजार बार बोला जाय, तो उसमें मनुष्य को कभी थकान भी आ सकती है। विविधता हो तो थकान नहीं आती। विविध वृक्ष हों, तो देखने में अच्छा लगता है। उसका एक अलग असर होता है। हजार पेड़ हैं, लेकिन एक ही प्रकार के हैं, तो देखते-देखते थकान आ जायगी। वैसे विष्णुसहस्रनाम में एक हजार अलग-अलग नाम हैं, इसलिए उसके पारायण में थकान नहीं आती। उसमें चिंतन-मनन की अपेक्षा नहीं। कोई उसका चिंतन-मनन करे,तो भी लाभ है, न करे और केवल पारायण ही करे तो भी लाभ है।

शंकराचार्य ने अनेक भाष्य लिखे। उनकी प्रस्थानत्रयी तत्त्वज्ञान का आधार है। प्रस्थान यानी आधार। तिपाई को तीन पांव होते हैं, वैसे ये तत्त्वज्ञान के तीन आधार हैं—गीता, ब्रह्मसूत्र और उपनिषद्। ब्रह्मसूत्र और उपनिषद् विद्वत-जनों के लिए हैं। ब्रह्मसूत्र पर शंकराचार्य का जो भाष्य है, वह पढ़ने से शंकाओं का समाधान हो जाता है। लेकिन शंकाशील की शंकाओं का समाधान करने की सामर्थ्य उसमें है, वैसे शंकाशून्य भक्त के मन में अनेक शंकाएं पैदा करने की सामर्थ्य भीउसमें पड़ी है। शंकराचार्यने अनेक भाष्य लिखे,लेकिन आखिर,सामान्यजनों के लिए स्तोत्र लिखे, उसमें क्या कहा? 'गेयं गीता-नामसहस्रम्' कहा। प्राचीन काल में सहस्रनाम नहीं कहते थे, नामसहस्रम् कहते थे। 'नाम्ना सहस्रम्' यह प्राचीन संस्कृत पद्धति हुई। बचपन में मैंने 'गेयं गीतानामसहस्रम्' पढ़ा, तब मुझे उसका यह अर्थ मालूम नहीं था। गीता का ही नाम हजार बार बोलना, ऐसा अर्थ मैं समझा था। बाद में संस्कृत का ज्ञान हुआ, तब सही अर्थ ध्यान में आया। शंकराचार्य महान ज्ञानी, लेकिन सामान्यजनों से बात करने का मौका आया, तब

उन्होंने गीता और विष्णुसहस्रनाम की बात की। यह क्यों किया? इसलिए कि लोगों में भक्तिभावना होती है, उस भक्तिभावना को दृढ़ करना होता है। सामान्य लोगों के लिए यही परमार्थ का साधन है। उनके सिर पर ज्ञान लाद कर यह नहीं कर सकते। तुकाराम ने कहा, ये हजार नाम हमारे हजार हथियार हैं। उन्होंने अपनी कन्या की शादी करायी,तो दामाद को दहेज के रूप में क्या दिया? अपने हाथ से लिखी विष्णुसहस्रनाम की प्रति दी। तो विष्णुसहस्रनाम का पारायण करने से ही लाभ हो जाता है।

पारायण में जो लाभ होता है उसमें प्रकट लाभ तो है ही, लेकिन मुख्य लाभ है वह गूढ़ लाभ है। प्रकट लाभ यह है कि वाणी जरा स्वच्छ होती है,पढ़ना आता है और गूढ़ लाभ यह है कि पारायण में स्नान हो जाता है। नदी में स्नान करने से शरीर को जैसे आपादमस्तक ठंडक पहुंचती है, वैसे ही पारायण करने से। उससे केवल बुद्धि को या वाणी को ही लाभ है, ऐसा नहीं, वह सर्वांगीण स्नान है।

पारायण का दूसरा लाभ है कालक्षपणहेतवः। काल कैसे जायगा? जेल में मैं जमनालालजी के साथ शतरंज खेलता था। बचपन में मुझे शतरज का शौक था। खूब खेलता था। एक दिन रात को सपने में शतरंज आया, तो मैंने दूसरे दिन से शतरंज खेलना छोड़ दिया। मैंने सोचा, जब यह सपने में आता है, तो हम पर आक्रमण कर रहा है, इसलिए अब उसको छोड़ ही देना चाहिए। लेकिन उस खेल के लिए मेरे मन में आदर है। गंजीफा में नसीब पर ज्यादा निर्भर रहता है। शतरंज में बिल्कुल आमने-सामने सेना खड़ी होती है, खुले दांव चलते हैं। जेल में दूसरा उद्योग था नहीं, तो खेलना आरम्भ किया। वे बहुत अच्छे खेलते थे। मैं ऐसे ढंग से खेलता था कि उनकी जीत हो जाती थी। एक दिन बोले, आप पूरा ध्यान लगाते हुए दिखते नहीं। आखिर एक दिन पूरा ध्यान लगाया। उन्होंने भी लगाया। न वे हारे, न मैं हारा। तब मैंने कहा, दूसरे दिन तक दांव रखना ठीक नहीं, या आप हारने की तैयारी करिए या मैं कर रहा हूं।

एक दफा, मैंने कृत्रिम दांत रखे थे। उस समय मैं दिल्ली में था। एक दिन मावलंकर मुझे मिलने के लिए आये। मैं दांत साफ कर रहा था। १५-२० मिनट लगे उस काम के लिए। बाद में उन्होंने मुझे लिखा, "वह काम तो दूसरा कोई मनुष्य भी कर सकता था। और आप उस समय का उपयोग दूसरे काम के लिए कर सकते थे। आपका इतना समय रोज उसमें क्यों जाना चाहिए?" मैंने

जवाव में उनको लिखा, "जिस समय चित्त निर्विकार रहता है, उस समय को मैं सार्थक मानता हूं। जिस समय चित्त में विकार आये, फिर चाहे कोई भी काम करते हों, वह समय वेकार गया, ऐसा मानता हूं।" उन्होंने इसका जवाव दिया कि आज हमें नयी दृष्टि मिल गई। तो जो भी काम हम करते हैं, उसमें चित्त निर्विकार रखने का अभ्यास करना चाहिए। पारायण से इसको मदद मिलती है।

सामूहिक पारायण का और लाभ होता है। प्राचीन पुराणों में ऋषियों की तपस्या का जिक्र आता है। फलाने ऋषि ने हजार उपवास किये। इसका क्या मतलब ? गांधीजी ने २१ दिन के उपवास किये थे। मैंने भी उनके साथ उपवास किये। मेरा और उनका वैसा करार ही था। उनके उपवास की खवर एक दिन देरी से मुझे मिली, इसलिए मेरे २० दिन के उपवास हुए। उस वक्त मैंने एक विचार रखा था कि मान लीजिए, गांधीजी ने २१ दिन के उपवास किये और हजार लोगों ने उनके साथ उपवास किये, तो पुरानी भाषा में कहा जायगा कि गांधीजी ने २१,००० उपवास किये। १००० लोगों ने सामूहिक उपवास किये और जिसकी प्रेरणा से उपवास किये उसका नाम लिया जायगा। फलाने ऋषि ने १,००० उपवास किये, ऐसा हम पढ़ते हैं,तो हमको वड़ाअजीव लगता है। लेकिन उसका मतलव यह है कि जिस ऋषि की प्रेरणा से उपवास किये, उनके नाम पर सारे उपवास माने गए। यह भाष्य मुझे उस वक्त सूझा। तवतक माना जाता था कि पुराने लोगों को वड़े-वड़े आंकड़े सुनाने की आदत है, वह हमारे उपयोग की वात नहीं। लेकिन वह सामूहिक उपासना का चिह्न है। 'शतं वैखानसाः'। सौ तपस्वियों ने मिलकर सूक्त वनाया। २५-३० मंत्रों का सूक्त है। जंगल में नग्न तपस्या करनेवाले ऋषि थे। उनका नाम वैखानस। 'शतं वैखानसाः' का क्या मतलव ? मतलव, एक मुख्य मनुष्य होगा, वह सूक्त वनाता होगा, वाकी लोग वैठते होंगे। चर्चा होती होगी, अर्थ होता होगा, आवश्यक फरक होता होगा—सामूहिक सूक्त वनता होगा सव ऋषियों की मदद से।

वैसे ही पारायण की वात है। हम यहां रोज मान लें, २० लोग विष्णुसहस्र-नाम का पारायण करते हैं, तो रोज हमारे २० पारायण होते हैं, महीने में ६०० पारायण होते हैं। यह सामूहिक उपासना की पद्धति है। सामूहिक ध्यान, सामूहिक पारायण, इसका एक विशेष महत्त्व है।○

अविरोध-साधक

विष्णुसहस्रनाम के भक्तों के लिए खास सिफारिश शंकराचार्य की ओर से की गई है। उसका एक कारण यह है कि वह सर्वसंग्राहक है। हिन्दुस्तान में जितने पन्थ हैं, उन सबकी तरफ समान दृष्टि से देखता हैं। उन सबमें अविरोध पैदा हो, उनकी एकता हो, समन्वय हो, ऐसी शक्ति विष्णुसहस्रनाम में पड़ी है। विष्णु के सहस्र नाम हैं, इसलिए वैष्णवों का समाधान होता है। शिव, स्थाणु, ऐसे भगवान शंकर के नाम उसमें हैं, तो शैवों का समाधान हो गया। सिद्धार्थ गौतम बुद्ध का नाम ", तो बौद्धों का उल्लेख हो गया। वर्धमान महावीर का नाम है, तो जैनों का संग्रह हो गया। स्कंद यानी कार्तिकस्वामी, उनका एक स्वतन्त्र पन्थ है। उन दिनों सूर्य की भक्ति करनेवाले लोग थे। सूर्य का तो विष्णुसहस्रनाम में अनेक बार उल्लेख आया है। अग्नि का भी नाम है, जिससे अग्निपूजकों का समाधान होता है। विनायक—गणपति का भी उल्लेख है—ज्योतिर्गणेश्वरः। शंकराचार्य ने इसकी व्याख्या की, "तारकाओं का ईश्वर।" लेकिन ज्योतिः गणेश्वरः, इस तरह अलग-अलग लें, तो गणेश्वर यानी गणपति, विनायक ऐसा अर्थ होता है। इस प्रकार भिन्न-भिन्न धर्मपन्थों का उल्लेख उसमें है।

इसपर कोई भी पूछ सकता है कि विष्णुसहस्रनाम तो इतना पुराना है,उसमें गौतम बुद्ध का नाम कैसे आया? विष्णुसहस्रनाम महाभारत में आया है यानी पांच हजार साल पुराना है और गौतम बुद्ध तो सिर्फ ढाई हजार साल पहले का है? इसका उत्तर यह है कि शब्द पुराना है। हम राम कहते हैं। राम कौन? दाशरथी राम तो है, लेकिन भार्गवी राम भी है। परशुराम भी है। बाद में बल-राम भी आया,और यहां अपना रामभाऊ भी है। तो रामभाऊ से लेकर परशुराम तक शब्द चला। मतलब राम शब्द बहुत पुराना है। सबके अन्तर में जो राम है, उसका नाम दशरथ ने अपने पुत्र को रखा। उसी तरह सिद्धार्थ नाम है। गौतम बुद्ध को उसके पिता ने जो नाम रखा, वह प्राचीन काल से चला आया शब्द था। शब्द पुराना है। इस तरह सब पंथों के नाम विष्णुसहस्रनाम में समाविष्ट हैं। परिणाम यह हुआ कि उन दिनों जो वाद थे, झगड़े थे, पंथ थे, वे सब मिट गये विष्णुसहस्रनाम में।

इस बात की तरफ माधवदेव ने सबका ध्यान बहुत अच्छी तरह से खींचा है:

विष्णुर सहस्र नाम थाकंतो जिव्हाए
ताक एरि। सदा विरोध वचन मात्र रटय।

कहते हैं, कैसे मूरख लोग हैं। विष्णु के सहस्र नाम बोलते हैं, फिर भी एक-दूसरे के विरुद्ध वचन बोला करते हैं, सदा विरोधी वचन मात्र रटते हैं। यह उसका दोष कहता है, वह इसका दोष कहता है। 'विष्णुसहस्रनाम होतेहुए भी' कहा, मतलव, विष्णुसहस्रनाम अविरोध-साधक है। जो लोग रोज विष्णुसहस्रनाम गाते हैं, उनके मुख से कभी विरोधी वचन नहीं निकलना चाहिए, ऐसी अपेक्षा होती है।

इतना व्यापक विष्णुसहस्रनाम! लेकिन क्या आज वह अव्यापक हो गया है? आज भारत का सम्बन्ध सिर्फ जैन, बौद्ध, इनसे ही नहीं, पारसी यहूदी, ईसाई, मुसलमान इनसे भी आया है, तो इनका सम्बन्ध विष्णुसहस्रनाम में बताना क्या शक्य होगा? बाबा ने नाममाला बनायी। उसके तीन श्लोकों में दुनिया-भर के धर्मों के मुख्य-मुख्य नाम आ जाते हैं। यह्व यहूदियों का नाम, मज्द पारसियों का नाम, ईशु-पिता (ईशु यानी जीसस का पिता भगवान) ईसाइयों का नाम, रहीम मुसलमानों का नाम, ताओ चीनियों का नाम, इस प्रकार सब धर्मों के नाम उसमें आ गये। उसके तीन श्लोक भारत-भर में लोकमान्य हो गए हैं, केरल से असम तक। आज केवल भारतीय विचारों के समन्वय से काम पूरा नहीं होता, दुनिया में दूसरे अनेक धर्म हैं, उन सबका समन्वय करना चाहिए, इसलिए हमने ये तीन श्लोक बनाये। लेकिन अगर किसी के मन पर यह असर पड़ा हो कि विष्णुसहस्रनाम की पूर्ति बाबा ने की, तो वह असर गलत है। विष्णुसहस्रनाम में ऐसी सामर्थ्य है कि वह दुनिया-भर के विचारों का समन्वय करता है, शब्दतः नहीं, अर्थतः। कोई यह अपेक्षा करता हो कि विष्णुसहस्रनाम में फारसी के या अरबी के शब्द हों, तो यह अपेक्षा ठीक नहीं होगी। नाम माला में हमने मज्द, यह्व, रहीम कह दिया, तो आज के जमाने में, भिन्न-भिन्न धर्मवालों को वह रुचिकर हो सकता है इतना ही, लेकिन रुचिकर होने के अलावा और कोई देन उससे विष्णुसहस्रनाम में जोड़ी गई है, ऐसा नहीं।

विष्णुसहस्रनाम प्राचीन ग्रन्थ है, एक द्रष्टा का ग्रन्थ है, अर्थतः सब धर्मों का सार उसमें है। इस्लाम क्या कहता है? अल्लाहुनुरुस्समावाति वल अरद्—अल्लाह प्रकाश है—आसमान का। विष्णुसहस्रनाम में देखिए, प्रकाशात्मा प्रतापनः (प्रकाश देनेवाला, तपानेवाला) कहा है। अल्लाहुनुरुस्समावाति से वे जो

कहना चाहते हैं, वही प्रकाशात्मा प्रतापनःमें मिलेगा। फिर अल् मिलकु—भगवान मालिक है। विष्णुसहस्रनाम में है लोकस्वामी त्रिलोकधृक्—तीन लोकों को धारण करनेवाला, तीनों लोकों का स्वामी। अल् मिलकु का ही यह अर्थ है। अर्थतः दोनों शब्द एक ही हैं। अब कोई यह अपेक्षा करे कि अल् मिलकु शब्द ही विष्णुसहस्रनाम में आना चाहिए, तो उसे महामूर्ख खिताब देना होगा। क़ुर्आन में और नाम हैं, क़ुद्दूसु यानी शुभ, पवित्र और सलाम यानी शांति। विष्णुसहस्रनाम में है, शुभांगः शांतिदः। इसमें क़ुद्दूसु भी आ गया और सलाम भी आ गया। इस्लाम का एक अत्यन्त प्रसिद्ध नाम है गफ्फार। गफ्फार यानी क्षमिणांवर यानी अत्यन्त क्षमा करनेवाला। मामूली क्षमा नहीं, अत्यन्त क्षमा। गफ्फार का संस्कृत तर्ज़ुमा करना हो तो क्षमिणांवरः ही होगा। यह विष्णुसहस्रनाम का शब्द है। इस्लाम में भगवान के ९९ नाम माने गये हैं। अर्थतः विचार किया जाये, तो उसमें से बहुत सारे नाम आपको विष्णुसहस्रनाम में मिल जायेंगे।

मैंने कभी यह भी कहा कि क्रिश्चनिटी में ट्रिनिटी (त्रि-तत्त्व) की कल्पना है, वह विष्णुसहस्रनाम में भी है। ईसाई मानते हैं कि विश्व में ट्रिनिटी है—ईसा-मसीह, पवित्र आत्मा और परमात्मा। वही विष्णुसहस्रनाम में है, पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानांपरमागतिः। ईसाइयों की ट्रिनिटी इसमें आ जाती है।

यहूदियों का शब्द है यह्व। यह्व यानी अत्यन्त बलशाली—समर्थ, महाबुद्धिः महावीर्यः महाशक्तिः महाद्युतिः, इन सबमें यह्व का अर्थ आ जाता है। यह्व और शक्ति एक ही है।

पारसियों का शब्द है मज्द। मज्द जो होता है, वह महान होता है। महत् का मज्द बना। यह फारसी रूप है। वेद में महत् शब्द आया है—महत् देवानां असुरत्वमेकम्—सब देवों में एक परमेश्वर महान है। असुर यानी राक्षस नहीं, असुर यानी परमेश्वर। पारसियों के नाम हैं, अहुरा मज्दा—महान परमेश्वर। विष्णुसहस्रनाम में है—गुणभृन् निर्गुणो महान्—सब गुणों का धारण करने वाला, उन गुणों से परे महान। यह वर्णन किसी भी पारसी और यहूदी को सुनाया जाय, तो वे उसे सहज स्वीकार करेंगे।

ये मिसालें मैंने इसलिए दीं कि ध्यान में आ जाय कि विष्णुसहस्रनाम में सब धर्मों का समन्वय करने की पूर्ण सामर्थ्य है। इसलिए मेरी बहुत श्रद्धा है विष्णुसहस्रनाम पर। तरह-तरह के अर्थ इसमें से निकल सकते हैं।

संस्कृत में यह सामर्थ्य है। संस्कृत शब्द जितना रस खींचा जा सकता है उतना खींच लेता है। कृष्ण शब्द का अर्थ देवकी का लड़का ऐसा किया, तो वह गलत होगा। कृष्ण यानी प्रेम से आकर्षण करनेवाला। उसमें कृष् (खींचना) धातु है। राम का अर्थ दशरथ का बेटा करना गलत होगा। राम यानी सबके हृदय में रमनेवाला, सत्यस्वरूप, अधिष्ठानरूप परमात्मा। हरि यानी दुःखों का हरण करनेवाला, कल्याणमय, प्रेममय कृष्ण, सत्यमय राम, करुणामय हरि। इस प्रकार अर्थ करेंगे, तो हमने ठीक अर्थ किया, भगवान व्यास की कल्पना के अनुरूप अर्थ हमें मिला।

विष्णुसहस्रनाम की प्रस्तावना में भगवान व्यास ने लिखा है, यानि विख्यातानि गोणानि नामानि—परमात्मा के जो विख्यात और गौण नाम हैं, वे हम यहां दे रहे हैं। गौण का हिंदी या मराठी में जो अर्थ होता है, वह यहां नहीं है। मुख्य-गौण के अर्थ में गौण नहीं कहा है। संस्कृत में गौण का अर्थ है गुणवाचक। विख्यातानि यानी अत्यंत प्रख्यात। विख्यात है, का मतलव है कि ये सारे नाम वेद-उपनिषद आदि ग्रंथों में प्रचलित हैं। वहीं से लेकर इकट्ठे किये हैं। प्रत्येक नाम गौण यानी गुणवाचक है, यह ध्यान रखना होगा। भगवान के गुण कितने हैं? लाख भी हैं, कोटि भी हैं, अनंत भी हैं। तुलसीदासजी लिखते हैं, राम कैसा है? 'राम अनंत-अनंत नामानि' राम अनंत हो गये। ठीक यही बात बचपन में हमने पढ़ी थी। रामदासस्वामी ने लिखा है—'चौबीस नामी। सहस्रनामी। अनंतनामी। तो अनामी।' ब्राह्मण संध्या करते हैं, उसमें भगवान के चौबीस नाम आते हैं और विष्णुसहस्रनाम में हजार नाम हैं। वह ध्यान में लेकर कहा। और उसके नाम विष्णुसहस्रनाम में ही सीमित हैं, ऐसा तो है नहीं, इसलिए अनंतनामी कहा और आखिर कहा अनामी। उसको कोई भी नाम लागू नहीं होता। वह कैसा है? अंतर्यामी जो विवेके ओळखावा। वह अंतर्यामी है, पहचानने की बात है। वास्तव में वह अनामी है, यानी कोई भी नाम उसे लागू नहीं होता। वह सब नामों से परे है।

ठीक यही बात विष्णुसहस्रनाम में आती है—शब्दातिगः शब्दसहः। भगवान कैसे हैं? शब्द के उस पार हैं। शब्द सहन करते हैं। 'विश्वं विष्णुः' कहने से भगवान की निंदा होती है, लेकिन वह सहन करता है। ज्ञानदेव महाराज ने लिखा है, 'स्तुति ते तुझी निंदा। स्तुति जोगा नव्हेसि गोविंदा।' हम तेरी स्तुति करते

हैं, पर वास्तव में तेरी निंदा होती है, क्योंकि हम अपने शब्दों में तुम्हारा वर्णन करते हैं और तुम तो शब्द से परे हो। बच्चा कुछ-न-कुछ बोलता रहता है। 'राम-राम' नहीं बोल सकता, तो 'लाम-लाम' कहता है और मां 'शाबाश' कहती है। वैसे हमारा जो कुछ उच्चारण होता है शब्द में, उसे भगवान सहन कर लेते हैं। शब्द में तो वे आ नहीं सकते, परंतु हम लाते हैं। शब्द में आना, यानी नीचे उतरना। फिर भी वे सहन करते हैं।

शब्दातिगः शब्दसहः

शब्द के उस पार हैं, फिर भी शब्द को सहन करते हैं। ○

सर्वलक्षणलक्षण्यः

विष्णुसहस्रनाम में एक नाम है, 'सर्वलक्षणलक्षण्यः।' यह जो नाम है, वह ऐसा है कि भगवान के जितने भी नाम होंगे, वे सब-के-सब इसमें आ जाते हैं। ऐसा एक सर्वसमावेशक नाम दे दिया, सर्वलक्षणलक्षण्यः, जिसका अर्थ है सर्वलक्षणों से लक्षित होनेवाला। यही ध्यान में लेकर तुकाराम ने कहा था, 'तुका म्हणे जे जे बोला, ते ते साजे या विट्ठला।' इस विट्ठलके बारे में जो भी बोलेंगे, वह सब-का-सब उसे शोभा देगा। जितने भी लक्षण बोलो, परस्पर विरोधी भी बोलो, सभी ठीक ही हैं। जो भी नाम हो, वह भगवान का है। भगवान सिंह है, गरुड़ है, वृषभ यानी बैल है। सिंहः सुपर्णः वृषभः ऐसे अनेक पशुओं के नाम भी विष्णुसहस्रनाम में आये हैं। उसी तरह, ओदुंबर, अश्वत्थ, वट ऐसे वृक्षों के नाम भी आये हैं। जितने वृक्ष होंगे, सब भगवान हैं। पशुओं के नाम लिये, पक्षियों के नाम लिये, वृक्षों के नाम लिये, सब भगवान के नाम हैं। मतलब, गुणरूपेण, अंशरूपेण, भगवान इन सबमें है। तुकाराम ने एक बार कहा, "हे भगवान, आज तुझपर मुझे बहुत गुस्सा आया है, तो मैं आज तुझे गाली दूंगा।" यों कहकर गाली देना आरंभ किया, तो क्या कहा ? "बैल तू देवा भारवाही।" भगवान का यह नाम भी विष्णुसहस्रनाम

में आया है—भारभृत्। भारभृत यानी भार वहन करनेवाला। भार वहन करने-वाला बैल भी हो सकता है, गधा भी हो सकता है। भगवान सबका भार उठाने-वाला है। भगवान के ही सब रूप हैं। इस तरह से अनंतरूपी भगवान हैं।

रामानुज ने एक बहुत ही सुंदर विचार दिया है। भाषा में जितने शब्द हैं, सब-के-सब भगवानवाचक हैं। कोष में जितने शब्द हैं, उन सबको यह लागू होता है। कोई भी शब्द लें, उसका पहला अर्थ भगवान होगा। फिर उस शब्द का जो अर्थ होगा, वह उसका दूसरा अर्थ होगा। पत्थर ! पत्थर भी भगवान है। पत्थर का पहला अर्थ भगवान। दूसरा अर्थ ढेला, एक मजबूत पदार्थ···। भगवान पत्थर के समान मजबूत हैं। मक्खन। पहला अर्थ भगवान। दूसरा अर्थ, गाय के दूध से जो एक विशिष्ट पदार्थ बनता है, वह। भगवान मक्खन जैसे मुलायम हैं। करुणा-वान, कोमल हैं। रामानुज ने कहा, भाषा में जितने भी शब्द हैं, सब-के-सब परात्मवाचक हैं। उन्हींमें से एक हजार नाम चुनकर नमूने के तौर पर विष्णु-सहस्रनाम में लिये गए हैं।

हर नाम, हर वस्तु भगवान है। कौआ आया, 'कांव कांव कांव' बोलने लगा। भगवान आये हैं, उनका स्वर सुन लीजिए, कौए का स्वर भगवान का ही स्वर है।

> पैल तो गे काऊ कोकताहे। शकुन गे माये सांगतसे
> ऊड़ रे ऊड़ रे काऊ। तुझे सोनेनि मढ़वीन पाऊ
> पाहुणे पढरिराऊ। धरा कैं येती।

ज्ञानदेव कौए से पूछते हैं, "अरे कौआ, तू मुझे शकुन बता, मेरे घर में पंढरीनाथ कब आयेंगे ?" कौआ कौन है ? भगवान की तरफ से संदेश लानेवाला है। हर वस्तु की तरफ इस तरह देखें कि जितने भी पदार्थ हैं, सब भगवान का रूप हैं, तो एक विशाल दृष्टि मिल जाती है। इसलिए सहज ही मेरा मन खींच लिया उस शब्द ने—सर्वलक्षणलक्षण्यः।

लेकिन विष्णुसहस्रनाम में जो चमत्कार है, वह उसके पहले शब्द में है—ॐ विश्वं विष्णुः वषट्कारः। पहले विश्वम् कहा, फिर विष्णुः कहा। विश्वम् पहले लिया, वह कविता के छंद की दृष्टि से लिया होगा, ऐसा मानने का कारण नहीं। वह कोई साहित्य-कृति थी नहीं। और 'ॐ विष्णुः विश्वं वषट्कारः' ऐसा बोलने में भी कोई बाधा नहीं आती, ठीक जमता है। लेकिन विश्वम् ही पहले लिया,

क्योंकि विश्वम् ही भगवान का पहला, प्रत्यक्ष, वाह्य प्रकट रूप है और विष्णुः उसके अंदर छिपा हुआ है, उसके अंदर प्रवेश किया हुआ है। वाह्यरूप विश्व है, प्रत्यक्ष रूप विश्व है, अंदर भगवान है। इसलिए,

आंख न मूंदो, कान न रूंधो
तनिक कष्ट नहिं धारौं
खुले नैन पहिचानौं
हंसि हंसि सुंदर रूप निहारौं
साधो सहज समाधि भली

दूसरा कोई सामने खड़ा होता, तो आंखें वंद करना पड़ता, लेकिन आंखें वंद करने की जरूरत नहीं, साक्षात् परमात्मा ही सामने खड़ा है। सामने परमात्मा ही बोल रहा है, दूसरा कोई नहीं है। कौआ बोल रहा है, तो सुनें, कान खोलकर सुनें, वह भगवान का ही शब्द है, नहीं तो परमात्मा को देखने के लिए कितना कष्ट करना पड़ता है। आसन (पलथी) लगाओ, सीधा बैठो, आंखें बंद करो··· उसमें कितनी तकलीफ है। लेकिन कबीर कहते हैं, "तनिक कष्ट नहीं धारौं। खुले नैन पहचानौं। हंसि हंसि सुंदर रूप निहारौं।" मुख्य बात है पहचानने की। इसलिए विष्णुसहस्रनाम में पहला ही नाम दिया—विश्वम्। वह एकदम ध्यान खींचता है।

सन्तः

जैसे स्नान करने से शरीर निर्मल होता है और प्रसन्नता मालूम होती है, वैसे ही भगवत् चिंतन से आध्यात्मिक स्नान होता है और बहुत प्रसन्नता का अनुभव होता है। प्रसन्नता क्या चीज है और किस तरह आती है, इसकी चिंता हम नहीं करते। लाख कोशिशें और चर्चा करेंगे, तो भी उसकी मीमांसा नहीं होने वाली है। अनेकों ने मीमांसा की है, लेकिन उसमें किसी को यश नहीं मिला।

परमेश्वर के स्मरण से, नाम-मात्र के उच्चारण से प्रसन्नता कैसे आती है, यह

गहरा विषय है। एक मामूली-सी बात है निद्रा की अनुभूति। निद्रा की अनुभूति सबको होती है, लेकिन निद्रा किस तरह आती है, इसकी कोई मीमांसा अभीतक नहीं हुई है। योग-शास्त्र में कहा है, अभाव-प्रत्ययालंबना वृत्तिः निद्रा—निद्रा एक वृत्ति है, जिसका आधार अभाव की अनुभूति है। उपनिषद कहती है कि निद्रा में जीवात्मा परमात्मा में लीन हो जाता है और अज्ञान की उपाधि चित्त को रहती है। सील-बंद किया हुआ लोटा नदी में लीन होता है, उसी तरह जीवात्मा, अहंकार-वेष्टित आत्मा परमात्मा में लीन होता है। अगर वह अहंकार-वेष्टित न हो, तो पानी में पानी मिल जायेगा। मुक्ति का अनुभव आयेगा। लेकिन निद्रा में सील-बंद लोटा पानी में डालने-जैसी अनुभूति होती है, यानी मुक्ति का इतना अनुभव आता है। वैज्ञानिकों ने निद्रा की ज्यादा व्याख्या की है और कहा है कि निद्रा में भी जाग्रति होती है और जाग्रति में निद्रा होती है। जाग्रति में एक क्षण पूर्ण जाग्रति, एक क्षण थोड़ी निद्रा…इस प्रकार चलता है; निद्रा में एक क्षण गाढ़ निद्रा, एक क्षण थोड़ी जाग्रति…ऐसा चलता है। उसके अलावा स्वप्न भी आते हैं तो जाग्रति का मसाला बढ़ता है। जाग्रति में आलस्य आये, तो निद्रा का मसाला बढ़ता है। विज्ञान, उपनिषद की अनुभूति, योग-शास्त्र का आधार आदि सब मिलकर भी निद्रा की व्याख्या नहीं हो सकती। संतों ने कहा है, "जब चाहो तब खोलो किवरवां", इस तरह चाहे जब निद्रा और चाहे जब जाग्रति, यह अनुभूति सबको नहीं होती।

जहां निद्रा की यह बात है, वहां भगवद्भाव का चित्त पर क्या असर होता है, नाम-स्मरण से प्रसन्नता कैसे निर्माण होती है, यह कौन बतायेगा ? मैं गीता का परम भक्त हूं, तिस पर भी गीता के पठन का मुझपर वह असर नहीं होता है, जो विष्णुसहस्रनाम के पठन का होता है। गीता में चिंतन-मनन होता है। जीवन के साथ उसका संबंध रखते हैं, तो बहुत लाभ होता है, बहुत बड़ी खुराक उससे मिलती है। लेकिन विष्णुसहस्रनाम से स्नान होता है। खुराक से पोषण मिलता है, ज्ञान, ध्यान, कर्म, भक्ति, योग, चित्त-विकास, विभूति-विस्तार, आत्मानात्मविवेक आदि विविध खुराक गीता से मिलती है, जिससे पुष्टि मिलती है। लेकिन विष्णुसहस्रनाम से स्नान होता है, मन धुल जाता है, तो वह एक विशेष अनुभूति है।

इसके अलावा मुझे ऐसा भी अनुभव है कि कहीं मैं खुली हवा में जाता हूं, पहाड़, नदी, आसमान की तरफ देखता हूं, तो किसी तरह मेरे अंतर्गत भाव खुल

जाते हैं। यह नहीं कि इस तरह के स्नान के लिए विष्णुसहस्रनाम अनिवार्य है। अनिवार्य कुछ भी नहीं है, सिवा इसके कि हमारा दिल खुला हो, जिससे भगवद्-भाव, सद्भाव दिल में प्रविष्ट हो सके। इसके लिए दिल खुला हो, इससे अधिक कुछ नहीं चाहिए। चित्त का दरवाजा खुला हो, निःशंक, निरुपाधिक भाव हो, तो वह अनुभूति कहीं भी आ सकती है।

विष्णुसहस्रनाम में भगवान के हजार नाम वताये हैं। उसके असंख्य गुण हैं और असंख्य नाम हैं। मनुष्य की वाणी से उसके गुण प्रकट हों, यह असंभव है। जो परम ज्ञानी है, वाग्वीर है, भगवत्कृपा से जिनमें वाक्शक्ति का प्रादुर्भाव हुआ है, उनकी वाणी भी छोटी पड़ती है, जहां भगवद् वर्णन का प्रसंग आता है। लेकिन साधकों की साधना के लिए ये सारे साधन वताये गए हैं, जिनमें विष्णुसहस्रनाम भी एक है। वह अंतर्यामी भगवान कैसा है, यह विवेक से ही जाना जा सकता है।

आज मैं विष्णुसहस्रनाम पढ़ रहा था, तो एक शब्द की तरफ मेरा ध्यान खिंचा। इस तरह कभी-कभी कोई शब्द ध्यान खींचता है। विष्णुसहस्रनाम में व्याकरण के अनुसार भगवान के नाम एक वचन में वताये हैं। जैसे दामोदरः, केशवः, माधवः। परंतु एक नाम वहुवचन में आया है, जो एकदम ध्यान खींचता है। वाकी कुल-के-कुल नाम एकवचन में और एक ही नाम वहुवचन में। वह नाम है सन्तः। इसपर मैं खूब सोचता रहा। सन्त नाम का कोई अकारांत शब्द होता, तो उसका एकवचन सन्तः होता। लेकिन ऐसा कोई शब्द नहीं। सन्तः वहुवचन ही है। सारे एकवचनों के प्रवाह में यह एक वहुवचन वाला शब्द कुछ अटपटा-सा लगता है।

सन्तः। सत्पुरुषों के समूह को भगवन्नाम के तौर पर ग्रहण किया है और यह वहुवचन का शब्द वनाया है। किसी एक सत्पुरुष को भगवान माना जा सकता है। ऐसे, पत्थर को भी भगवान माना जा सकता है। अश्वत्थ वृक्ष को भी भगवान माना गया है, तो फिर सत् एकवचन में ही क्यों नहीं कहा गया? सत्पुरुषों में एक-एक भगवत्कला प्रकट होती है, तो साकल्य का आरोप किसी एक पर करना कठिन होता है। मानव होने के नाते सत्पुरुष में भी कुछ दोष गुण-च्छाया के रूप में होते हैं। उनको दोष नहीं मानना चाहिए, वल्कि गुण की छाया मानना चाहिए। फिर भी उसपर साकल्य का आरोप करना कठिन मालूम होता है। सृष्टि के अचेतन पदार्थों पर साकल्य का आरोप सहजरूप से हो सकता है।

परंतु किसी पुरुषविशेष पर भगवान आरोप किया जाय, यह कठिन है। बहुत हुआ तो उस पर भगवत अवतार का आरोप किया जा सकता है। उसमें भगवत अंश है, ऐसा कहा जा सकता है। भगवान कृष्ण को हम पूर्ण अवतार मानते हैं, वह हम अपनी कृष्णभक्ति के कारण कहते हैं, लेकिन पूर्ण और अवतार, इन दो शब्दों में ही विरोध है। इसलिए शंकराचार्य ने गीताभाष्य में कहा कि भगवान अपने एक अंश में कृष्णरूप में प्रकट हुए, बावजूद इसके कि जमाना बोल रहा था कि कृष्ण पूर्णावतार है। कृष्ण को पूर्णावतार माना गया, वह भक्तों की भावना की भाषा है। लेकिन शंकराचार्य की भाषा में कहा गया कि किसी एक पुरुषविशेष पर साकल्येन परमात्मा का आरोप नहीं किया जा सकता, क्योंकि उसमें गुणदोष होते हैं।

हजारों वर्षों के बाद किसी पुरुषविशेष का नाम अनेक भावनाओं का पुट चढकर भगवन्नाम बन जाता है। जैसे होमियोपैथी में घोटकर दवा की पोटेन्सी (शक्ति) बढ़ायी जाती है, वैसे ध्यान से नाम की पोटेन्सी बढ़ती है। मर्दनं गुणवर्धनम्। जितना मर्दन किया जाय, उतनी गुणवृद्धि होती है। भगवान के नामों का ध्यान करके असंख्य ऋषियों ने अपने ध्यान के पुट किसी नाम पर चढ़ाकर उसकी पोटेन्सी बढ़ायी हो, यह होता है। अगर मैं नया विष्णुसहस्रनाम लिखूं, तो उसके नाम पर मेरे ही ध्यान का पुट चढ़ेगा, लेकिन पांच हजार वर्षों से ऋषि-मुनियों के ध्यान के पुट जो आज के विष्णुसहस्रनाम पर चढ़े हैं, वैसे उसपर नहीं चढ़ेंगे। लेकिन मुमकिन है, मैं नयी गीता लिखूं, तो पुरानी गीता के गुणों को लेकर उसमें और वृद्धि भी कर सकूं। यह काम तो कोई असामान्य पुरुष ही कर सकेगा, फिर भी वह संभव है। परंतु विष्णसहस्रनाम पर जो अनेकों के ध्यान के पुट चढ़ चुके हैं, वे नये नामों पर कैसे आयेंगे? नये नामों में उनका आविर्भाव कैसे होगा? उसके हर नाम पर ध्यान से पुट चढ़े हुए हैं। किसी एक पुरुषविशेष के नाम पर ध्यान के पुट चढ़ते-चढते, उसके गुणों का बढ़ाव और दोषों का घटाव होते-होते आखिर गुण ही रह गये, यह होता है और किसी एक अवतार पर पूर्णता का आरोप किया जाता है।

इस तरह कभी-कभी ध्यान का पुट चढ़ते-चढ़ते कोई एक पुरुषविशेष ईश्वर की योग्यता पा लेगा, लेकिन सामान्यतया एक पुरुष पर साकल्य का आरोप करना असंभव है। इसलिए सन्तः बहुवचनांत शब्द इस्तेमाल किया गया। सत्पुरुषों का

समूह भगवत समूह ही है। सत्पुरुषों की एक ही जमात है। फिर वे दुनिया के किसी भी गोशे में पैदा हुए हों, उनका एक नाता है। उन सबका अंदरूनीताल्लुक है। कुरानशरीफ में कहा है, उम्मतुकुम् उम्मतन् वाहियुतन्—तुम्हारी उम्मत (जमात) वाहिद (एक) है। तुम सब सत्पुरुष, जो दुनिया में रसूल हो गये, सबकी एक ही जमात है। सत्पुरुषों के समूह को ध्यान में लेकर सन्तः इस बहु-बचन का उपयोग किया गया होगा, जो भगवान का नाम बन गया है।○

मम तेजोंऽशः

विश्वमूर्तिः महामूर्तिः दीप्तमूर्तिः अमूर्तिमान्—ये भगवान के चार नाम हैं।

विश्वमूर्ति। गीता के ग्यारहवें अध्याय में भगवान ने विश्वरूप दिखाया है। कुल-का-कुल विश्व भगवान का रूप है। यह रूप अर्जुन को दिव्य दृष्टि से देखने को मिला। वह हमको कहां देखने को मिलेगा? हमारी दृष्टि तो इतनी दूर जाती नहीं। दूरबीन लेकर देखें, तो आसमानके सितारे बड़े दीखने लगेंगे और हमारी दृष्टि को जो नहीं दीख रहे हैं वे कुछ दूरबीन से दीखने लगेंगे, लेकिन दूरबीन से भी दीखते नहीं, ऐसे भी करोड़ों सितारे हैं। दूरबीन से अधिक-से-अधिक इतना ही दीखेगा। तब कुल विश्व कैसे दीख सकेगा? हमको विश्व का एक अंश ही दीखता है, पूरा विश्व दीख नहीं सकेगा। अर्जुन को जो दिखाई दिया, वह दिव्य दृष्टि से दिखायी दिया। विश्वरूप यानी विश्वमूर्ति।

महामूर्ति और दीप्तमूर्ति, ये और दो रूप। महामूर्ति यानी बड़ा, विशाल, वैभवशाली, ऐश्वर्यवान। दीप्तमूर्ति यानी जहां तेजस्विता है, कांति है, बुद्धिमता है। जहां ऐश्वर्य ही नहीं, कांति भी प्रकट होती है, ऐसी मूर्ति दीप्तमूर्ति है। ऐसा बहुत ऐश्वर्यवान या कांतिमान व्यक्ति या वस्तु दीखे, तो उसको भगवान समझ-कर प्रणाम करना चाहिए। ये भगवान के रूप हैं। भगवान को व्यक्त करने के साधन हैं।

ऐसे तो छोटे-मोटे सभी रूप भगवानके ही रूप हैं। लेकिन छोटा रूप एकदम ग्रहण नहीं होता। छोटे अक्षरों में लिखा हुआ 'क' बच्चा एकदम पढ़ नहीं पायेगा, वही बड़े अक्षर में लिखा हो तो वह एकदम पढ़ लेगा। वैसे दुनिया में भगवान के छोटे-छोटे रूप हैं, वे एकदम ग्रहण नहीं होते। इसलिए जो आकर्षक रूप हैं, वे एकदम ग्रहण होते हैं, उन्हें पहले ग्रहण करें, उनका ध्यान करें। ध्यान के लिए दो प्रकारों में से कोई भी चुन सकते हैं—महामूर्तिः दीप्तमूर्तिः।

गीता के दसवें अध्याय में यही है—विभूतियोग। उसमें दोनों प्रकार के रूपों का वर्णन आता है :

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसंभवम्।

लक्ष्मीवान या उदात्त ऐसी जो विभूतियां, या वस्तु हैं, वे मेरे ही अंश हैं। लक्ष्मी-वान या उदात्त। कोई राजा मिला, राष्ट्रपति मिला, वहां ऐश्वर्य प्रकट हुआ, तो भगवान की महान विभूति प्रकट हुई। कोई ज्ञानवान, वैराग्यवान मनुष्य मिला तो भी भगवान की विभूति प्रकट हुई। ऐसे मनुष्य के पास न दंड है, न गाड़ी है, न सेवक है, लेकिन उसके पास ज्ञान है, दीप्ति है। वह भी भगवान का रूप है। भगवान ने कहा, ये विभूतियां हैं, मेरे किरणों से निकली हैं। एक है लक्ष्मीवंत विभूति और एक है उदात्त विभूति। एक है विष्णु के समान ऐश्वर्यशाली, वैभव-शाली, एक है महेश्वर के समान वैराग्यशाली, ज्ञानशाली, ऐसे दो प्रकार की विभूतियां लेकर परमेश्वर को ग्रहण करो, ऐसा पदार्थपाठ दसवें अध्याय में दिया है।

महामूर्ति दीप्तमूर्ति, कहकर—इतना समझा कर—फिर कह दिया अमूर्ति-मान—अमूर्त मूर्ति। इसको मूर्ति है नहीं, आकार है नहीं। पहले स्लेट पर लिखा और फिर साफ मिटा दिया। भगवान कैसे हैं ? अमूर्तिमान। इसका वर्णन गीता में तेरहवें से पंद्रहवें अध्याय तक दिया है। उसमें जो पुरुषोत्तम है, वह अमूर्त है। विश्वमूर्तिः महामूर्तिः दीप्तमूर्तिः अमूर्तिमान।

इस तरह से दस, ग्यारह, तेरह, चौदह, पंद्रह, ऐसे पांच अध्याय एकत्र मिल जाते हैं। विष्णुसहस्रनाम ऐसे चिंतन के लिए थोड़े में सब-कुछ है। जैसे सैक्रीन की टिकिया होती है। एक कण-भर सैक्रीन पानी के एक प्याले में डाल दें, तो सारा पानी मीठा हो जाता है, वैसा यह विष्णुसहस्रनाम है।○

देवकीनंदनः

विष्णुसहस्रनाम में एक नाम है देवकीनंदनः। देवकीनंदन यानी क्या ? जो भगवान् का अवतार कृष्ण के भक्त हैं, वे स्वाभाविक मानेंगे कि देवकी के उदर में जन्मे भगवान् कृष्ण का यह स्मरण है। लेकिन सोचने की बात होती है। देवकी नाम, कृष्ण की माता देवकी से पुराना है। देवकी नाम की कृष्णमाता हो गई, पर नाम तो पहले ही से था, इसलिए उसके पिता ने उसका नाम देवकी रखा। देवकी के साथ वह नाम जन्मा नहीं, पहले था।

क्या अर्थ था उस नाम का ? देवकी यानी भक्ति। आजकल भक्ति नाम रखते ही हैं। देवकी यानी भक्ति। भक्ति के पेट में जन्म पानेवाला भगवान देवकीनंदन या भक्ति से आनन्दित होनेवाला भगवान् देवकीनंदन।

अमृताशः यानी जिसकी आशा अमृत है। जिसकी अमर आशा है, वह अमृताशः। कहीं अमृतांशः छपा हुआ है, वह गलत है। उसका भी अर्थ है, लेकिन शांकरभाष्य के अनुसार अमृताषः होना चाहिए। वैसे ही दिवःस्पृक् है। कहीं दिविस्पृक् छपा है। आधुनिक व्याकरण के अनुसार दिविस्पृक् ठीक है। ऋग्वेद में दिव.स्पृक् शब्द आता है। दिवःस्पृक् चरण के लिए भी अनुकूल पड़ता है। शांकरभाष्य में दिवःस्पृक् ही है। दिवःस्पृक् यानी स्वर्ग में स्थिर, जैसे युधिष्ठिर यानी युद्ध में स्थिर। दिवःस्पृक् यानी स्वर्ग को छूनेवाला। 'दिवःस्पर्शति' यहां षष्ठी कर्म के अर्थ में उपयोग में लाई है।

ऊर्ध्वगः। परमात्मा ऊर्ध्वगामी है। जो साधक निरन्तर ऊर्ध्वगामी रहते हैं, वे दुनिया में परमात्मा की मूर्ति हैं। हमेशा जहां है, उससे ऊपर जाकर कोशिश करनी चाहिए। और इसका भान रखें कि इस दुनिया में ऊंचे चढ़ने का हमेशा बाकी है। यह नहीं होगा कि अब तो पहुंच गये, अब चढ़ने की आवश्यकता नहीं। ऐसा कभी नहीं होगा। परन्तु समाधि में ऊंचे जाने के बाद फिर नीचे आते हैं। वैसा अनुभव नहीं आयेगा। ऊंचे ही जाना है, नीचे आने के लिए अब अवकाश नहीं, इसलिए ऊर्ध्वगामी।

ऊर्ध्वग सत्पथाचारः। इधर एक ओर ऊपर जाने की कोशिश करते हैं और दूसरी ओर सत्पुरुषों के पथ पर चलते रहते हैं, क्योंकि सज्जनों के बनाये रास्ते

से असंख्य लोग जायेंगे, उनके साथ जाना चाहिए। सबके साथ रहने से व्यक्तिगत साधना में भी शक्ति मिलती है और हमारी शक्ति दूसरोंको मिलती है। अन्योन्य शक्तिलाभ होता है। इसलिए सज्जनों का दिया आचरण का, नीति का जो मार्ग है, उस मार्ग से जाना है। इसका मतलब यह नहीं कि इसमें संशोधन नहीं होगा। संशोधन होता रहेगा, लेकिन संशोधन होने के बाद भी यह सत्पथ, सन्मार्ग है।

ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः। प्राणदः यानी दूसरों के लिए प्राण देनेवाला। मनुष्य अपने में प्राण धारण करता है। क्वचित् ऐसा मनुष्य दूसरे के लिए अपना प्राण न्योछावर करने के लिए राजी होता है। भगवान् सबको प्राण देते रहते हैं, नीचे की योनि से ब्रह्मदेव तक।

भ्राजिष्णुः। भगवान खूब तपाता है। लेकिन सहिष्णुः भी है—सहन भी करता है। तपाता भी खूब है, सहन भी खूब करता है। ○

स पिता प्रपिता

विष्णुसहस्रनाम में भगवान के नाम आते हैं—सपिता प्रपितामहः। एक पाठ सविता भी है। लेकिन मैंने स पिता पाठ कुछ बेहतर माना। ऐसे तो इसका निर्णय दे नहीं सकते, क्योंकि वह बहुत पुराना ग्रंथ है और हजारों साल से अनेकों के कंठ में रहा है। इसलिए नये पाठभेद तैयार हुए होंगे। फिर भी, सविता के बदले स पिता—'वह पिता' ठीक लगता है। रवीन्द्रनाथ ने भी कहा है तुमि आमादेर पिता। वेद में भी बहुत दफा यह संज्ञा आयी है और बाइबिल में भी भगवान को पिता की संज्ञा है।

अपने यहां अनेक विचार-श्रेणियां हैं। कुछ भक्ति-संप्रदाय पिता को प्राधान्य देते हैं और भगवान को पिता मानते हैं। दूसरे भक्ति-संप्रदाय, खासकर दक्षिण भारत के, भगवान को पिता के साथ-साथ माता की संज्ञा देते हैं।

कुरान में कहा है कि तुम न किसी के बेटे हो, न किसी के बाप हो। अगर हम ठीक से सोचें, तो यह बात ठीक है। दशरथ का बेटा राम हो गया। प्रद्युम्न का

पिता कृष्ण हो गया। इस तरह ऐतिहासिक पुरुषों के साथ भगवान को जोड़ने की कल्पना उपासना के लिए की गई। वास्तव में ईश्वर को पिता कहना, यानी उसकी योग्यता कम करना है। लेकिन हम अज्ञानी जीव और हमको जो प्रेम का अनुभव आया वह माता, पिता, भाई, बहन के प्रेम का, तो हमारे अनुभव की भाषा में हम भगवानका वर्णन करते हैं। यह हमारी असमर्थता है। हमारी वाणी पंगु है। यह विराट् विश्व इतना व्यापक विशाल है! अनन्त तारे जिसके एक अंश मात्र में समाये हुए हैं, उसका प्रेम, शक्ति, ज्ञान आदि का वर्णन हमारी भाषा में कैसे आ सकेगा? विष्णुसहस्रनाम में ही आता है, भगवान शब्दातिग:—शब्द के परे हैं, लेकिन शब्दसह:—शब्द सहन करनेवाले हैं। उन्होंने हमारा पिता शब्द भी सहन कर लिया है।

स पिता—स: पिता शब्द हम सबको जोड़ता है। लेकिन दुर्दैव की बात है कि भगवान का नाम लेने से ही हम अलग-अलग हो जाते हैं। मैं मानता हूं कि धर्म पंथ आदि भक्ति की ओर ले जानेवाले साधन के तौर पर बनाये गए थे। लेकिन अब वे विघ्न बन गये हैं और उनका उपयोग समाप्त जैसा है। इसलिए अब वे साधन के तौर पर काम नहीं देंगे। हमको केवल आध्यात्मिक तौर से ही भगवान के बारे में सोचना होगा।

हम मूल स्वरूप हैं और उससे हम जुड़ जाते हैं, तो एक तत्व स्थापित होता है। अद्वैत की कल्पना जबतक शरीर है तबतक कल्पनामात्र है। हम खाने बैठें और समझें कि ईश्वर को ही हम खा रहे हैं तो वह लगभग अकल्पनीय वस्तु है। ऐसा अनुभव आये, तो खाना कैसे बनेगा? इसलिए करने की चीज यह है कि मानव और उसके साथ रहनेवाले दूसरे जो प्राणी हैं, जिनकी हम सेवा लेते हैं, उनका सबका एक परिवार है, इतना समझ लेंगे तो बस है।

अमानी मानद:, इन दो नामों का बहुत उपयोग हुआ है। भक्त कैसा होना चाहिए? चैतन्य महाप्रभु का श्लोक है -

तृणादपि सुनीचेन तरोरिव सहिष्णुना,
अमानिना मानदेन कीर्तनीय: सदा हरि:

हमेशा भगवान का चिन्तन करता है और नम्र इतना होता है कि अपने को तिनके के समान मानता है। तरु के समान सहिष्णु, कोई काटे तो भी सहिष्णु, और स्वय अमानी है। अपने को मान नहीं देता, लेकिन दूसरों को मान देता है—

अमानिना मानदेन। ये विष्णुसहस्रनाम के ही शब्द हैं। तुलसीदास ने कहा है, भगवान राम कैसे हैं ? बानि बिसारनसील है मानद अमान की। सबको मान देते हैं और स्वयं अमानी हैं। भागवत में आया है, भक्त कैसा होता है ? अमानी मानदः कल्पो मैत्रः कारुणिकः कवि। ऐसे ये दो नाम हैं, खुद अमानी और दूसरों को मान देनेवाला—मानदः।○

कवियों पर असर

मैंने कई बार कहा है कि विष्णुसहस्रनाम हजारों वर्षों से घोटा हुआ है। होमिओपैथिक की दवा घोटी जाती है, जितनी अधिक घोटी हुई होगी, उतनी उसकी पोटेन्सी (शक्ति) अधिक मानी जायगी। वैसे ही विष्णुसहस्रनाम की पोटेन्सी प्राचीनकाल से आजतक नित्य बढ़ती आयी है।

विष्णुसहस्रनाम में उसके पहले के ग्रंथों से नाम लिये हैं, यह तो साफ है। उसके पहले के ग्रंथ यानी वेद, उपनिषद हैं। वेद-उपनिषदों में जो भगवान के नाम हैं, वे विष्णुसहस्रनाम में आते हैं। अन्नं अन्नाद एव च, विष्णुसहस्रनाम में यह आया है। अहमन्नं अहमन्नं, अहमन्नम्, अहमन्नादः, अहमन्नादः, अहमन्नादः, तैत्तिरीय उपनिषद में है। "मैं अन्न हूं, मैं अन्न हूं, मैं अन्न हूं", मैं अन्न खानेवाला हूं, मैं अन्न खानेवाला हूं,मैं अन्न खानेवाला हूं", उसी पर से लिया—अन्न अन्नाद एव च।

वेद-उपनिषद का लाभ लेकर उसमें से नाम ले लिये, इसमें आश्चर्य की बात नहीं, क्योंकि विष्णुसहस्रनाम उसके बाद हुआ है। लेकिन हमें यह देखने में मजा आता है कि पीछे—विष्णुसहस्रनाम के बाद—किस पर उसका असर हुआ है। शायद ही संस्कृत का कोई कवि होगा या भारत का कोई सन्त होगा, जिसके सामने विष्णुसहस्रनाम न हो, उसने उसमें से कोई शब्द लिया न हो।

तुकाराम ने कहा है—"तूं आमुच्या जीवाचें जीवन। अमृताची तनु। (तू हमारे जीवन का जीवन अमृत की तनु) इसमें 'अमृत की तनु' है, वह विष्णु-सहस्रनाम का शब्द—अमृताशः, अमृतवपुः। उसका तर्जुमा करके अमृताची

तनु कह दिया। ज्ञानदेव कहते हैं—अनंत वेषें अनंत रूपें देखिलें तयासि। अनंत-रूपो अनंतश्रीः—विष्णुसहस्रनाम के नाम। इस प्रकार सन्तों ने उसका उपयोग किया।

कवि कालिदास रघुवंश लिखने जा रहे हैं। कहते हैं, रघुओं का महान् वंश! इतना ऊंचा वंश! मैं इतना ठिंगना, छोटा-सा आदमी हूं और वह वृक्ष इतना ऊंचा है! ठिंगने व्यक्ति के हाथ में उस वृक्ष का फल आयेगा नहीं। कोई ठिंगना आदमी ऊंचे वृक्ष का फल लेने जायेगा, तो कैसा हास्यास्पद होगा। वैसे ही रघुवंश का वर्णन मैं करने लगूं, तो वह हास्यास्पद होगा। **प्रांशुलभ्ये फले लोभात् उद्‌बाहुर इव वामनः**, जो फल 'प्रांशुलभ्य' है, ऊंचे आदमी को ही प्राप्त हो सकता है, मैं ठिंगना मनुष्य उसे लेने जाऊं तो मिलेगा नहीं। कौन-सा फल? नारियल। तो वह जितना हास्यास्पद होगा, उतना ही मेरा रघुवंश का वर्णन करना हास्यास्पद होगा। विष्णुसहस्रनाम में **उपेंद्रो वामनः प्रांशुः** ऐसे दो परस्पर-विरोधी नाम हैं। इनमें से **प्रांशु** और **वामन** उठाकर कालिदास ने काव्य बनाया।

अमानी मानदो मान्यः, ये विष्णुसहस्रनाम के नाम! **अमानी**—खुद के लिए मान नहीं चाहता, लेकिन **मानदः**, दूसरे को मान देता है। बच्चा कैसा होता है? उसे खुद को मान नहीं होता, वह सरल है, और वह दूसरे को भी मान नहीं देता है। लेकिन यह वैसा नहीं। यह बालक नहीं है, इसे खुद को मान नहीं है, लेकिन बड़ा होकर दूसरे को हमेशा मान देता है, प्रौढ़ की तरह। ऐसे दो गुण उसमें होंगे। चैतन्य महाप्रभु कहते हैं, हमेशा हरिकीर्तन करना अच्छा लगता है तो कैसे रहना? **तृणादपि सुनीचेन। तरोरिव सहिष्णुना। अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः**, अपने को तृण से भी छोटा मानें, पेड़ के समान सहिष्णु हों, अपने को मान न हो, दूसरे को मान दें और हमेशा हरि का कीर्तन करें। इस एक श्लोक में चैतन्य महाप्रभु का पूरा विचार आ गया है।

इस तरह भारत के सन्तों और कवियों पर विष्णुसहस्रनाम का असर है।○

अखंड स्मरण

बालूभाई मेहता : विष्णुसहस्रनाम का पाठ नामों के अर्थ समझकर करने में और अर्थ न समझकर करने में, परिणामों में कोई फ़रक आयेगा? प्रार्थना में अर्थ

की ओर ध्यान देना चाहिए या परमेश्वर का चिंतन ही करना चाहिए ?

बाबा : रामानुज का एक बहुत ही प्रसिद्ध वचन है कि कोश में जितने शब्द हैं, उन सबका अर्थ भगवान है। विष्णुसहस्रनाम में हजार नाम हैं। निर्वाणं भेषजं भिषक्। वैद्य भी भगवान है, औषध भी भगवान है और मरण भी भगवान है। इस प्रकार परमेश्वर के हजार नाम दे दिये। लेकिन परमेश्वर के हजार ही नाम होंगे, तो परमेश्वर बहुत सीमित हो जायगा। तो रामानुज ने कहा कि कोश में जितने शब्द हैं,वे सब परमेश्वरवाचक शब्द हैं। लेकिन ये जो हजार नाम भगवान के भगवान व्यास ने प्रचारित किये और हजारों लोगों ने उनका जप किया, वे हजारों सालों से घोटे गये हैं। घोटे हुए नाम हैं। उसको मैंने नाम दिया है. होमिओपैथी की दवा। होमिओपैथी की दवा जितनी घोटी गई, उतनी उसकी शक्ति अधिक होती है। वैसे ये नाम हजारों बरसों से जपे गये हैं, इसलिए उनकी ताकत बढ़ी है। रामानुजका वचन सही है। जितने भी शब्द हैं, सबका अर्थ भगवान है। कोश में शब्द के जो अर्थ दिये होते हैं, वे गौण हैं, मुख्य अर्थ भगवान है। ऐसी हालत में प्रार्थना में जो भी बोला जायगा, वह भगवत्-स्मरण ही रहे और सब मिलकर बोलने से सामूहिक उच्चारण होता है, उच्चारण का भी महत्त्व होता है, वह माना जाय। शब्द के अर्थ की तरफ ध्यान देना या नहीं ? एक बार अर्थ तो कर ही चुके हैं, इसलिए पाठ के समय अर्थ की ओर ध्यान देना जरूरी नहीं। यस्य स्मरण-मात्रेण जन्म-संसार-बंधनात्—जहां तक विष्णुसहस्रनाम का ताल्लुक है, केवल स्मरणमात्र से काम होता है, तो अर्थ के झमेले में पड़ना जरूरी नहीं। शंकराचार्य ने उनका अर्थ किया है, औरों ने भी किया है, लेकिन प्रथम शंकराचार्य ने किया। वाचस्पतिरुदारधीः, एक नाम, दृढ़ संकर्षणोऽच्युतः एक नाम, इस प्रकार एक-एक नाम तय किये, हजार की संख्या बननी चाहिए, इस तरह और उसपर भाष्य लिखा। बाबा ने वह सारा देखा है, चिंतन भी किया है और स्वतंत्र अर्थ भी किये हैं। यह सब झमेला बाबा ने कर लिया है। लेकिन रोज जो पाठ करते हैं, उस समय उसका अर्थ करने की, चिंतन करने की, कोई जरूरत नहीं।

मैं हर नाम पर ताली बजाने को कहता हूं। वह इसलिए कि हर नाम ध्यान में रहे,कि कौन-सा कहां से शुरूहोता है—कः एक नाम। किम् एक नाम, यत् एक नाम, तत् एक नाम, पदमनुत्तमम् एक नाम—सारे एक-एक नाम। तात्पर्य स्मरणमात्रेण काम होगा, लेकिन कौन-सा शब्द कहां से शुरू होता है, यह समझने

के लिए ताली। ताल-वद्धता का इतना एक ही उपयोग है, अन्यथा कौन-सा नाम कहां से कहां तक है, यह कैसे समझें ? इसलिए नाम-स्मरण में कौन-सा नाम कहां से कहां तक है, यह थोड़ा ध्यान में आना अच्छा है। इसलिए ताली वजानी पड़ती है। भक्ति के साथ बुद्धि का उपयोग करना पड़ता है।

लेकिन बुद्धि का जितना उपयोग करेंगे, उतनी भक्ति कम पड़ेगी। इसलिए विष्णुसहस्रनाम में बुद्धि का उपयोग न हो। अखंड स्मरण ! उसको मैंने अभिषेक नाम दिया है। मेरी उसपर वहुत श्रद्धा है। ११ साल से पाठ चल रहा है, तो चार हजार आवृत्तियां हुईं।

वावा की तो दस-दस आवृत्तियां हो जाती हैं। एक वार तो पाठ होता है। फिर वीच-वीच में चिंतन के लिए देखते रहना, किस श्लोक में कितने नाम आये हैं, कौन नाम किस श्लोक में है, इत्यादि। वावा सोता है तो नींद आने तक विष्णु-सहस्रनाम वोलता है। फिर किस नाम पर नींद आयी, ध्यान में रखता है, तो अक्सर 'स्वापनः स्ववशो व्यापी' पर नींद आती है। उसके वाद भी नींद न आये तो वावा खुद को कहता है कि तुमने गलत काम किया, सुलाने वाला भगवान है, फिर भी नींद नहीं आती। वावा अपने-आपको डांटता है तो एकदम नींद आती है। नहीं आयी तो गुनहगारी महसूस होती है। दुःस्वप्ननाशनः। स्वप्न आये तो गलत बात। दुःस्वप्न भी नहीं और सुस्वप्न भी नहीं। इस प्रकार से मौके पर एक-एक नाम का उपयोग होता है।...

मनोहर, कुन्दर, ऐसे अपने बच्चों के नाम भी रखे जाते हैं। इस प्रकार वैष्णवों ने जन्म, मरण, बीमारी सबके साथ विष्णुसहस्रनाम का उपयोग किया। प्रार्थना, सद्गुणसंवर्धन के लिए भी किया है। लेकिन कितना भी उपयोग करो, वह सारा गौण है। मुख्य उपयोग यह है कि भगवान का नाम लिया जा रहा है।

असमाउलहुस्ना

(ईश्वर के सुन्दर नाम)

[पैगम्बर मुहम्मद साहिब एक बार अल्लाह के लिए लगातार ९९ नाम बोल गये। वे नाम 'अस्माउल् हुस्ना' के नाम से मशहूर हुए। नित्य जप में उनका प्रयोग होने लगा।

इन ९९ नामों का अर्थ विनोबाजी ने विष्णुसहस्रनाम के शब्दों में किया है। विष्णुसहस्रनाम नित्य पठन का ग्रन्थ है। अस्माउल हुस्ना के अर्थ में दिये विष्णुसहस्र-नाम के ये शब्द सहस्रनाम के ६४ श्लोकों में आये हैं। इनमें से कुछ शब्द सहस्रनाम में अन्य श्लोकों में भी आते हैं, पर वहां वे भिन्न अर्थ में आते हैं। इन ६४ श्लोकों का संदर्भ भी नामों के साथ दिया गया है।]

अस्माअुल् हुस्ना	विष्णुसहस्रनाम	वि. स. ना. श्लोक
१ अल्लाहु	परमात्मा	२
२ रहमानु	प्रियकृत्	९३
३ रहीमु	प्रीति-वर्धनः	९३
४ मलिकु	लोकनाथः ·	७८
५ कुद्दूसु	पूतात्मा	२
६ सलामु	शरणं-शर्म	१०
७ मुअ्मिनु	शांतिदः	६३
८ मुहैमिनु	रक्षणः	९९
९ अजीजु	जेता	१६
१० जब्बारु	महाबलः	१८
११ मुतकब्बिरु	महाशक्तिः	१९
१२ खालिकु	स्रष्टा	६३

१३ बारिअु	विधाता	५
१४ मुसव्विरु	विश्वकर्मा	६
१५ गफ्फारु	क्षमिणांवरः	९८
१६ कह्हारु	दारुणः	६१
१७ वह्हाबु	वरदः	३६
१८ रज्जाकु	वाजसनः	८५
१९ फत्ताहु	योगविदांनेता	३
२० अलीमु	सर्वज्ञः	४८
२१ काबिदु	प्रग्रहः	८१
२२ बासितु	उदारधीः	२३
२३ खाफिदु	दमयिता	९२
२४ राफिअु	उत्तारणः	९९
२५ मुअिज्जु	मानदः	८०
२६ मुजिल्लु	दर्पहा	७६
२७ समीअु	विश्रुतात्मा	२२
२८ बसीरु	सर्वदृक्	२२
२९ हकमु	नियंता	९२
३० अद्लु	समात्मा	१२
३१ लतीफु	सूक्ष्मः	४९
३२ खबीरु	विद्वत्तमः	९८
३३ हलीमु	सहिष्णुः	१६
३४ अजीमु	महान्	९०
३५ गफूरु	सर्वसहः	९२
३६ शकूरु	कृतज्ञः	९
३७ अलीयु	प्रांशुः	१७
३८ कबीरु	श्रेष्ठः	८
३९ हफीजु	गोप्ता	५३

४० मुकीतु	भूतभृत्	१
४१ हसीबु	पुष्टः	४२
४२ जलीलु	प्रतिष्ठितः	३५
४३ करीमु	भक्तवत्सलः	७८
४४ रकीबु	प्रजागरः	१०२
४५ मुजीबु	अनुकूलः	३७
४६ वासिअु	व्यापी	५०
४७ हकीमु	वैद्यः	१८
४८ वदूदु	सुहृत्	४९
४९ मजीदु	गुरुतमः	२३
५० बाअिसु	बीजमव्ययम्	४६
५१ शहीदु	साक्षी	२
५२ हक्कु	सत्यः	१२
५३ वकीलु	आधारनिलयः	१०२
५४ कवीयु	शक्तिमतांश्रेष्ठः	४३
५५ मतीनु	महावीर्यः	१९
५६ वलीयु	लोकबंधुः	७८
५७ हमीदु	स्तव्यः	७३
५८ मुह्सियु	कालः	४५
५९ मुब्दिअु	उद्भवः	४१
६० मुअीदु	समावर्तः	८३
६१ मुह्यियु	प्राणदः	८
६२ मुमीतु	शर्वः	४
६३ हय्यु	जीवनः	९९
६४ कय्यूमु	शाश्वतः	७
६५ वाजिदु	संग्रहः	१७
६६ माजिदु	शुचिश्रवाः	१३

६७ वाहिदु	एकः	७८
६८ अहदु	एकात्मा	१०३
६९ समदु	विविक्तः	२८
७० कादिरु	विक्रमी	९
७१ मुक्दिरु	क्षमः	४७
७२ मुकद्दिमु	भूतादिः	४
७३ मुअख्खिरु	अंतकः	५५
७४ अव्वलु	सर्वादिः	११
७५ आखिरु	विक्षरः	४०
७६ जाहिरु	व्यक्तरूपः	३३
७७ वातिनु	अव्यक्तः	७७
७८ वाली	शास्ता	२२
७९ मुतआलि	उदीर्णः	६७
८० बर्रु	पुरुसत्तमः	५४
८१ तव्वाबु	पापनाशनः	१०६
८२ मुन्तकिमु	शत्रुतापनः	८८
८३ अफूवु	सहः	४०
८४ रऊफु	सुंदः	८५
८५ मालिकुल्मुल्कि	लोकस्वामी	८०
जुल्जलालि	महातेजाः	७२
वलूइक्रामि	मान्यः	८०
८६ मुक्सितु	न्यायः	२४
८७ जामिअु	श्रीनिधिः	६५
८८ गनीयु	निधिरव्ययः	४
८९ मुग्नीयु	धनेश्वरः	५०
९० मानिअु	दुरारिहा	८३
९१ दार्रु	प्रतर्दनः	७

९२ नाभिमु	सिद्धिदः	२७
९३ नूरु	प्रकाशात्मा	३०
९४ हादियु	नेता	२४
९५ वदीअु	सर्‌गः	१७
९६ वाकी	सनात्	९६
९७ वारिसु	वंशवर्‌धनः	९०
९८ रशीदु	गुरुः	२३
९९ सबूरु	धृतात्मा	१७

विष्णुसहस्रनाम के अन्तर्गत विभिन्न धर्मों के नामों का उल्लेख

बौद्ध

१. सिद्धार्‌थ, सर्‌वज्ञ, सर्‌वदर्‌शी, शास्ता, महाबुद्धि; स्थविरः, भगवान्, यज्ञांतकृत्, निर्‌वाणम् ।

२. अशोकः आनन्दः (शिष्यनाम)
सर्‌वदृक्+सिंह=(अशोकचक्र)

सिख

अेकः—प्रणवः—सन्—कर्‌ना—पुरुषः
वीतभयः—जितामित्रः—कालनेमिनिहा
अजः—स्वयंभूः—गुरुः—सुप्रसादः

जैन

१. सिद्ध, वर्‌धमान, वीर—श्रमण—महानपाः
महावीर्‌य, तीर्‌थकर, नेमि (वृषभ) सिद्धार्‌थ

२. सर्‌व-योग-विनिः सृतः

पारसिक

वसुमनाः (सु-मनाची त्या देणगी जो करी देव-कार्‌य जगीं

महान्

जितमन्यु

खिस्तान

१. पूतात्मा—परमात्मा च—मुक्तानां परमागतिः

२. वाचस्पतिरयोनिजः। स पित्ता

यहूदी

महावीर्यः, महाशक्तिः

चीनी

विस्तारः—व्यापी (ताओ)

नाम-माला

ॐ तत् सत् श्री नारायण तू पुरुषोत्तम गुरु तू।
सिद्ध-बुद्ध तू स्कंद विनायक सविता पावक तू।
ब्रह्म मज्द तू यह्व शक्ति तू ईशु-पिता प्रभु तू।
रुद्र विष्णु तू राम कृष्ण तू रहीम ताओ तू॥
वासुदेव गो-विश्वरूप तू चिदानन्द हरि तू।
अद्वितीय तू अकाल निर्भय आत्मलिंग शिव तू॥